भारतीय विद्या मन्दिर ग्रन्थमाला

६

नागदमण

भारतीय विद्या मंदिर ग्रंथमाला

६



नागदमण

[डिंगळ कृष्ण-भक्ति-साहित्य का सुमधुर काव्य]

सम्पादक

मूलचन्द 'प्राणेश', साहित्यरत्न

शोधसहायक, भा० वि० म० शोध प्रतिष्ठान,

बीकानेर



भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान

बीकानेर [राजस्थान]

भारतीय विद्या मंदिर ग्रन्थमाला–६

● सम्पादक
श्री मूलचन्द 'प्राणेश', साहित्यरत्न

● आवरण शिल्पी
श्री आशाराम गोस्वामी

● प्रथम संस्करण भा० सं० १८८८, १९६६ ई०

● मूल्य ५.००

● प्रकाशक
भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान,
बीकानेर [राजस्थान]

● मुद्रक
एजूकेशनल प्रेस, बीकानेर

विषय-सूची

आभार

भारतीय विद्या मन्दिर ग्रन्थ माला का छठा पुष्प पाठकों की सेवा में सहर्ष प्रस्तुत है । इसके प्रकाशन में राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग एवं परम वैष्णव साहित्यानुरागी श्रीमान गिरधरदास जी मूंधड़ा द्वारा उदारता पूर्ण प्रदत्त आर्थिक सहयोग के लिए हम उनके बड़े आभारी हैं ।

वैष्णव भक्ति साहित्य पर संस्था का यह पहला ग्रन्थ है । आशा है इसी प्रकार भविष्य में भी संस्था अपने शुभचिंतकों व सहायकों के सहयोग एवं सहायता से उपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन करती रहेगी ।

मूलचन्द पारीक
रजिस्ट्रार
भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर

प्राक्कथन

कालिय और कंस की दुरभिसंधि के कारण आये दिन व्रजमण्डल में नये नये उत्पात हो रहे थे। जन धन की अपार क्षति हो रही थी। सारे भूभाग में क्षोभ की लहर दौड़ रही थी। जनता हाथों में तलवार लिए दुष्टों का दलन करने के लिए सन्नद्ध थी। भगवान कृष्ण ने उनका नेतृत्व किया। व्रजमण्डल की कृषि और गोधन की समृद्धि के लिए यह आवश्यक हो गया कि विषधर कालिय का तत्काल दमन किया जाय। एक दिन कन्दुक-क्रीडा के निमित्त कृष्ण ने कालिय को उसके घर में जा दबाया। पुराने सारे बर चुका दिये। इस पौराणिक आख्यान को कवि सांया झूला ने भाषा और भाव दोनों दृष्टियों से मौलिक रूप में काव्याभिव्यक्ति दी है। काव्य सौंदर्य और शैलीगत विशेषताओं पर भूमिकाकार और सम्पादक महोदय ने विशद प्रकाश डाल दिया है, मेरे लिए कुछ कहने को शेष नहीं रहा है। रचनाकार ने समसामयिक सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों और आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में इस कृति का सृजन किया है और वह इसमें पूर्ण सफल हुआ है। साधना के एक एक शब्द से अभिमंत्रित यह काव्यकृति पुरातन काल से कवि की कीर्ति का कलश रही है, और आज की बदली हुई परिस्थितियों में भी यह हमें दुष्टों का दलन करने की बराबर प्रेरणा दे रही है। अत्याचारियों के गर्व को चूर कर जन जीवन को निरापद करने की यह ओज पूर्ण गाथा लौकिक साहित्य की अमर-निधि है और इसीलिए इसे पूरी मेहनत के साथ सम्पादित कर साहित्य जगत के हाथों में सौंपा गया है।

प्रिय श्री मूलचन्द 'प्राणेश' ने डिंगल भाषा और साहित्य की भाव प्रवणता और उसके व्याकरण के मर्म को समझकर आधुनिक साहित्य के विद्वानों के लिए कृति को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने की चेष्टा की है। वह हम सबके साधुवाद के पात्र हैं।

हमें इस बात का गर्व और हर्ष है कि इस महत्वपूर्ण काव्य ग्रन्थ को नये रूप में प्रकाशित करने का श्रेय शोध प्रतिष्ठान को प्राप्त हुआ है। आशा है, विज्ञ पाठक इसका पूरा आनंद उठा पायेंगे।

सत्यनारायण पारीक

अध्यक्ष

भा वि भ शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर

सम्पादकीय

शोध प्रतिष्ठान द्वारा संचालित साप्ताहिक साहित्य-गोष्ठी में एक दिन डिंगल भाषा और साहित्य विषय की चर्चा चल रही थी। प्रतिष्ठान के तत्कालीन संचालक श्रीमान् अक्षयचन्द्रजी शर्मा एम ए ने डिंगल काव्य पर कर्ण कटुता एवं दुरूहता का आरोप लगाने वाले व्यक्तियों की अल्पज्ञता पर तरस खाते हुए प्रस्तुत 'नागदमण' की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया तथा साथ ही इस कृति का सुन्दर ढंग से सम्पादन करके प्रकाशित करवाने की आवश्यकता भी प्रकट की और इसके सम्पादन का कार्य मुझे सौंपा।

'नागदमण' डिंगल भक्ति साहित्य की एक उत्कृष्ट कृति होने के कारण भक्त एवं कवि तो अपने संकलनग्रन्थों (गुटकों) में इसका संकलन करते ही थे पर साथ ही राजस्थान में इस काव्य का उपयोग सर्पविष निवारणार्थ झाड़ (मन्त्र) के रूप में होने के कारण जन सामान्य भी इस कृति को अपने पास सुरक्षित रखने का प्रयास करता था। राजस्थान प्रान्त में नागदमण की शताधिक प्रतियों का उपलब्ध होना इस बात का प्रबल प्रमाण है।

प्रस्तुत सम्पादन का कार्य प्रारम्भ करने पर मुझे 'नागदमण' की लगभग तीस प्रतियों के अवलोकन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यद्यपि ये प्रतियां सं० १७१० वि० से लगा कर सं० १९९० वि० तक की प्रलम्ब अवधि में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लिखित एवं सुरक्षित थीं, फिर भी उन प्रतियों में पर्याप्त रूप से पाठ साम्य दृष्टिगोचर हुआ। यदि उनमें कोई अन्तर था, वह या तो प्रतिलिपिकार द्वारा अपने मानदण्ड द्वारा विनिर्मित शब्दों के कारण प्रतीत हुआ या फिर दुर्बोध शब्दों के स्थान पर सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण। अतः उक्त सभी उपलब्ध प्रतियों के पाठान्तर देकर पृष्ठभार एवं समय के दुरुपयोग से बचने के लिए उनमें से केवल छह प्रतियों को मूल-पाठ एवं पाठ-भेद की दृष्टि से चुना गया। ये छहों

प्रतियाँ उपर्युक्त सभी प्रतियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

● 'क' प्रति हस्तलिखित
प्राप्ति स्थान—श्री वर्द्धमान ज्ञान भण्डार, बीकानेर।
अनुलिपिकार—वोहरा रामचन्द्र।
अनु लिपि काल—सं० १७१७ वि० भाद्रपद कृष्णा ८ शनि।
अनुलिपि स्थान—जतारण

● 'ख' प्रति हस्तलिखित
प्राप्तिस्थान—श्री भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर।
अनुलिपिकार—मथेन फुसाळा
अनुलिपिकाल—सं० १७५२ वि० द्वितीय आषाढ शुक्ला १२
अनुलिपिस्थान—बीकानेर (अनु०)

● 'ग' प्रति हस्तलिखित
प्राप्ति स्थान—श्री खजान्ची कला भवन पुस्तकालय, बीकानेर।
अनुलिपिकार—अज्ञात
अनुलिपिकाल—सं० १८०९ वि० पौष कृष्णा ७ गुरु
अनुलिपि स्थान—अज्ञात

● 'घ' प्रति हस्तलिखित
प्राप्ति स्थान—श्री अभय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर।
अनुलिपिकार—पं० गुणसेन गणि तच्छिष्य पं० यशोलाभ मुनि
अनुलिपिकाल—सं० १७१० वि० मार्गशीर्ष शुक्ला ५ सोम
अनुलिपिस्थान—श्री मेंगलमेर (जसलमेर)

● 'ङ' प्रति मुद्रित
प्राप्तिस्थान—राज्य कवि लखमीरामजी हमीरदान, पालणपुर।
सम्पादक—मोतीसर कुलोत्पन्न श्री हमीरदान
मुद्रणकाल—१८ वीं शताब्दी की तीन प्रतियों के आधार पर सं० १९८९ वि० में मुद्रित

● 'च' प्रति हस्तलिखित
प्राप्ति स्थान—श्री अभय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर।
अनुलिपिकार—अज्ञात
अनुलिपिकाल—१९ वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध (अनु०)
अनुलिपि स्थान—अज्ञात

मूल-पाठ की प्रति

सम्पादनार्थ निर्वाचित छहों प्रतियों में 'क' प्रति प्राचीन एवं लेखन की दृष्टि से शुद्ध होने के कारण इस प्रति का मूलपाठ में उपयोग किया गया है। यद्यपि प्रतिलिपि के कालक्रम से 'घ' प्रति सभी प्रतियों से प्राचीन है, परन्तु आदि भाग के चौबीस छन्द त्रुटित होने के कारण इसको मूल पाठ का आधार नहीं बनाया जा सका।

पाठ भेद की प्रतियां

पाठ भेद के लिए निर्वाचित प्रतियों को प्रतिलिपि के कालक्रमा नुसार न रखकर पाठ की निम्नतम स्थिति के अनुसार रखा गया है।

पाठ भेद अंकन

पाठ भेद के रूप में प्रतिलिपिकारों के शैलीगत विभेद को अंकित नहीं किया गया है। केवल उन्हीं पाठों को पाठ भेद के रूप में स्वीकार किया गया है जिनके द्वारा या तो मूल शब्द के स्वरूप की पुष्टि होती हो या जिनके द्वारा अयगत विशेषता प्रगट होती हो। उक्त छहों प्रतियों में से जिन प्रतियों में कम या अधिक छन्द उपलब्ध होते हैं उन्हें यथास्थान 'नहीं है' व 'अ० पा०' के संकेत द्वारा दिखाया गया है।

शैलीगत विषमताओं का परिहार

(अ) राजस्थान के प्रतिलिपिकारों के द्वारा संयुक्त या स्वतंत्र रूप में प्रयुक्त 'इकार' या 'ईकार' को सर्वत्र दीर्घ लिखने की परम्परा रही है इसी प्रकार संयुक्त या स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त 'उकार' या ऊकार' को ह्रस्व लिखा गया है। परन्तु मूलपाठ में उक्त दोनों स्वरों का छंद अथवा व्याकरण के अनुसार जिस स्थान पर जैसा रूप होना चाहिए, कर दिया है।

(आ) राजस्थान के कई प्रतिलिपिकारों ने 'ऊ' के स्थान पर 'वु' लिखा है परन्तु मूलपाठ में उसे 'ऊ' ही स्वीकार किया है। यथा—'ऊमो' के स्थान पर 'वुमो' न लिखकर उसे ऊमो' ही लिखा गया है।

(इ) राजस्थान के प्राय: प्रतिलिपिकारों ने 'ड' या 'ढ' के स्थान पर सवत्र 'ड' ही लिखा है, इसी प्रकार 'ल' या 'ळ' के स्थान पर सर्वत्र 'ल' ही लिखा है। परन्तु मूलपाठ में उसे ध्वनि के अनुसार 'ड' एवं 'ळ' कर दिया गया है।

(ई) राजस्थान के सभी प्रतिलिपिकारों ने सानुनासिक ध्वनि एवं

अनुस्वार को प्रकट करने के लिए सवत्र शिरोबिन्दु (मस्ते) का प्रयोग किया है। अत मूलपाठ मे भी उसे ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया गया है।

(उ) राजस्थान के कई प्रतिलिपिकारों द्वारा अनुनासिक वर्णों से पूवके वण पर शिरोबिन्दु (मस्ते) का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। परन्तु मूलपाठ में उसे स्वीकार नहीं किया गया है। यथा—'मुण' या राणो' को 'मूंणै' या 'रांणो' न लिखकर 'मुणै' या 'राणो' ही लिखा गया है।

(ऊ) नागदमण की कई प्रतियों मे 'औ' के स्थान पर 'अउ' एव 'ऐ' के स्थान पर 'अइ' का प्रयोग भी देखने मे आया है, जो छद विधान के अनुसार उपयुक्त नहीं है। अत मूलपाठ में उक्त दोनों स्वरों को यदि वे शब्द के अत म प्रयुक्त हुए हैं (केवल सबोधन या तिरस्कारवाची शब्दों को छोड़कर) तो उनको सवत्र 'ओ' या 'ऐ' लिखा गया है और यदि वे शब्द के मध्य में प्रयुक्त हुए हैं तो उन्हें यथा स्थिति 'औ' या 'ओ' एव 'ए' या ऐ' लिखा गया है।

आलोचनात्मक अध्ययन

आलोचनात्मक अध्ययन मे जिन जिन सदभ ग्रथों एव जिन जिन महानुभावों के अभिमत का उपयोग किया गया है उन सब का यथास्थान पाद टिप्पणियों में उल्लेख कर दिया गया है।

हिन्दी भावाथ

हिन्दी भावाथ लिखते समय मूल शब्दों के निकटतम ध्वनित अथ पर ही अधिक बल दिया गया है तथा अपनी ओर से कल्पित शब्दावली का कम से कम प्रयोग किया गया है। यदि किसी स्थल पर शब्दाथ ठीक होने पर भी कोई भाव अस्पष्ट रह गया है तो वहां उसे 'अर्थात्' करके सुस्पष्ट करने का प्रय न किया गया है।

आवरण पृष्ठ का चित्र

आवरण पृष्ठ पर अकित चित्रों में से मध्य भाग का चित्र मडोवर से प्राप्त एव जोधपुर के सरदार म्यूजियम में सुरक्षित गुप्तकालीन स्तूप, इसके दाहिने भागवाला चित्र मद्रास मे प्राप्त आठवीं शताब्दी की कांस्य मूर्ति एव बायें भागवाला चित्र आधुनिक लीला अकन की, सरल रेखानुकृतियां हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत कृति को अधिक से अधिक उपादेय एव बोधगम्य बनाने का प्रयत्न किया गया है। इसे सफल बनाने में शोध प्रतिष्ठान के वतमान सचालक श्रीमान् सत्यनारायणजी पारीक एम ए के

निर्देशन, श्री नरोत्तमदास जी स्वामी एम ए, श्री उदयराजजी उज्ज्वल, श्री चन्द्र दानजी चारण एम ए, श्री बद्रीप्रसादजी साकरिया श्री सूयशकरजी पारीक और श्री पुरुषोत्तमजी मेनारिया के सुझावों एव श्री अभय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर के सचालक श्री अगरचन्दजी नाहटा, श्री खजाञ्ची कलाभवन पुस्तकालय, बीकानेर के सचालक श्री मोतीचन्दजी खजाञ्ची, श्री अनूप सस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर के श्री बाबूरामजी सक्सेना और प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के उपसचालक श्री गोपालनारायणजी बहुरा के सहयोग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। एतदर्थ मैं उन सभी महानुभावों का आभारी हूँ। अन्त मे मैं राजस्थान बालभारती के प्रिंसिपल श्री रामेश्वरप्रसाद जी पोद्दार एम ए का विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ, जिन्होने समयाभाव की स्थिति मे भी समय निकालकर प्रस्तुत ग्रन्थ की विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखने का कष्ट किया है।

—मूलचन्द 'प्राणेश'

भूमिका

सांया झूला कृत 'नाग दमण' १७वीं शताब्दी में लिखी डिंगल साहित्य की उत्कृष्ट रचनाओं में से एक है। सांया झूला चारण कवि थे। आपको ईडर राज्य में राज्याश्रय प्राप्त था। बाल्यकाल में ही आपकी रुचि भगवद्भक्ति में जागृत हो चुकी थी। अवस्था के साथ साथ इसका विकास होता गया। आपको अपनी प्रत्युत्पन्नमति तथा भक्ति भावना के कारण तत्कालीन चारण तथा राज समाज बड़े सम्मान की दृष्टि से देखता था। चारण कवि श्री सांया जी के लिखे दो ग्रंथ उपलब्ध हुए हैं—'रुक्मणी हरण' और दूसरा 'नाग दमण', नाग दमण की रचना रुक्मणी हरण के पश्चात् हुई है। कवि ने इसको अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में लिखा है। अतः इसमें भाषा प्रांजलय एवं भाव प्रौढ़ता का होना स्वाभाविक ही है।

भारतीय साहित्य एवं जन जीवन में राम और कृष्ण इन दो प्रसिद्ध अवतारों का बड़ा महत्व है। निराशा और भग्नाश हिन्दू जनता के जीवन में आशा एवं उत्साह का संचार करने हेतु मनीषी भगवद्भक्त कवियों ने इन दोनों अवतारों के जीवन की लोक रंजन एवं लोक मंगल कारी विविध लीलाओं का चित्रण अपने काव्य में किया है। कृष्ण की लीलाओं में नाग दमण, नाग लीला, कालीय दह लीला अथवा कमल लीला का विशेष महत्व है। इसका वर्णन भागवत पुराण, विष्णु पुराण, पद्म पुराण, हरिवंश पुराण एवं ब्रह्मवैवर्त पुराण में भी प्राप्त होता है। कवि की दृष्टि विलक्षण होती है। इन विभिन्न स्थलों से प्राप्त कथासामग्री को ग्रहण कर वह अपने युग के आलोक में उसकी अभिव्यक्त करता है। हिन्दी में सब प्रथम कालिय दमन लीला की अवतारणा कृष्ण लीला के अमर गायक महाकवि सूरदास के गीतों में हुई। नाग दमण लीला से हिन्दी तथा गुजराती के अनेक कवि प्रभावित हुए और इन्होंने मुक्तकंठ से इस कथा प्रसंग को लेकर अनेक गीत गाए। नरसी मेहता सूरदास के समकालीन कवि थे। उन्होंने भी इस लीला का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। शताब्दियां अतीत के अंधकार में विलीन हो गईं, किन्तु नरसी कृत नाग-दमण,के गीत आज भी लोगों की जबान पर सुने जाते हैं। सांया जी वैष्णव भक्ति धारा से सरसित गुजरात के ही सपूत थे। उनको नाग दमण

रचना आज भी वहाँ के लोक कंठों में समायी हुई है ।

नाग दमण की गणना खंड काव्य के अंतर्गत आती है । प्रबंध काव्य अथवा खंड काव्य के प्रारम्भ में मंगलाचरण एक काव्य परम्परा रही है । मंगलाचरण तीन प्रकार के होते हैं । (१) नमस्कारात्मक (२) आशीर्वादात्मक एवं (३) वस्तुनिर्देशात्मक । इस काव्य का प्रारम्भ भी निम्नलिखित पंक्तियों से होता है—

बळ वो सादर वरणवू ,सारद करो पसाय ।
पवाडो पन्नगा सिर, जदुपति कीधौ जाय ।।

कवि मंगलाचरण की प्रथम पंक्ति में बुद्धि की अधिष्ठात्री मातेश्वरी शारदा से कृपारूप आशीर्वाद की याचना करता है ताकि वह कालिय नाग के सिर पर चढ़कर कृष्ण द्वारा किए गए युद्ध चरित्र का गान कर सके । दूसरी पंक्ति कथा वस्तु की ओर निर्देश करती है । इसमें आशीर्वादात्मकता के साथ वस्तु निर्देशन भी है । अतः इस मंगलाचरण को आशीर्वादात्मक वस्तु निर्देशक मंगलाचरण कहना ही उचित होगा ।

'नाग दमण' का कथानक पौराणिक है । इस पौराणिक कथा के माध्यम से कवि अपनी युगानुकूल भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है । सांया झूला मुगल बादशाह अकबर के समकालीन थे । इतिहासकारों ने अकबर के शासनकाल को उत्तम बताने में कोई संकोच नहीं किया है । ऊपर की दृष्टि से अकबर का शासन चाहे भव्य एवं शानदार रहा हो, परन्तु सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से उत्तम नहीं कहा जा सकता । समाज गरीबी एवं भय का शिकार था । तुलसीदास जी की पंक्तियां भी यही बताती हैं—'भिखारी को न भीख, न चाकर को चाकरी ।' दीन-इलाही धर्म की स्थापना के साथ साथ हिन्दू संस्कृति का लोप होना प्रारम्भ हो गया था । मुगल बादशाहों द्वारा हिन्दू संस्कृति एवं समाज पर निरन्तर होने वाले इस पदाघात की ओर भक्त कवियों का ध्यान गया और इन्होंने अपने काव्य के माध्यम से संस्कृति उद्धार एवं समाज कल्याण के गीत सुनाने प्रारम्भ किए ।

भारतीय ग्रामीण समाज में पशु धन का बड़ा महत्व है । पशु धन में भी गौ धन का विशिष्ट स्थान है । समाज की सम्पन्नता तथा विपन्नता का मापदण्ड पशुओं की संख्या ही है । मुगल शासनकाल में गौ हत्या का प्रचलन था । उदार मुगल बादशाहों [redacted] गौ हत्या निषेधाज्ञाओं की अवहेलना मुगल सामंतों द्वारा होती रहती थी । सांया-झूला ने नाग दमण में गौ महत्ता के प्रसंग की काल्पनिक सृष्टि कर इस पशु धन की रक्षा का स्पष्ट संकेत किया है । नागरानी को स्वयं श्रीकृष्ण कहते हैं कि—

चव मास, भ्राता वि है घो चागी, वहै आज ते नागणी मूझ वारी ।
सुरभी तणी नागणी ऊन सेवा, गळै अघ्घ आघा गुरी नेह ग्रेवा ।।

अब विनाशिनी मोक्ष दायिनी गौ के सांस्कृतिक स्वरूप को बताने के पश्चात् कवि कृष्ण से इस पशु के आर्थिक महत्व पर भी प्रकाश डलवाता है । गौ रस से क्या नहीं बनता ? अनेक तरह के खाद्य पदार्थ तैयार किये जाते हैं । ब्रज के पेडे मिश्री मावा तो आज भी प्रसिद्ध है ।

दही दूध रावा ची आ सुसदाई, मठा घोळिया खाड खोहा मळाई ।

औद्योगिक विकास का आकांक्षी आज का भारत यंत्र युग में श्वास ले रहा है, परन्तु कवि के समय का भारत गोधन युग में था । तत्कालीन सारे आर्थिक समाज का ढांचा कृषि पर ही निर्भर था । हलकर्षण का मुख्य साधन बल ही थे । इस सारी भारत रूपी पृथ्वी का भार बल के कंधों पर ही था । कवि गौ के आर्थिक महत्व की चर्चा करते हुए बलों की उपयोगिता पर प्रकाश डालता है ।

अवनी तणो भारि ले कध आयो, जुवो नागणी ते हुतो गव्वु जायो ।
खळा हळा गागळा पाण खेती, अम नागणी हाथ मे आय एती ।।

इस महत्वपूर्ण गोधन को चराने की बारी श्रीकृष्ण की है और इसकी रक्षा करना वे अपना परमधर्म समझते हैं । कालिय नाग ने यमुना के सारे जल को विषाक्त कर दिया है । इस जल का पान करने से गौ बछडे सब मर जाते हैं । गौ हत्यारे इस कालिय को मार कर गौओं को बचाना ही कृष्ण अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं । इस काव्य के माध्यम से कवि परोक्ष रूपेण यही कहना चाहता है कि अत्याचारियों द्वारा मारी जाने वाली गौ या पशु धन का संरक्षण करना हर भारतीय कृष्ण का प्रथम कर्तव्य है ।

इसके अतिरिक्त कवि वैष्णव भक्त है । इस कथा के माध्यम से वह अपनी भक्ति भावना का प्रकाशन करता है । कृष्ण जीवन की इस माधुर्य भरी ओजस्वी लीला का गान करना ही कवि का लक्ष्य है ।

प्राचीन आचार्यों ने शास्त्रीय दृष्टि से काव्य के अनेक भेद किए हैं । मुख्य भेद प्रबंध और मुक्तक हैं । कथा बंध की दृष्टि से प्रबंध काव्य को भी दो भागों में बांटा गया है । महाकाव्य और खंड काव्य । नाग-दमण की रचना कृष्ण जीवन की एक विशिष्ट कालिय दमन की घटना को लेकर हुई है । अतः इसकी गणना खंड काव्य में ही करना समीचीन है । वीरगाथा काल में रस प्रधान कथा काव्य को 'रासो' नाम से अभिहित किया जाता था । मराठी और डिंगल साहित्य में एक 'पवाडा' नामक काव्य का प्रकार भी पाया जाता है । पवाडा उस काव्य को कहते

हैं जिसमे युद्ध चरित्र का गान हो । 'नाग दमण' रचना को भी पवाडा की संज्ञा दी जा सकती है । कवि ने भी प्रारम्भ मे इस चरित्र को पवाडा संज्ञा से अभिहित किया है—

पवाडो पनगा सिरै, जदुपति कीधो जाय ।

पवाडा वीर रस प्रधान काव्य होता है । वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है । कवि की भक्ति भावनायें इस काव्य में स्थान स्थान पर प्रकट हुई हैं । काव्य मे भक्ति भावना के प्राचुर्य एवं प्राबल्य को देखने से स्पष्ट परिलक्षित होता है कि 'पवाडा' गायक अपने भक्त कवि को नहीं दबा सका है । भक्ति में शान्त रस रहता है । इस काव्य कथा की समाप्ति कालिय को व्रज वीथिकाओं में घुमाकर, नद के आंगन में फिराने के साथ होती है—ताकि वहा की रजकण से उसकी देह चिन्ता दूर हो जावे—अर्थात् उसको मुक्ति मिले । इस प्रकार इस लघु कथा काव्य का पर्यवसान शान्त भाव के साथ होता है ।

प्राचीन आचार्यों ने काव्य की परिभाषा करते हुए रस को ही काव्य की आत्मा बताया है । नाग दमण भक्ति भावना से पूरित होते हुए भी वीर रस प्रधान काव्य है । ग्रन्थ के प्रारम्भ में मगलाचरण करने के पश्चात् कवि दूसरे ही छन्द में कृष्ण के साहसपूर्ण कार्यों को याद करता है ।

प्रभू घणा चा पाडिया, दैत्य वडा चा दंत ।
के पालणै पोढिया, के पय पान करत ॥

अत इस काव्य को भक्ति भावना से प्रेरित पवाडा काव्य कहें तो कोई अनुचित नहीं होगा ।

काव्य की कथा का प्रारम्भ माता यशोदा द्वारा सोये कृष्ण का गोचारण के लिए जगाने से होता है । कृष्ण और ग्वाल-बाल हर्षित होकर जगल में जाते हैं । यमुना के किनारे गौए घास चर रही हैं । सारा गोप समाज खेल खेलने को आतुर है । कृष्ण इस टोली के नायक हैं । चारों तरफ उत्साह और उमग का वातावरण है । देखते ही देखते दडी-गेडिये का खेल प्रारम्भ हो जाता है । उत्साह में आकर खिलाडी ने जोर से टोरा (hit) लगाया और गेंद यमुना में जा पड़ी । यमुना मे महा पराक्रमी कालिय नाग का निवास है । गेंद उसके आवास में पहुच गई । वहां से गेंद लेकर आना साधारण काम नहीं । सारा बाल समाज स्तब्ध एव बेचैन है । कृष्ण के हृदय में वीरत्व जागृत हुआ । गौ-हत्यारे कालिय को मारने का उपयुक्त अवसर जानकर वे यमुना के नाग कुंड में कूद पडे । यहीं से दडी-गेडिये खेल की समाप्ति तथा दूसरा खेल कृष्ण कालिय-

युद्ध प्रारम्भ होता है ।

कृष्ण के नाग-कुण्ड में कूदते ही वातावरण मे परिवर्तन आता है । बाल-सुलभ क्रीडा से उत्पन्न हर्षोल्लास का वातावरण विषाद और भय में बदल जाता है । इस घटना से ग्वाल बाल तथा नगर निवासियों में जो खलबली मची उसका प्रभावपूर्ण वर्णन निम्नांकित पंक्तियों मे देखिए।

जदूनाथ काळी समी वाय जोडे, घणो भोम चाली चढी वात घोडे ।
ऊभा गाय गोवाळ फूरत आर, हा हा कार हक्कार ससार सारे ॥

यह दुखद समाचार माता यशोदा के कानों मे भी पड़ा । इसे सुनते ही मां के ममता भरे हृदय पर आघात पहुँचा । उसका दिल टूट गया, शारीरिक शक्ति नष्ट हो गई । वह धड़ाम से गिर पड़ी । चतुर सखियां घटनास्थल पर माता यशोदा को ले गई । यशोदा में अधिक चलने की शक्ति अब कहां थी ? वह तो रास्ते में ही थक गई । कवि ने पुत्र-शोक से विह्वल माता यशोदा के विलाप का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है ।

सुण्यो वात आघात माता सनेही, जसोदा ढळी कद्दळी खभ जेही ।
सबाहै सखी लार हाली सयाणी, रहावी विचाले थकी नद राणी ॥

× × ×

बिहू लोचन नीर धारा बहती, कनयो कनैयो यशोदा कहती ।
कालिंदी तणी आई लोटत काठ, गयो जाणि चिंतामणि रक गाठ ॥

विप्रलभ या वियोग का काव्य मे बड़ा महत्व है । कवियों की आत्मा वियोग वर्णन में खूब रमी है । भक्त कवियों में सूर और जायसी तो अपना सानी नहीं रखते । आधुनिक कवि सुमित्रानदन पत भी 'वियोगी होगा पहिला कवि' कह कर वियोग का महत्त्व बताते हैं । वियोग वर्णन एक ऐसा जंजाल जाल है कि उसमे उलझने के बाद उससे निकलना मुश्किल होता है । सांया झूला सिद्धहस्त कवि हैं । उन्होंने नागदमण रचना में वियोग वर्णन में दो तीन पद ही लिखे हैं । वियोग-वर्णन इस काव्य में चाहे थोड़ा हो, परन्तु जो है वह बहुत ही प्रभावोत्पादक है । कवि की कुशलता इसी में है कि वह वियोग के जंजाल में अधिक न फस कर कथा को बड़े स्वाभाविक ढग से आगे बढ़ाता है । वह यमुना के कछार में खड़े सब संतप्त माता यशोदा एव गोप समाज से पाठक का ध्यान तुरन्त हटाकर यमुना में नाग कुण्ड की ओर जाते श्रीकृष्ण की ओर खींच लेता है । कृष्ण यमुना मथन करते हुए नागराज के महल की ओर जाते दिखाई देते हैं । यह देखकर

सारा गोप समाज घबरा जाता है। कृष्ण से माता पिता तथा सभी लोग लौट आने की प्रार्थना करते हैं, परन्तु अत्याचारी कालिय को मारने की उत्कट इच्छा रखने वाले कृष्ण एक भी नहीं सुनते। वे गहरे पानी में बैठ कर नागराज के महल में पहुंच जाते हैं। महल में नागराज सोया हुआ है। नागरानियां अपने कक्ष में बैठी हैं। कृष्ण को वहां देख उसके कमलस्वरूप पर मुग्ध हो जाती हैं। कृष्ण के सौन्दर्यमनहारी रूप चित्रण का इस काव्य में विशिष्ट स्थान है। नाग पत्नियां कृष्ण रूप वर्णन करती हुई कहती हैं कि सुन्दर सलौने श्यामल रूपधारी कृष्ण के कान मुक्ता जटित कर्णाभूषण से सुशोभित हैं। शरीर पर मनोचित पीताम्बर ओढ़े हैं। गले में मुक्ताहार, गुंजमाल तथा केहरि नख बहुत ही सुन्दर लगते हैं। बाहुओं में मध्य मणि युक्त बाजूबंध तथा सुन्दर कीमती रत्नों से जटित मणिबंध नागरानियों की दृष्टि चोर लेते हैं। हाथ की अंगुली में पहिनी मुद्रिका उनके चित्ताकर्षण का विशेष केन्द्र है। नागरानियों के मुंह से आभूषण वर्णन तत्कालीन सामाजिक वैभव एवं नारी सुलभ आभूषण प्रेम का परिचायक है। आभूषण सौन्दर्य वृद्धि का साधन है। वास्तविक सौन्दर्य तो मनुष्य की आकृति एवं मानसिक गुणों पर निर्भर करता है। कृष्ण धीरोदात्त एवं विरोचित गुणों से तो युक्त हैं ही उनके शारीरिक सौंदर्य का चित्रण निम्नांकित पंक्तियों में देखिए :

इसो नासिका सिख्य दीपक ऐरी, कली चंप जाणें लळी लप केरी।
नवा नेह दीरघ्य पंकज नेत्र सोभा मीन खजन मृगा सहेज ॥

कृष्ण के श्याम सलौने रूप पर मुग्ध नागरानियां कृष्ण की उपस्थिति से विस्मित हैं। कृष्ण के प्रति उनके हृदय में सहानुभूति जागृत होती है। वे पूछती हैं—अरे तू यहां कहां से आ गया, यहां क्या काम है? क्या तू रास्ता भूलकर सर्प के घर आ गया है? हाय हाय आज यह बकरी बाघ की गुफा में कहां से चली आई? इस प्रकार नागरानियां बहुत समझाती हैं, डराती हैं परन्तु कृष्ण बिल्कुल ही भय विचलित नहीं होते। बड़े आत्मविश्वास के साथ वह कहते हैं— 'मैं कबसे प्रतीक्षा में खड़ा हूं।' हे नागिन! तुम जाओ और जल्दी ही नागराज को जगादो। आज हम यहां अखाड़ा रचेंगे। युद्ध में हार जीत तो भगवान के हाथ हैं।

युद्ध वर्णन हिन्दी के आदि साहित्य की एक बहुत बड़ी विशेषता है। युद्धों का सजीव एवं सांगोपांग चित्रण वीरगाथा काल के बाद अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। भक्त कवि सांया जी ने प्रस्तुत रचना में युद्ध वर्णन को

स्थान दिया है। युद्ध में विजय के महत्व का अनुभव कराने हेतु विजित के शौर्य और पराक्रम का दिग्दर्शन कराना नितांत आवश्यक है। नाग दमण में युद्ध कृष्ण एवं नागराज के बीच हुआ है। कवि ने नागराज के शौर्य का वर्णन नागरानियों के मुंह से ही करवाया है—

इसो आज ते कौण भूलोक आछ,काळी नागसू जुध्ध संग्राम काछ।
चढै कू ण काळी तणी सीम चाप,काळी नाग हू आज ही कंस काप॥

अपने युग के महापराक्रमी योद्धा कंस को कंपा देने वाले कालिय नाग की भीषणता का वर्णन तो अत्यन्त दर्शनीय है।

जाळ व्रिख्ख नीला वहै विख्ख झाळा,वदन्न सहस्सं वध व्योम व्याळा।
वहा श्रृंग सींगा हेमंग वाळा, जिरी फूंक आगी भरं टूंक फाळा॥

इस दुर्दम भयानक नागराज को कौन जगावे? कैसे जगावे? यह गम्भीर प्रश्न सभी के सामने खड़ा हो गया। आखिर नागरानी के अनुरोध पर स्वयं कृष्ण ने मुरलीवादन शुरू किया। मुरली का स्वर सप्त पाताल भेदी था, उसका स्वर स्वर्ग देवताओं को भी सुनाई पड़ा। इस महानाद को सुनकर दुष्टों का हृदय कंपायमान हो उठा। ब्रज निवासी इस स्वर से अमृत पान करने लगे। इस महा भयानक सिंधु राग को सुनकर अत्यन्त कोधित, समस्त फणों को ऊंचा उठाए, फुंकार करते हुए नागराज अपने दरबार में आया और उसने कृष्ण को अपनी पूंछ के पर-कोटे में घेर लिया। डंक डंक करते कालिय ने कृष्ण पर प्रहार करने प्रारम्भ किये। कृष्ण के हाथ कालिय नाग की गर्दन के पास थे। वह एक गारुड़ी की तरह दिखाई देते थे। इस द्वंद्व युद्ध को देखने सारा नाग समाज एकत्रित हो गया। नागरानियां भी वहां उपस्थित थीं। कोई भी भारतीय नारी अपने सामने किसी अन्य पुरुष द्वारा पति को अपमानित होते तथा पीटे जाते हुए नहीं देख सकती। किसी पुरुष को उसकी पत्नी के सामने अपमानित करना उस नारी का निरादर करना है। इसी कारण कृष्ण कालिय को उसके दरबार से बाहर निकालकर यमुना के गहरे पानी में ले गए। वहां श्रीकृष्ण ने अपने प्रहारों से नाग को बुरी तरह घायल किया—

मच मूठ मारा झरै श्रोण झारा, फणारा घणारा कर फूंत्कारा॥

इस जबरदस्त मार को सहने की शक्ति कालिय में न रही। वह आर्तनाद कर उठा। श्रीकृष्ण के प्रहारों से वह बेहोश हो गया और छोटी नाव की तरह पानी में तैरने लगा। कालिय एक अत्याचारी नाग था। अत्याचारी के मरने पर सुर, नर आदि सभी को खुशी होती है।

श्रीकृष्ण के हाथ में कालिय नाग का सिर देखकर देवगण भी अपने रथों को रोक कर खड़े हो गए ।

वीर काव्य में युद्ध सामग्री का भी बड़ा महत्त्व है । कवि ने कृष्ण, नागरानी संवाद में समरोचित सामग्री का भी वर्णन किया है। तत्कालीन युद्ध में हय-दल पदल, हस्तीदल आदि का होना आवश्यक था । इसके अतिरिक्त शरीर रक्षाय बाजूबन्द तथा बख्तर का भी महत्त्व था । अनेकानेक शस्त्रों का प्रयोग उस समय किया जाता था । नीचे की पंक्तियों में कवि ने युद्ध सामग्री में अनेक शस्त्रास्त्र एवं वाद्यों के नाम बताये हैं ।

फिर डबरी सैन्य नाहीं फरस्सी कड चोल कट्टार कस्सो न कस्सी ।
टकारी न भारी न अढारटाकी, पापण न बाण न कमाण बाकी ।।
नफेरी न भेरी न निस्साण-नद्दा, रिणतूर बाज न गाज रवद्दा ।

अतः उपर्युक्त वर्णन के आधार पर यह तो निस्संकोच कहा जा सकता है कि कवि को युद्ध एवं युद्धोचित सामग्री का ज्ञान था । इसके साथ साथ यह कहने में भी संकोच अनुभव नहीं करना चाहिए कि कवि की आत्मा कृष्ण कालिय द्वंद्व युद्ध चित्रण में अधिक नहीं रमी है । इसका मूल कारण संभवतः कवि का भक्त होना है । भक्त कवि इस युद्ध में एक क्षण के लिए भी अपने आराध्यदेव को कष्ट में देखना नहीं चाहता । इसीलिए कालिय के प्रहार कृष्ण को फूल छड़ी की तरह मालूम हो रहे हैं ।

सांया झूला प्रधानतः भक्त कवि हैं । यद्यपि इन्होंने प्रारम्भ से ही उत्साहपूर्ण वातावरण में बालकृष्ण के शौर्य एवं पराक्रमपूर्ण कार्यों का चित्रण किया है फिर भी समग्र ग्रंथ का सम्यक् अवलोकन करने के बाद इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शौर्य गान गायक कवि भक्त हृदय पर विजय नहीं पा सका । भक्त कवि ने इस ग्रन्थ में स्थान स्थान पर बाल कृष्ण पर देवत्व का आरोप किया है । ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही कृष्ण को प्रभु कहकर संबोधित किया गया है वह दूसरों को जीवन मरण के बंधन से मुक्त कराने वाला है । भवनो भार उतारवा आव्यो एण जुगति' कहकर कवि ने ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही कृष्ण को अवतार मान लिया है । कवि सामान्यतः बालक कृष्ण का वर्णन करते हुए पाठक को एक उत्साही पराक्रमी तथा वाक् चतुर बालक का परिचय देता है । यह परिचय देते देते कवि के अन्तर्मन में सोयी भक्ति भावना जागृत होती है और अनेक प्रसंगों की सृष्टि कर बाल-कृष्ण के ईश्वरत्व की ओर संकेत करता है । कृष्ण के बाल रूप पर मुग्ध होकर नागरानियों ने सहानुभूतिवश कालिय से बचाने के लिए जब कृष्ण को अपने महलों में छिपने के लिए कहा तो

स्वयं श्रीकृष्ण ने निम्नांकित पक्तियों में अपने आपको विराट् बताया है।

रहा तो घरे दाव दूज रहावू, भोरो घाट वैराट एथें न मावू।

कृष्ण पार्थिव रूप में तो मथुरा में रहते हैं परन्तु वास्तव में उनका निवास तो भक्तों के हृदय में है—'अमारा भगता तणां एह ओरा' पक्तियों द्वारा गीता के इस प्रसिद्ध कथन को याद दिलाई है— 'नाऽहं वसामि वैकुण्ठे भक्त हृदये वसाम्यहम्।' इसी प्रकार नागरानी संवाद, नागरानियों द्वारा कृष्ण पूजा नारद द्वारा स्तुति गान आदि अनेक ऐसे प्रसङ्ग कृष्ण के देवत्व की ओर संकेत करते हैं। सारा का सारा ग्रंथ कवि की भक्ति भावना से भरा पड़ा है।

प्रकृति चित्रण का काव्य में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। कविगण हमेशा से ही प्रकृति की गोद में बठकर उससे प्रेरणा प्राप्त करते रहे हैं। प्रात, सध्या, सूर्य, चन्द्र, नदी, जंगल, पवन आदि अनेक प्राकृतिक उपकरणों के साथ अपना रागात्मक सम्बन्ध स्थापित कर उनके विभिन्न स्वरूपों की अवतारणा काव्यात्मकता के वर्द्धन में सहायक होती हैं। प्रस्तुत रचना नाग-दमण में कवि के सामने अनेक ऐसे अवसर आये हैं जहां वह प्रकृति चित्रण कर सकता था, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। प्रात गोचारण को जाते समय ऊषा काल एवं उगते सूर्य का ग्वाल बाल के खेलते समय जंगल का तथा यमुना नदी का थोड़ा बहुत चित्रण हो जाता तो अच्छा था। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि के हृदय में प्राकृतिक सुषमा के प्रति कोई आकर्षण नहीं है। कवि युद्ध सामग्री की परिगणना का अवसर तो नागरानी कृष्ण संवाद की रचना कर प्राप्त कर लेता है, परन्तु प्रकृति चित्रण का सहज स्वाभाविक ढंग से अवसर प्राप्त होते हुए भी काव्य के इस पक्ष की ओर ध्यान नहीं देता।

भाषा प्रौढ़ता का निकष उसका सश्लिष्ट स्वरूप है। थोड़े से शब्दों में भावों को बांधकर रखना भाषा पर पूर्ण अधिकार रखने वाले कवियों का ही काम है। नागदमणकार का भाषा पर पूर्ण अधिकार है। इसी कारण इस काव्य में संवाद सौष्ठव एवं शब्द चित्रों की योजना बड़ी सफलता के साथ बन पड़ी है। 'जसोदा दूला कदली खम जेहो' में माता यशोदा की कृशता एवं गिरने का बड़ा सफल चित्रण है। 'लियां लकुड़ी कर ऊभा हुलास' की शब्दावली पढ़ने से आंखों के सामने खेलने को आतुर खिलाड़ियों का चित्र तो खिंचता ही है, परन्तु हुलास शब्द का प्रयोग उनकी मन स्थिति का भी परिचायक है। सूक्ष्म को स्थूल रूप देना आधुनिक युग में छायावादी कवियों की एक विशेषता रही है, परन्तु १७वीं शताब्दी

में नागदमणकार ने इसका कितनी कुशलता के साथ प्रयोग किया है, यह दृष्टव्य है—'चलो जोय पालो चढ़ी बात चोड़' में बात की प्रसरण गति का चित्र सा खड़ा हो जाता है। इसी प्रकार 'चढ़ी कोलकी आज ही बाध पार' में कृष्ण की सुकुमारता तथा कालिय नाग की भयानकता का चित्रण है। 'नारी नाठियों पूठ कूको न लायो' में भी व्यंग्यात्मक भावों को बड़ी कुशलता के साथ बांधा गया है। 'हरी हो हरी हो हरी धन हांक' में शोभा को हांकने का दृश्य उपस्थित करने में तो कवि ने कमाल दिखाया है। इसके अतिरिक्त संवाद रचना में भी कवि को बड़ी सफलता मिली है। नीचे की पंक्तियों में नागरानी और कृष्ण के बीच प्रश्नोत्तर की झड़ी देखिए—

घठा हैत आयो अठ काज केहा, कहा भूलियो वापरो गाप गेहा ।

कृष्ण उत्तर देते हैं—

भली नागणी नावियो राह भूली, देखो आपरी लाज लीधो दहूली ॥

आगे फिर कृष्ण कहते हैं—

खट्टके मुहे नागणी बोल खारो, प्रभू जागसी मूझ पाछा पधारो ।

नागिन फिर कृष्ण को समझाती है—

थाळो नाग सूं लीजिए वेगि कानी, पड्यो तात सोझै चढै मात पानी ।

इस प्रकार छंद सं० ३० से लेकर छंद सं० ९३ तक में संवादों की छटा भरी पड़ी है। एक ही पद में प्रश्न, उत्तर, प्रत्युत्तर का समां-सा बंध जाता है। यह सब भाषा पर अमित अधिकार होने से ही सम्भव हो सकता है।

चित्रोपमता भी इस काव्य की अपनी विशेषता है। इस काव्य का प्रारम्भ भी मंगलाचरण के पश्चात शब्दचित्र से ही होता है। नीचे की पंक्तियों में माता यशोदा द्वारा कृष्ण को जगाने दधिमंथन करने, तथा मक्खन मांगने जैसी अनेक क्रियाओं का चित्रण देखने योग्य है।

विहाणू नवी नाथ जागो वहेला, हुयो दोहिवा धेनु गोवाळ हेला ।
जगाडे जसोदा यदुनाथ जागे, मही माट घूम, नवनीत मागे ॥

अपने घर से प्रातःकाल गौओं को निकालकर चौगान में लाना और उनको चराकर लाने के लिए ग्वाले को सौंप देना ग्राम्य जीवन की दैनिक प्रक्रिया है। कवि ने इसका बहुत ही सजीव एवं मनोरम चित्र खींचा है।

हरी हो हरी हो हरी धेन हाकै, झरूखा चढी नंदकुमार झाकै ।
अहिराणिया अव्वला भूल आव, भगवान न धेन गोप्या भळावै ॥

इकी-ब्रेवटी चोवटे आय ऊभी, सभाली लियो श्याम मोरी सुरभी।
हुई नद री धेन सू धेन हेला, भिळे वाळवा जाणि श्री गग भेळा ।।

नाग-दमण डिंगल भाषा की रचना है। इटली के सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक राजस्थानी भाषा के अनन्य प्रेमी डॉ० तस्सितोरी ने इस भाषा को अनियमित, गवारू तथा साहित्यशास्त्र का अनुसरण न करने वाली भाषा कहा था। नाग-दमण में डिंगल के इस स्वरूप को देखने से उपयुक्त सभी भ्रान्तियों का निवारण होता है। विद्वान सम्पादक ने इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में इस भाषा का व्याकरण भी दिया है। प्रस्तुत रचना में डिंगल भाषा का स्वरूप बहुत ही प्रौढ़, नियमित, शिष्ट एवं व्याकरण शास्त्र-सम्मत है।

भुजग प्रयात छद का प्रयोग सस्कृत काव्य में बड़ी प्रचुरता के साथ मिलता है। हिन्दी कविता ने इस छन्द को वहीं से प्राप्त किया है। डिंगल भाषा के कवियों ने सस्कृत के सभी वर्ण वृत्तों को अपनाया है फिर भी उनका सर्वाधिक झुकाव भुजगप्रयात की ओर ही रहा है। इसका कारण इस छन्द का गति वशिष्टय है। सायाजी ने इस छन्द का प्रयोग अपने इस ग्रथ में प्रारम्भ से लेकर अत तक बडी कुशलता के साथ किया है।

डिंगल के प्रसिद्ध अलकार वयणसगाई का निर्वाह करना कोई सरल काम नहीं है। यह तो सिद्धहस्त कवियों से ही सम्भव हो सकता है। क्योंकि इसमें भाषा, छन्द, अलकार तीनों पर समान रूप से अधिकार होना चाहिए। नागदमण में इसका सुन्दर निर्वाह हुआ है। उदाहरणार्थ निम्नांकित पद को देखिए—

मडयो दूसरो खेल खेलत माथ हिव ऊतरी वात गोवाळ हाथ।
करे श्रीन न्हडो नमतेय काना, जोव धेन धद्धोक काठ जमुना।

उपयुक्त छन्द के प्रत्येक चरण में प्रथम शब्द तथा अन्तिम शब्द का प्रारम्भ एक ही वर्ण से होता है। इस वर्ण-मैत्री को ही डिंगल कवि वयण सगाई कहते हैं। देखने से यह अनुप्रास का ही एक भेद मालूम होता है। इसके अतिरिक्त उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि अलकारों का प्रयोग भी बड़े सुन्दर ढग से किया है।

सारांशत नागदमण गो सरक्षण का सदेश वाहक, भाषा सारल्य, सश्लिष्ट भाषा शैली, चित्रोपमता मधुर सगीतात्मक छटा एव नाद-सौंदर्य से विभूषित डिंगल भाषा का सक्ति भावना से पूरित एक सरस पवाड़ा काव्य है।

हिन्दी भाषा में साहित्य सृजन का प्रारम्भ स० ७०० से शुरू हो

खंड १

झूला सायाजी

कृत

नागदमण

आलोचनात्मक अध्ययन

झूला सायाजी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

राजस्थानी कृष्ण भक्ति साहित्य मे झूला सांयाजी का विशिष्ट स्थान है। ये सफल कवि होने के साथ-साथ भगवान कृष्ण के अनन्य भक्त भी थे। इसी कारण से इनकी कृतियों में आत्म प्रचार भावना का सर्वथा अभाव पाया जाता है। अतः साक्ष्य के आधार पर केवल स्वय के नाम[1] तथा स्वय के गुरुवर श्री गोविन्ददासजी के नाम[2] के अतिरिक्त जीवन सबधी कुछ भी सामग्री नहीं मिलती। यहि साक्ष्यस्वरूप सम्बन्धित ऐतिहासिक ग्रन्थों से अथवा प्रचलित अनुश्रुतियों से कुछ सामग्री उपलब्ध होती है, उसी के आधार पर निम्नांकित पक्तियों मे भक्त कवि की जीवन झांकी प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

जन्म और वंश-परिचय

भक्तवर झूला सायाजी का जन्म चारण कुल की झूला नामक शाखा के अन्तर्गत वि० स० १६३२ भाद्रपद कृष्णा ९मी के दिन लील्छा नामक ग्राम मे हुआ।[3] इनके पिता का नाम झूला स्वामीदासजी था। स्वामीदासजी लीलछा नामक ग्राम के जागीरदार थे। यह ग्राम गुजरेश्वर सोलकी राजा सिद्धराज जयसिंहजी की ओर से इनके पूर्वजों को मिला था।[4]

---

[1] (अ) समवाद कालीतणो वह सारो,
कवै दासदामानु सायो चितारी।—नागदमण, छ० १२१

(आ) करण लीयो जिन्हि त्रिमोवन सो हठ करी,
सांइदे राखियो त्याग व्रज सुन्दरी। —रुक्मिणी हरण छ० २२३

[2] गोविन्ददासरै आसरै जस्स गायो।—नागदमण छ० १२१

[3] लीलछा नामक ग्राम गुजरात प्रांत के प्रसिद्ध नगर ईडर से १२ मील पूर्व की ओर ह्रद्राक्षी नामक नदी के तट पर स्थित है।

[4] श्री हमीरदान —नागदमण (सायाजी की जीवनी) पृ० १

बाल्यकाल एवं भक्ति संस्कार

सांयाजी बाल्यकाल से ही होनहार प्रतीत होते थे। इनके पिता भाव थे इसी कारण से ये भी नित्य प्रति भुवनेश्वर महादेव के दर्शनार्थ जाते थे और भगवान भोलेनाथ की पूजा-अर्चा किया करते थे। अनुश्रुति है कि—भगवान महादेव ने इनकी श्रद्धा एवं भक्ति से द्रवित होकर योगी के रूप में सांयाजी को दर्शन दिया था।

विद्याध्ययन—अभिरुचि तथा गुरु

पिता की मृत्यु के उपरांत सांयाजी ने ईडर आकर विद्याध्ययन करने का संकल्प किया। एक दिन जब वे ईडर की ओर आ रहे थे तब सीमाप से इनकी भेंट सुलेमान नामक मुसलमान जमादार से हो गई। वह सांयाजी के व्यक्तित्व से बहुत ही प्रभावित हुआ तथा अपने साथ इन्हें ईडर ले गया और एक ब्राह्मण के घर इनके खाने पीने एवं रहने का प्रबन्ध कर दिया।

महात्मा हरिदासजी के शिष्य महात्मा गोविन्ददासजी इन दिनों ईडर में निवास करते थे। इनकी ख्याति से प्रभावित होकर सांयाजी ने गोविन्ददासजी का शिष्यत्व ग्रहण करने का निश्चय किया। एक दिन अवसर पाकर इन्होंने म० गोविन्ददासजी के समक्ष अपना विचार प्रकट किया। इन्होंने सांयाजी की उत्कट अभिलाषा को देखकर वैष्णव विधि से दीक्षा प्रदान की एवं नियमित रूप से शास्त्रीय ग्रन्थों के साथ साथ श्री मद्भागवतादि पुराणों का अध्ययन करवाने लगे।

राज्याश्रय एवं राज्यसम्मान

इन दिनों ईडर पर राठौड़ राव वीरमदेवजी (१६३५-१६५३ वि०) का शासन था।[1] राव वीरमदेवजी प्रत्येक पूर्णिमा की रात्रि में स्वयं से सम्बन्धित कीर्ति काव्य सुनाने वाले को लाखपसाव[2] दिया करते थे। एक समय आलोजी नामक चारण ईडर आये हुए थे। राव वीरमदेवजी ने सदा की भांति लाखपसाव की तैयारी करके आलोजी को बुलवाया। आलोजी तथा राव वीरमदेवजी के परस्पर तकरार हो जाने के कारण आलोजी को लाख

---

[1]ईडर राज्यनो इतिहास पृ० १६८

[2]राजस्थान में शासकों की ओर से कवि तथा याचकों को लाखपसाव, करोड़ पसाव और अरबपसाव के रूप में क्रमशः उतनी ही सम्पत्ति भेंट करने का प्रचलन था परन्तु बाद में इन पसावों का एक कभी-कभाई परिपाटी के अनुसार भरणा (पूर्ति) कर दिया जाता था।

पसाव नहीं दिया जा सका। राव वीरमदेवजी ने तत्काल किसी अन्य कवि को लाने का आदेश दिया। जमादार सुलेमान उचित अवसर देखकर सायाजी को बुला लाया। सायाजी की विलक्षण प्रतिभा देखकर राव वीरमदेवजी आश्चर्यान्वित हुए तथा उक्त लाखपसाव के साथ साथ रेहड़ा नामक ग्राम देकर विशेष सम्मानित किया। साथ ही ईडर मे इनका तम्बू बंधवा कर राज्याश्रय भी प्रदान किया। राव वीरमदेवजी इन्हें समय-समय पर और भी अनेक प्रकार के दान देकर सम्मारते सम्मानित रहते थे जिनमे चवालीस हजार के मूल्य का झालाहर नामक घोड़ा तथा रायपुर से लौटते समय एक हाथी और लाखपसाव का दिया जाना अधिक प्रसिद्ध है।[1]

राव वीरमदेवजी की मृत्यु के उपरात इनके लघु भ्राता राव कल्याणमलजी ईडर के शासक बने। ये भी राव वीरमदेवजी की तरह भक्तवर सायाजी को अपार श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। एक बार राव कल्याणमलजी स्वय छोटी सवारी से लोलड़ा पधारे थे।[2] इन्होंने भी राव वीरमदेवजी की तरह वि० स० १६६१ मे झूला सायाजी को लाखपसाव तथा कुबावा नामक ग्राम शासन मे देकर विशेष सम्मानित किया था।

भक्तवर झूला सायाजी का भी राव कल्याणमलजी के प्रति अपार स्नेह था। उनके व्रजवास के समय रावजी को लिखे गये गीतात्मक पत्र के द्वारा ऐसा स्पष्ट ध्वनित होता है। यथा —

गीत सायाजी झूला रो कह्योडो

॥ प्रथम दूहो ॥

मन धारै मळवाह, एचै आवायै नही।
आडा ईडरियाह, काकड घणा क्लियाणमल ॥१॥

॥ गीत ॥

आखै सूर हो सदेश अमोणो,
व्रज आया किम वळिय।
साम तिया सेहर सामळिया,
मळै तो मथुरा मळिय ॥१॥

---

[1] फार्बस कृत रासमाला का गुजराती अनुवाद पृ० ६६८

[2] राजस्थान के शासक जब किसी व्यक्ति का विशेष रूप से सम्मानित करके दरबार में बुलाते थे तब वे स्वयं सम्मानित व्यक्ति से छोटी सवारी (वाहन) पर बैठ कर उसके पीछे पीछे चलते थे जिसे छोटी सवारी कहा जाता था।

अकल नहीं अठ कोई अणगम,
दकल नही काई दरियो।
भोनै रव मेळ राव मारू,
एकारू ईडरियो ॥२॥

रयण समाश्रम (सरस अठै रव)
प्रथवी अकल पयाणो।
धर भेटवा तणी गोवरधन,
सहजो करै किल्याणा ॥३॥

शोध प्रतिष्ठान—स्फुट साहित्य सग्रह पृ० १५३

इस गीतात्मक पत्र के प्राप्त होते ही राव कल्याणमलजी ने अविलम्ब ईडर से मथुरा की ओर प्रस्थान कर दिया था, परन्तु मथुरा पहुचने से पूर्व ही सायाजी के गोलोकगमन की दुखद सूचना इन्हें मिल जाने के कारण वे आगे न जाकर ईडर लौट आये।[1] यह घटना वि० स० १७०३ की श्रावण सुदी २ को प्रात काल मे घटित हुई मानी जाती है।[2]

रासमाला मे उक्त घटना का काशी से एक पडाव की दूरी पर घटित होना बताया गया है[3] जिसका आधार सम्भवत गीतात्मक पत्र के द्वितीय द्वाले का अशुद्ध पाठ रहा है। जिसमे—"गग-सनान करण गाढागुर, आव जो ईडरियो" पाठ से गगा का काशी मे होना सम्भावित मानकर उक्त घटना का काशी के निकट होना मान लिया गया है। परन्तु रा० वि० स० शोध प्रतिष्ठान द्वारा सकलित हस्तलिखित सामग्री के अन्तर्गत जो गीतात्मक पत्र प्राप्त हुआ है उसमे उक्त पाठ नहीं है तथा होना भी नहीं चाहिए। क्योंकि डिंगल के छोटे साणोर गीत की यह एक विशेषता रही है कि—प्रथम द्वाले मे वर्णित भाव को ही अग्रिम द्वालो मे शब्द भेद से परिपुष्ट किया जाता है। प्रतिष्ठान के सकलन द्वारा प्राप्त गीत मे यह विशेषता उपलब्ध है अत इसका पाठ अधिक विश्वास करने योग्य है। इस गीतात्मक पत्र मे कवि सायाजी ने राव कल्याणमलजी सोमदेवजी को मथुरा ही बुलवाया है। क्योंकि व्रजवास करने के उपरात किस प्रकार अन्य स्थान को जाया जाय ? इसलिए गोवर्धनधारी को धर पर भेंटने के लिए ही मारू राव से प्रार्थना की गई है।

---

[1] श्री हमीरदान — नागदमण (सायाजी की जीवनी) पृ० ४६
[2] श्री मोतीलाल मनारिया — राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १७८–१७६
[3] फार्बस कृत रासमाला (गुजराती अनुवाद) पृ० ६७७

अत कागी के पास उक्त घटना के घटित होने का प्रश्न ही नहीं उठता ।

जनमानस पर सायाजी का प्रभाव

भक्त कवि झूला सायाजी सदगृहस्थ होते हुए भी अपने जीवन काल में चमत्कारी संत माने जाते थे । इनके द्वारा गाय पर झपटते हुए बाघ को शापित करके गधा बना देना, ईडर के सरोवर पर स्नान करते समय एक मगर को अञ्जलिदान द्वारा यक्ष का स्वरूप प्रदान कर देना, द्वारिका स्थित रणछोड जी के वस्त्रों मे लगी हुई अग्नि को ईडर के दरबार मे बठे बठे बुझा देना इत्यादि चमत्कारपूर्ण अनुश्रुतिया उनकी लोकप्रियता के प्रबल प्रमाण हैं । इतना ही नहीं एक डिंगल कवि तो झूला सायाजी को भगवान से भी बढ कर मानता है तथा उनकी पूजा-अर्चा में ही अपना कल्याण मानता है । यथा —

गीत साया झूलारो

पावन मन तिसो भगता पण,
अेहडो सकव थयै उदार ।
साइयो एकण वार साभळै,
हर साभळै वार हजार ॥१॥

माया मोह न लागो जे मन,
गढवी तूझ लगो हर ग्यान ।
लीधा भायावत चै (?) लाधै,
सहस नाम फळ एक समान ॥२॥

झूला राव इसो नित झीलै,
किसन भगजळ समोवरि ।
वर दीधो एहवो लिखमीवर,
भगत सहूवै साख भरि ॥३॥

तू गोकळ घर रह निरतर,
रिदै तूझ चरणै हू रीत ।
गायस तू गढवी त्रभुवण गुण,
गायस हू थारा गुण गीत ॥४॥

शोध प्रतिष्ठान— स्फुट साहित्य सग्रह पृ० १५२

झूला सायाजी की रचनाए

झूला सायाजी की दो चार स्फुट पद्य रचनाओं के अतिरिक्त केवल

दो काव्य ग्रन्थ उपलब्ध हैं—नागदमण और रुक्मिणीहरण। उक्त दोनों काव्य भगवान कृष्ण की पावन लीला से संबंधित हैं। भाव भाषा और शैलीगत सभी विशेषताओं के रहते हुए भी रचनाकाल के उल्लेख का अभाव खटकता है। पालणपुर निवासी राज्य कवि सन्धोरामन हमीरदानजी ने स्वसम्पादित नागदमण में रुक्मिणीहरण और नागदमण का रचनाकाल राव वीरमदेव जी के देहावसान के उपरांत राव कल्याणमल जी के द्वारा प्रदत्त लाखपसाव से पूर्व माना है।[1] राव वीरमदेव जी का देहावसान विक्रमी संवत १६५३ में हुआ था और राव कल्याणमल जी द्वारा सांयाजी को वि०सं० १६६१ में लाख पसाव दिए जाने की मान्यता है।[2] इस मान्यता के आधार पर [१६५३ से १६६१ वि० तक] आठ वर्ष का रचनाकाल ठहरता है। रुक्मिणीहरण की भाषा शैली को देखते हुए तो उक्त काल को ठीक कहा जा सकता है, पर नागदमण की शैलीगत प्रौढ़ता देखते हुए, उचित प्रतीत नहीं होता। कारण कि उक्त रचनाकाल के समय स्वयं सांयाजी की आयु [जन्म १६३२ वि०] केवल २१ वर्ष की थी। इतनी अल्प वय में नागदमण जैसी प्रौढ़ रचना का रचा जाना संदेहास्पद है तथा आगे के जीवनकाल [मृत्यु १७०३ वि०] में हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना कम आश्चर्यजनक नहीं है। नागदमण का सृजनकाल रुक्मिणीहरण के साथ मानने के पीछे उसको अकबर के दरबार में प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति रही हो तो भी कोई अत्युक्ति न होगी। प्राचीन शास्त्रकार परीक्षा[3] के अनुरूप मध्य युग के कवियों में यह भावना पाई जाती है कि—वे भी अपनी रचनाओं को तत्कालीन शासक के सम्मुख प्रस्तुत करके उस पर सम्मति प्राप्त करें।

साहित्य जगत में प्रचलित यह प्रवाद—यह [रुक्मिणीहरण] और वेलि दोनों ग्रंथ एक साथ बादशाह अकबर को निरीक्षणार्थ भेजे गये। बादशाह ने पहले वेलि को सुन कर हरण को सुना। अंत में हरण की रचना को श्रेष्ठतर निर्णीत करके श्लेष और व्यंग्य में पृथ्वीराज से कहा—"पृथ्वीराज तुम्हारी वेलि को चारण बाबा की हरिणियां चर गई।"[4] भी परीक्षणीय है।

---

[1]श्री हमीरदान—नागदमण [सायाजी री जीवनी] पृ० २५

[2]श्री माहेश्वरी—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १७७

[3]श्रूयते च पाटलि पुत्रे शास्त्रकार परीक्षा। अत्रोपवर्ष वर्षाविह पाणिनि पिंगला-
विह याडि वररुचि पतंजली इह परीक्षिताख्यातिमु जग्मु।

राजशेखर—काव्य मीमांसा

[4]डा० आनन्दप्रकाश दीक्षित—वेलि क्रिसन रुक्मिणी री भूमिका पृ०३५

बादशाह अकबर का जीवनकाल १६२ वि० तक माना गया है। वेलि के रचयिता राठौर पृथ्वीराज जी १६५७ वि० मे बकुण्ठवासी हुए। उक्त प्रवाद मे बादशाह अकबर वेलिकार की उपस्थिति मे अपना निणय देते हैं। इस से सिद्ध होता है कि—उक्त घटना १६५७ वि० से पूव की है। मूला सायाजी [जन्म १६३२] की आयु २१-२५ वय और राठौर पृथ्वीराज [जन्म १६०६] की आयु ५१ वय ठहरती है। बादशाह अकबर जैसा साहित्यमम्ज्ञ एव व्यवहारकुशल शासक एक प्रतिष्ठित प्रौढ साहित्यकार एव अतरग मित्र की तुलना म एक नवोदित युवा कवि को वाग्मी स्वीकार करे, यह कुछ अटपटा सा लगता है, जबकि मूला सायाजी [illegible] साधु सन्यासी न हो कर एक सदगृहस्थ युवक थे।

मूला सायाजी कृत रुक्मिणीहरण का काव्यसौष्ठव भी एक विवादात्मक प्रश्न है। राजस्थानी साहित्य के ममज्ञ प० श्री मोतीलाल जी मेनारिया तथा श्री सीताराम जी लालस नागदमण की तुलना में रुक्मिणी हरण को एक साधारण श्रेणी का वणनात्मक ग्रन्थ मानते हैं, जिसमे काव्यत्व का कहीं पता भी नहीं है।[1] इधर श्री पुरुषोत्तमजी मेनारिया स्वसपादित रुक्मिणीहरण की प्रस्तावना मे—ग्रन्थ भण्डारों मे सायाजी कृत रुक्मिणी हरण की प्रतियां बहुत कम मिलती हैं अत आलोचकों की धारणाए स्पष्ट न हो सकीं—कारण बताते हुए "कवि को दोनों कृतियों मे समान रूप से सफलता प्राप्त हुई है" मानते हैं।[2] वस्तुत स्थिति ऐसी नहीं है। रुक्मिणी हरण कवि के युवाकाल की सवप्रथम रचना है तथा नागदमण प्रौढकाल की। अतएव यदि रुक्मिणीहरण मे नागदमण की सी सजीव एव परिपुष्ट शैली का अभाव पाया जाता है तो वह उपेक्षणीय नहीं, उचित ही है।

नागदमण की सजीव—चित्तात्मक शैली ने परवर्ती कवियो को भी पर्याप्त मात्रा मे प्रभावित किया है। अनेक चारण तथा चारणतर जन इत्यादि कवियों ने अपने काव्य ग्रन्थों मे नागदमण के छदों को थोडे बहुत हेर फेर के साथ अपना लिया है। सब से बडी लोकप्रियता का उदाहरण तो कवि कल्याणदास का नागदमन है।[3] इस ग्रन्थ म कवि, मूला सायाजी कृत

[1](अ) श्री मोती लाल मेनारिया —रा० भा० और साहित्य पृ० १३३
(आ) श्री सीताराम लालस—राजस्थानी-सबद-कोस भाग १ भूमिका पृ० १४४

[2]प्रकाशक—प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

[3]श्री मानदान बारठ, ग्रामनगरी द्वारा हरिरस के साथ प्रकाशित

मागवमण के विशिष्ट कलात्मक शब्द विन्यासों को स्वीकार करते हुए उसी छंद और उसी परिमाण का काव्य अपने नाम से प्रचारित करने का लोभ संवरण नहीं कर सका है। उदाहरणार्थ कतिपय छन्दों का अवलोकन कीजिए —

सझ चद्रिका चद्रिका सीस तार,
जरी को दुपट्टो झलक्‍कं थगाक।
जडी लालर मूदडीं रूप पुजा,
गल दूल्लडी तिल्लडी हार गुजा ॥४॥

मिलाइये छ० स० २६

हुका किलक्का ग्वाल हल्ले वहला,
हुव मात गादावरी गंग हला॥
× × ×
भले नदर धेनवा बाग टोळा,
हुले सिंधु ज्यो नीर लेती हिलोळा ॥१०-११॥

मिलाइये छ० स० ६७

उतसी छटा रूप वसी अधारो,
प्रभू फूटरा स्याम पाछा पधारो।
अडे अतरी पत हूता अरोडो,
जदुनाथ थारे किसो नाग जोडो ॥३२॥

मिलाइये छ० स० ३४-४०
इत्यादि

द्वितीय अध्याय

नागदमण का कथा-स्रोत तथा कवि की मौलिक उद्भावना

नागदमण भगवान श्रीकृष्ण की बाललीला से सम्बन्धित एक चरित्र काव्य है। कालिय दमन का वृत्तांत—महाभारत (सभा ३८), हरिवंश (२ १२), ब्रह्म पुराण (१८५), श्री मदभागवत (१० १६) इत्यादि पौराणिक ग्रंथों में उपलब्ध है। इन सब में [1]श्री मदभागवतमहापुराणोक्त कालिय दमन लीला सुविस्तृत रूप से वर्णित है। यही प्रस्तुत नागदमण का कथा स्रोत है। इसी बहु प्रचलित कथा को मूला सायाजी ने अपनी काव्य प्रतिभा का सपुट दे कर मौलिक स्वरूप प्रदान किया है। भगवान श्रीकृष्ण तथा कालिय नाग इस आख्यान के विशिष्ट पात्र हैं। अपेक्षित विवेचन से पूर्व इन दोनों पर संक्षिप्त प्रकाश डालना अप्रासंगिक न होगा।

भगवान श्रीकृष्ण

भारतीय साहित्य में कृष्ण का स्थान महत्वपूर्ण है। कृष्ण के चरित का विस्तारक्षेत्र व्यापक है।[1] यद्यपि वेदों में वासुदेव कृष्ण की चर्चा नहीं है, पर अवतारों में सब से पहले उन्हीं की पूजा होने लगी थी।[2] ईसा से कम से कम चार सौ वर्ष पहले वासुदेव की पूजा चल पड़ी थी। धीरे धीरे वासुदेव और नारायण को एक ही समझा जाने लगा था।[3] सनातन नारायण के चार अवतारों में एक अवतार कृष्ण भी प्रमुख है।[4]

विद्वान लोग कृष्ण के स्वरूप की प्राचीनता और व्यापकता में संदेह प्रकट करते हैं। विटरनित्स पाडवों के सलाहकार कृष्ण पौराणिक कृष्ण, गीता के उपदेशक कृष्ण को विभिन्न व्यक्ति मानते हैं। भारतीय विचारधारा

---

[1]श्रीमती पाटे— हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक विवेचन पृ० ८

[2]श्री चारण— अलखिया सम्प्रदाय पृ० ७

[3]श्री द्विवेदी— सूर साहित्य पृ० १

[4]म०भारत— १२ ३२१, ८१०

पाश्चात्य विद्वानों के इस सन्देह को महत्त्व नहीं देतो। इस विचारधारा के अनुसार कृष्ण के अनेक स्वरूपों का समावेश एक कृष्ण में हुआ है। प्रारम्भिक पुराणों में कृष्ण का अंशावतार, उत्तर कालीन पुराणों में सोलह कला से युक्त पूर्णावतार हो गया है। कृष्ण चरित्र के विभिन्न स्वरूपों का समन्वय ही उत्तर काल में उनके पूर्णावतार को जन्म देता है।[1]

नागदमण का सम्बन्ध बालकृष्ण या गोपालकृष्ण से है। गोपालकृष्ण संबधी कथाओं का वर्णन हरिवंश और वायुपुराण में उपलब्ध होता है। भागवत पुराण में कंस वध, पूतना तथा अन्य राक्षसों का वध आदि कथाओं का विस्तृत वर्णन है। इनमें कंसारि कृष्ण और गोपालकृष्ण को अभिन्न समझा गया है। इन ग्रन्थों के बनने के समय निश्चय ही गोपालकृष्ण की कथा खूब प्रचारित हो गई होगी! महाभारत के ही सभापर्व (अ०४१) में शिशुपाल के मुँह से ऐसी बातें कहलाई गई हैं जिनमें कृष्ण की गोकुल वाली कथा का आभास पाया जाता है।[2] डा० भण्डारकर का अभिमत इससे भिन्न है। उनके अनुसार कृष्ण आभीर नामक एक घुमक्कड़ जाति के बाल देवता हैं। वे (आभीर) ही सम्भवतः बाल देवता की जन्मकथा और पूजा तथा उनके प्रख्यात पिता का उनके विषय में यह अज्ञान कि वह उनके पिता हैं, और निरपराधों के वध की कथा अपने साथ ले आये।[3] यह बालकृष्ण की कथा ईसामसीह की कथा का (ही) भारतीय रूप है।[4] केनेडी, ग्रियर्सन, वेबर आदि विद्वान भी भण्डारकर के अभिमत से सहमत हैं।

डा० भण्डारकर, केनेडी तथा वेबर का मत समीचीन नहीं प्रतीत होता। बालकृष्ण की भक्ति भारत के लिए विदेशी वस्तु नहीं है। रे चौधरी सुदूर वेदों के अन्तर्गत विष्णु के नटखट स्वरूप में बालकृष्ण [redacted] बीज की उपस्थिति बतलाते हैं।[5] कीथ ने भी बालकृष्ण की कथा को ईस्वी सन से पूर्व का होना सम्भव बताया है।[6] आभीर इसी देश की पुरानी जाति हो सकती है, उनके अपने बाल देवता भी हो सकते हैं। श्री कुमारस्वामी ने कहा है कि—आभीर शब्द द्रविड भाषा का है जिसका अर्थ होता है गो पाल। यह कहा जा सकता है और कहा

---

[1] श्रीमती पाण्डे—हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक विवेचन पृ० १२ १३

[2] श्री द्विवेदी—सूर साहित्य पृ० ४

[3] वैष्णविज्म शैविज्म एण्ड माइनर रैलिजस सिस्टम्स पृ० ३६ ३७

[4] वही पृ० ३८ ३६

[5] श्रीमती पाण्डे—हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक विवेचन पृ० १३

[6] ज० रा० ए० सो० सन् १६०७

भी गया है कि—आभीरों (अहीर, जाट, और गूजरों) की मुखाकृति, शरीर गठन आदि, द्रविड नहीं बल्कि सीथियन है। केनेडी इन्हें सीथियन मानते भी हैं। पर इससे उक्त अनुमान मे कोई बाधा नहीं पड़ती। हो सकता है कि—आभीर नाम की कोई द्रविड जाति जिसका धर्म भक्ति प्रधान हो और देवता बालकृष्ण हों, पहले से ही इस देश में रहती हो, बाद को ये सीथियन जातियां आकर इनका धर्म ग्रहण करके अपने को आभीर कहने लगी हों। आभीर शब्द का द्रविड होना और देवता कृष्ण (काला) होना इस अनुमान का सहायक होना बताया जा सकता है। यह बात ऐतिहासिकों के ऊहापोह का विषय बनी हुई है कि बाहर से आई हुई कितनी ही जातियां ब्राह्मण धर्म मे शरण न पा सकी थीं।[1]

नारद पंचरात्र मे बालकृष्ण की महिमा का उल्लेख मिलता है। ज्ञानामृत सार संहिता के अनुसार नारद कृष्ण माहात्म्य सुनने के लिए कैलाश पर शिव के पास जाते हैं, वहां उनके महल के सात फाटकों पर—यमुना, कदंब पर श्रीकृष्ण वस्त्र हरण, नग्न गोपिकाएं आदि लीलाएं चित्रित थीं। इस कथा के अनुसार चित्रित एक स्तम्भ जोधपुर के निकट मण्डोवर ग्राम में पाया गया है।[2] भण्डारकर के कथनानुसार इस का काल ईस्वी सन की चौथी शताब्दी के पहले नहीं हो सकता।[3] फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि चौथी शताब्दी तक कृष्ण की लीलाएं भारत मे खूब प्रख्यात हो गई थीं।

कालिय नाग

भगवान श्रीकृष्ण के प्रतिद्वंद्वी कालिय का चित्रण एक भयंकर सर्प के रूप मे हुआ है। कालिय क्रुद्ध होकर अपने सहस्त्र फनों द्वारा भगवान पर आक्रमण करता है तथा पूंछ की लपेट से उन्हें घेर लेता है। भगवान श्रीकृष्ण अपने पराक्रम से नागपाश से मुक्त होकर प्रत्याक्रमण स्वरूप उसके फनों पर चढ़ कर उन्हे कुचल देते हैं। वह हजार फनों द्वारा रक्त वमन करने लगता है। नागपत्नियां उसकी मुक्ति के लिए भगवान की स्तुति करती हैं। कालिय के लिए—महाकाल, पन्नग, भुजंग, सर्प, अहि, अहिराव, मणिधर इत्यादि संज्ञा एवं विशेषणों का व्यवहार हुआ है।

कुछ विद्वान उपर्युक्त घटना का प्रतीकात्मक अर्थ करते हैं। नाग

[1] श्री द्विवेदी—सूर साहित्य पृ० ६
[2] आर्केलाजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, वार्षिक विवरण १६०५
[3] वैष्णविज्म, शैविज्म एण्ड माइनर रैलिजस सिस्टम्स पृ० १४ ४२

को काल का प्रतीक माना गया है।[1] गति और स्थिति, ज्ञानेच्छा क्रियात्मक विभु की क्रियान्वित के दो प्रधान रूप हैं। गत्यात्मक शक्ति का नाम काल है। यह स्वयं गतिशील रहता है और सृष्टि में किसी को स्थिर नहीं रहने देता। सब को विनाश द्वारा, परिणित या परिपक्वावस्था में पहुंचा कर उन्हें समेट लेता है। इसकी क्रिया का यही स्वभाव है। इसलिए सारी सृष्टि विवश हो कर इसके वश में पड़ी हुई है और इसकी निरपेक्ष क्रिया-शीलता से त्रस्त रहती है। क्योंकि अपनी अबाधगति में यह छोटे बड़े और अच्छे बुरे का विचार नहीं करता। इसके चक्कर में या लपेट में सारी सृष्टि पड़ी हुई है।[2] समस्त शक्तियों का उद्गम और आश्रय परमात्मा है। भगवान कृष्ण उसी परमात्मा के पूर्ण अवतार माने जाते हैं। अतएव काल सामान्य जीवात्माओं की तरह ही भगवान कृष्ण को वेष्टित करता है, परन्तु वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाता, पराजित हो जाता है।

कालिय के प्रतीकात्मक पक्ष के अतिरिक्त व्यावहारिक पक्ष भी उल्लेखनीय है। इस पक्ष के अनुसार कालिय नागराज है। उसके पत्नियां, दास, दासियां तथा प्रजा है। वह एक महल में निवास करता है। इन सब पर ध्यान देने से नाग संस्कृति की ओर दृष्टि जाती है। आर्यों के आगमन से पूर्व भारत में नाग और सुपर्ण इत्यादि आर्येतर जातियों की प्रबलता रही है। नाग जाति में अनेक ने वैदिक काल में ब्राह्मण और ऋषि का पद प्राप्त किया था।

नाग काश्यप हैं। नागों की माता का नाम विनता था। कद्रु सर्पों की जननी है। सर्प और नाग भाई भाई हैं। काश्यप गरुड़ से इनकी शत्रुता रही है। यक्ष और नागों को अमृत—सोम का रक्षक कहा गया है।[3] पर्वत में कुबेर के स्वर्ण तथा धन की रक्षा करने में नाग भी नियत था।[4] झाख, जदों नागों को रावण ने जीता था। नाग सुन्दरियां को बंदी बना लिया था। नागाह्वय नगर में धर्म चक्र का प्रवर्तन हुआ था। परवर्तीकाल में नागाह्वय

[1] लिंग पुरुष इत्युक्तो योनिस्तु प्रकृतिः स्मृता।
नाग काल समाख्यात सम्बन्धस्तु तयोर्द्वयो॥
—प्राधानिक रहस्य की टीका में भुवनेश्वरी संहिता से उद्धृत

[2] भारतीय प्रतीक विद्या पृ० १७

[3] यक्ष २ पृ० ३१

[4] एपिक माइथालाजी पृ० २७

हस्तिनापुर को कहते थे ।[1]

भोगवती नागों की राजधानी थी । यहाँ का राजा शेष था ।[2] कुरुओं का प्रारम्भ क्या नाग जाति से जोड़ा जा सकता है ? क्रिवि=क्रिमि, और यह नाग का नाम है । पचाल सम्भवत पाँच नाग जातियां हैं । धृतराष्ट्र, ऐरावत, धनजय, वदिक नाग हैं । नाग विवाद करता है । वासुकि उत्तर देता है । मुख्य नाग ये हैं—कर्कोटक [सप], वासुकि [भुजग], कच्छप, कुड, तक्षक [महोरग] । एक भोगवती सर्पो का देवी आसुरी सम्बध है ।[3]

नाग लोग प्रधानत शिव के उपासक थे और सुपण लोग विष्णु के । गरुड़ विष्णु के वाहन हैं और नाग शिव के भूषण ।[4] कहीं कहीं नागों को वरुणोपासक बताया है । आर्य भी इन्हें नीच नहीं समझते थे । राजतरंगिणी के अनुसार नागकन्या चन्द्रलेखा का विवाह एक ब्राह्मण से हुआ था । ऐसे विवाह उन दिनों सभी तरह से वैध समझे जाते थे । पांडव अर्जुन [illegible] विवाह नागकन्या उलूपी से हुआ था ।[5] सोमश्रवा नागकन्या गर्भसम्भूत महातपस्वी [illegible] हैं, इन्होंने जनमेजय के यज्ञ में पौरहित्य किया था ।[6] जरत्कारु महातपा, ऊर्ध्वरेता तपस्वी थे । नि सतान होने के कारण इनके पूर्वज अधोगति मे जा रहे थे । जरत्कारु की प्रार्थना पर नागराज वासुकि ने अपनी बहिन का सम्बन्ध इनके साथ कर दिया ।[7] इससे उत्पन्न सतान ने जरत्कारु के पित पितामहों का अधोगति से उद्धार किया था । जनमेजय को नाग यज्ञ से विरत कराने वाले तपस्वी आस्तीक का मातृकुल नाग था ।[8] इत्यादि प्रमाणों से स्पष्ट रूप से सिद्ध है कि—नाग यहां जन्तुवाचक शब्द नहीं है ।

कालिय नाग गरुड के भय से रमणीक द्वीप छोड़ कर (काली) दह में आकर बसा था ।[9] गरुड नागों के प्रबल शत्रु थे, यह पहले बताया जा चुका है । खूब सभव है इन दोनों (नाग और सुपर्ण) जातियों के लांछन

---

[1]वही पृ० ८१

[2]वही पृ० ३२

[3]श्री रांगेय राघव —प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास पृ० ८८

[4]श्रीसेन —संस्कृति संगम पृ० २६

[5]महाभारत —सभापर्व

6 ,, आदिपर्व पौष्य ३ अ०

7 ,, आदि० ४६ अ०

[illegible] ,, आदि० ५६ अ०

[9]श्रीमद्भागवत-१० अ० १६ श्लो० ६२

(टोटेम) ये दोनों (सांप और पक्षी) जन्तु थे।[1] मथुरा से प्राप्त गुप्तकालीन स्तूप के अंकन से भी यही प्रमाणित होता है।[2]

नागदमण कथा का प्रयोजन

नागदमण के रचयिता तथा श्रीमदभागवतकार का मुख्य उद्देश्य, भगवान श्रीकृष्ण की अलौकिक लीलाओं का परिचय देना होते हुए भी, दोनों की वर्णन शैली भिन्न भिन्न है। नागदमण का कथा संगठन नाटयात्मक दृष्टि को ध्यान में रखते हुए किया गया प्रतीत होता है और श्रीमदभागवत का इतिवृत्तात्मक दृष्टि से। यथा —

नागदमण की कथा संक्षिप्ति

माता यशोदाजी के प्रबोधन से सचेत होकर भगवान श्रीकृष्ण प्रातःकालीन भोजन से निवृत्त होकर गो चारणार्थ घर से प्रस्थान करते हैं। सखा गोप बालक तथा बछड़े उनके साथ हैं। गोपिकाएं अपने-अपने घरों पर खड़ी हुई भगवान श्रीकृष्ण की बाट देख रही हैं। कई गोपिकाएं भगवान श्रीकृष्ण को गोद सहला रही हैं। वे समस्त गो धन को एकत्रित करके वन की ओर प्रस्थान करते हैं। यमुना तट पर पहुचने के उपरांत गोप बालकों के प्रस्ताव से कन्दुक क्रीड़ा प्रारंभ की जाती है। दोनों पक्षों में अपार गोप-बालक हैं। भगवान श्रीकृष्ण उनके मध्य खेल रहे हैं। दोनों पक्षों के परस्पर संघर्ष से गेंद उछल कर यमुना के गंभीर जल में जा गिरती है। भगवान श्रीकृष्ण गेंद लाने एवं कालिय के दुष्प्रभाव को सदा के लिए समाप्त करने के निमित्त—तत्काल कदम्ब की टहनी पकड़ कर यमुना में कूद जाते हैं। यह वृत्तांत तीव्र वेग से समस्त विश्व में व्याप्त हो जाता है। माता यशोदाजी तो इस बात रूपी आघात से कदली स्तम्भ की तरह गिर पड़ती हैं। समस्त व्रजमंडल के निवासी शोकाकुल होकर यमुना तट पर पहुचते हैं। भगवान श्रीकृष्ण को वहां न देखकर सबके सब आर्तनाद करते हुए विलाप करते हैं। गाय, बैल, बछड़े सभी स्तब्ध खड़े हैं। इधर भगवान श्रीकृष्ण कालिय के दरबार में पहुचते हैं। कालिय सो रहा है। नागपत्नियां भगवान के बालसुलभ सौंदर्य को देखकर मुग्ध हो जाती हैं। समस्त नागलोकवासी उन्हें देखने के लिए कालिय के दरबार में एकत्रित हो गए हैं। नागपत्नियां भगवान श्रीकृष्ण से परिचय पूछती हुई आग्रह करती हैं—लाला, कहीं म[illegible] तो नहीं भूल गए हो यह सांप का घर है? आप कालिय के सोते सोते [illegible] जाइए। भगवान श्रीकृष्ण प्रत्युत्तर में अपनी गेंद जो नाग

1. [illegible] —संस्कृति संगम पृ० २८
2. देखि[illegible] ० संख्या १३ पादटिप्पणी तथा चित्र

पत्नियों ने छुपा रखी है, देने की मांग करते हैं। नागपत्नियां पुन: कालिय की भयंकरता का वर्णन करती हैं। भगवान श्रीकृष्ण को कालिय के दुष्कर्म स्मरण हो आते हैं। वे कालिय के साथ युद्ध के लिए अड़ जाते हैं। नागपत्निया बालक के भोलेपन पर आश्चर्य प्रकट करती हैं। कालिय से बड़े बड़े राजा तक कांपते हैं, जिनके पास अपार सेना है। तुम्हारे पास तो शस्त्रास्त्र के नाम पर केवल एक मुरली है। भगवान श्रीकृष्ण कालिय को भी अपने समान निरस्त्र बताते हैं। हम दोनों शस्त्रविहीन हैं। नाग और हमारा बाहु युद्ध होगा। हार जीत भगवान के हाथ है। लाख समझाने पर भी जब भगवान श्रीकृष्ण अपने हठ को नहीं छोड़ते हैं तब नागपत्निया व्यंग्य प्रयोग करती हैं। यमुनाजी भगवान के महत्व का वर्णन करती हुई कहती हैं—यह बालक और कोई नहीं, स्वयं भगवान हैं। नागपत्नियां भगवान से हार जाती हैं। भगवान श्रीकृष्ण मधुर तथा उच्च स्वर से वेणुवादन करते हैं। मधुर स्वर समस्त ब्रह्माण्ड मे व्याप्त हो जाता है। ब्रज निवासियों की लुप्त चेतना पुन: जाग्रत हो जाती है। उच्च स्वर से कालिय की तन्द्रा भंग होती है और वह अपने दरबार मे भगवान कृष्ण को देखकर फुफकारता हुआ उन पर आक्रमण करता है। भगवान पर इस का कोई प्रभाव नहीं होता। दोनों योद्धा मल्ल युद्ध मे प्रवृत्त होकर दह में आ जाते हैं। यमुना का जल उनके संघर्ष से मथा जा रहा है। भगवान के सबल हाथ कालिय की ग्रीवा पर पडते हैं। जिस प्रकार गारुडी सांप के साथ खेल करता है उसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण कालिय से खेल रहे हैं। कालिय जोर जोर से फुफकार रहा है। भगवान श्रीकृष्ण हाथों और पैरों से निरन्तर प्रहार कर रहे हैं। समस्त लोक कंपायमान हैं। इस दृश्य को देखने के लिए देवता अपने-अपने विमानों मे बैठ कर आ गए हैं। भगवान श्रीकृष्ण के प्रहारों से कालिय का गात्र भग हो जाता है। वे उसे एक हाथ मे उठा लेते हैं तथा दूसरे हाथ से उसकी दन्ताए तोड़ते हैं। वह अपने सहस्त्र फनों से रक्त वमन कर रहा है। मुंह से फेन गिर रहे हैं। श्वास नासा सपुट मे उलझ गया है। इस प्रकार कालिय विवश होकर गिर पडता है। भगवान श्रीकृष्ण तत्काल कूद कर उसके सिर पर चढ जाते हैं तथा नृत्य करने लगते हैं। नागपत्निया अपने पति की दुर्दशा देखकर भगवान श्रीकृष्ण से उसे छोड देने के लिए विनय करती हैं। भगवान श्रीकृष्ण उसे यथाशीघ्र छोड देने का वचन देते हैं। नागपत्निया भगवान की पूजा अर्चा करती हैं। भगवान श्रीकृष्ण कमल की नाल से कालिय के नकेल डालते हैं तथा उसकी पीठ पर सवार होकर उसे ब्रज की गलियों एवं नद के आगन मे घुमाते हैं। इस प्रकार कालिय का मानमर्दन करके तथा उसे दह से निकाल कर भगवान श्रीकृष्ण अपने दोनों हाथ जोडे हुए माता यशोदा जी की ओर आ रहे हैं।

भगवान श्रीकृष्ण यह समझ कर कि—कालिय नाग ने यमुना का जल दूषित कर दिया है, उसके शुद्धयर्थ यमुना मे कूद पड़े और अतुल बल वाले मत्तगजराज के समान कालिय दह का जल उछालने लगे। कालिय नाग को अपने निवासस्थान का इस प्रकार से तिरस्कार सहन न हुआ। वह चिढ़ कर भगवान श्रीकृष्ण के सम्मुख आया। भगवान श्रीकृष्ण को विषाक्त जल मे निर्भय और निडर हो कर क्रीडा करते देख कर वह और भी क्रोधित हो गया। उसने भगवान श्रीकृष्ण के मर्मस्थानों पर प्राघात करके अपने शरीर के बंधन से जकड लिया। भगवान श्रीकृष्ण नागपाश में आबद्ध होकर निश्चेष्ट हो गए। उनकी यह दशा देख कर उनके प्रिय सखा, गाय, बैल, बछिया सभी कातर स्वर से विलाप करने लगे। इधर व्रज में भी पृथ्वी, आकाश और शरीरों मे भयंकर उत्पात होने लगे। नंद बाबा आदि गोपों ने पहले तो इन अपशकुनो को देखा फिर यह जाना कि—आज श्रीकृष्ण बिना बलराम के गोएं चराने गये हैं तो वे बहुत व्याकुल हुए तथा अपने प्रिय को ढूंढते ढूंढते यमुना तट पर पहुंचे। उन्होंने दूर से ही भगवान श्रीकृष्ण को कालिय के बंधन मे बंधे हुए तथा कुण्ड के किनारे ग्वाल बालों को मूर्छितावस्था मे देखा। गौएं, बैल बछड़े आर्त्त स्वर से रंभा रहे थे। इस प्रकार का दृश्य देख कर वे गोप भी मूर्छित हो गए। माता यशोदाजी तथा नंद बाबा तो दह में कूदने तक को उद्यत हो गए, पर भगवान के पराक्रम को जानने वाले बलरामजी के प्रयत्नों से उनके जीवन की रक्षा हुई। मुहूर्त तक सर्प के बंधन मे रहने के उपरांत भगवान श्रीकृष्ण ने अपने शरीर की वृद्धि करना प्रारम्भ किया। परिणामस्वरूप सांप का शरीर टूटने लगा और उसने अपना पाश छोड दिया तथा भगवान के सम्मुख क्रोधित हो कर फुफकारने लगा। भगवान श्रीकृष्ण पैंतरे बदल बदल कर उसके प्रत्येक आक्रमण को विफल कर रहे थे। ऐसा करते करते कालिय का बल क्षीण हो गया तब भगवान श्रीकृष्ण उछलकर उसके सिर पर सवार हो गये तथा कलापूर्ण नृत्य करने लगे। भगवान श्रीकृष्ण के भक्त गंधर्व, देवता, चारण एवं देवांगनाएं बड़े प्रेम से वाद्य यंत्र बजाने लगे। कालिय नाग के सौ सिर थे। जिस सिर को वह नहीं झुकाता था उसे भगवान अपने पद तल प्रहार से कुचल देते। इस प्रकार कालिय की जीवनशक्ति शनैः शनैः क्षीण होने लगी। वह नथुनों तथा मुंह से खून उगल रहा था। कालिय, मन ही मन भगवान श्रीकृष्ण की शरण मे गया। अपने पति की दुर्दशा देखकर नागपत्नियां भी भगवान की शरण मे आई और स्तुति करने लगीं। भगवान ने दया करके उस

छिन्न भिन्न शरीर वाले कालिय को छोड दिया। शनै शनै कालिय में चेतना नक्ति का सचार हुआ। उसने बडी दीनता से भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति की। भगवान ने उसे गरुडों से अभय करते हुए तत्काल यमुना को छोड कर समुद्र में जाने का आदेश दिया। उनका आदेश प्राप्त करने के पश्चात–कालिय नाग एव उसकी पत्नियो ने दिव्य वस्त्र, पुष्प माला, मणि, आभूषण, दिव्य गध, चदन और उत्तम कमलों की माला से भगवान श्रीकृष्ण का पूजन अर्चन किया। तत्पश्चात सपरिवार भगवान को वदना परिक्रमा करके रमणक द्वीप की ओर प्रस्थान किया।

नागदमण कथा मे भूला सायाजी की मौलिकता

उपर्युक्त दोनों कथा सगठनों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर नागदमण का कथा सगठन अधिक विधानसम्मत एव मौलिक प्रतीत होता है। भागवत मे भगवान श्रीकृष्ण एक बालक होते हुए भी एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर के स्वरूप मे चित्रित हुए हैं। नागदमण मे उनके बालस्वरूप का निर्वाह कवि की विशेषता है। यमुना तट पर गोप बालकों की क दुक क्रीडा सायाजी की मौलिक उदभावना है और सगत भी। वर्तमान मे भी ग्वाले यह खेल खेलते देखे जाते हैं तथा गेंद को दुगम से दुगम स्थान पर से लाने का यत्न करते हैं।

भागवत के श्रीकृष्ण यमुना मे कूदते ही जल का विलोडन करके कालिय को क्रोधित होने का अवसर देते है। नागदमण का कालिय स्वभाव से ही क्रूर है वह बालक वृद्ध के भेद को नहीं समझता है खा जाता है। कालिय दरबार तथा नागपत्नियों के वार्तालाप स्वरूप मौलिक प्रसग जोड कर कवि ने कथा प्रवाह को अक्षुण्ण रखा है। भगवान श्रीकृष्ण के बाल सुलभ माधुर्य तथा वाणी के द्वारा उत्पन्न एक मनोमुग्धकारी दृश्य पर कवि स्वय मुग्ध है "सुण्यो रूप वेद सु देख्यो सवै ही वडा नागरी नागरो नारी वेहों" कह कर नागपत्नियों के भाग्य की सराहना करता है। भगवान श्रीकृष्ण का कालिय के साथ युद्ध करने का हठ भी बालसुलभ वृत्ति का परिचायक है। बालक कृष्ण निर्भीक हैं। गौ महत्ता का प्रसग नागदमणकार की अपनी कल्पना है। भगवान श्रीकृष्ण गौ आज्ञा कारी है। अत सरक्षित सम्पत्ति की रक्षा करना उनका धर्म है। नेति नेति प्रक्रिया से नागपत्नियो द्वारा सत्य एव शस्त्रास्त्र वर्णन कवि की वीर भावना का परिचायक है। कालिय के साथ भगवान श्रीकृष्ण का सघर्ष किसी भी वीर काव्य के सघर्ष वर्णन से कम नहीं है।

नागदमणकार कवि होने के साथ साथ भक्त भी हैं। उन्हे अपने इष्टदेव के प्रभाव पर रचमात्र भी आंच आना पसद नहीं है। भागवतकार को मुहूर्त भर नागपाश मे जकडे हुए निश्चेष्ट कृष्ण की चिंता नहीं है पर नागदमणकार

इस प्रसंग को अन्य ढंग से प्रस्तुत करते हैं। कालिय क्रुद्ध होकर आक्रमण करता है, प्रहार करता है, पर भगवान पर ये पुष्प पंखुड़ियों के प्रहार के समान असर करते हैं। दुष्ट सत्याराध हमेशा घबराते ही हैं।

भागवतकार कालिय के पराभव के पश्चात् उसे सीधे यमुना से ही समुद्र में चले जाने का आदेश भगवान श्रीकृष्ण से दिलवा रहे हैं। नागदमणकार इसे पर्याप्त नहीं समझते हैं। वे इसके उपरांत भी भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा कमलनाल से कालिय के नकेल डलवाते हैं। नकेल के द्वारा भयंकर से भयंकर बलशाली पशु स्ववश हो जाते हैं यह सत्य है। दुष्ट जानवरों के भी नकेल डाल कर घुमाना प्रसिद्ध है। स्ववश करके यत्र-तत्र घुमाना प्रतिद्वंदी की हीनता का भी द्योतक है।

भयंकर कालिय को परास्त करने के पश्चात भगवान श्रीकृष्ण विनय सहित अपने दोनों हाथ जोड़े हुए माता यशोदाजी के सम्मुख उपस्थित होते हैं। इस प्रकार नागदमण की कथा में भगवान श्रीकृष्ण के बालस्वरूप का आदि से अंत तक निर्वाह हुआ है। अनुक्रम से उत्थापन, मंगला, शृंगार, राजभोग आदि झांकियों का वर्णन कवि का वल्लभकुल सम्प्रदायानुयायी होना प्रमाणित करता है।

तृतीय अध्याय

नागदमण की भाषा और व्याकरण

भाषा

नागदमण की भाषा राजस्थान के अन्तर्गत सत्रहवीं शताब्दी की प्रचलित साहित्यिक भाषा—डिंगल है।[1] डिंगल शब्द की व्युत्पत्ति की तरह भाषा के सम्बन्ध मे (भी) विद्वानों मे अद्यावधि पर्याप्त भ्रम फैला हुआ है। अधिकांश विद्वान साधारणतया डिंगल को राजस्थानी का एक रूप मानते हैं। अतएव इस प्रसंग मे, राजस्थानी की वास्तविक स्थिति क्या है इस ओर भी संकेत कर देना अनुपयुक्त न होगा।

"राजस्थानी भाषा" शब्द "हिन्दी भाषा" के समान ही भ्रमात्मक है। जिस प्रकार वस्तुतः हिन्दी—अनेक विभाषाओं का एक सामूहिक नाम है, ठीक यही परिस्थिति राजस्थानी भाषा के साथ है, जो कि हिन्दी की एक विभाषा के रूप मे मान्य है।[2]

राजस्थानी—राजस्थान प्रान्त की भाषा है। राजस्थान केवल आधुनिक राजपूताना प्रान्त तक ही परिमित नहीं है, किन्तु मालवा और हिसार का भी बहुत-सा भाग राजस्थान के ही अन्तर्गत समझा जाना चाहिए। राजस्थानी इस समस्त भू-खंड की भाषा है[3] जिसमे मारवाड़ी (जिसके अन्तर्गत मेवाड़ी भी), ढूंढाड़ी (जिसके अन्तर्गत हाड़ोती भी), मालवी और बागड़ी उपभाषाएं (बोलियां) प्रमुख हैं।

राजस्थानी की समस्त बोलियों मे मारवाड़ी प्रमुख है। मुख्यतया लिखित रूप में वर्तमान साहित्य, जो कि एक प्रकार से इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि—मारवाड़ी राजस्थानी की प्रतिमित अथवा परिनिष्ठित (Standard) भाषा है। यह प्रतिमित मारवाड़ी ही वस्तुतः डिंगल है जिसे मरु भाषा राजपूतानी,

---

[1] श्री मेनारिया—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १७८

[2] डा० जगदीशप्रसाद—डिंगल साहित्य पृ० २६१

[3] श्री स्वामी—ढोला मारू रा दूहा पृ० १०७ [प्रस्तावना]

पश्चिमी राजस्थानी आदि नामों से अभिहित किया गया है।[1] इससे एक महत्वपूर्ण बात यह भी सिद्ध होती है कि—प्रारम्भ में डिंगल बोल चाल की भाषा थी। बाद में बोल चाल की भाषा और साहित्यिक भाषा में अंतर हो गया और डिंगल का प्रयोग साहित्य की भाषा के लिए होने लगा।[2] और डिंगल साहित्य राजपूताना के चारणों तथा भाटों द्वारा विशेष समृद्ध हो उठा।[3]

श्री मेनारिया जी ने नागदमण की चर्चा करते हुए इसकी भाषा पर किंचित गुजराती का प्रभाव स्वीकार किया है तथा कवि का काठियावाड़ी होना इसका कारण माना है,[4] परन्तु यह तो निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि—गुजरात तथा मारवाड़ अथवा पश्चिमी राजस्थान की भाषा सोलहवीं शताब्दी ईस्वी तक एक थी,[5] तब इसी अवधि के आसपास की रचना पर गुजराती के प्रभाव का प्रश्न ही नहीं उठता है। हां, प्रकाशित ग्रन्थ में भाषा के गुजरातीकरण की प्रवृत्ति लक्षित होती है,[6] यह दूसरी बात है।

शब्द-समूह

नागदमण की भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी चार प्रकार के शब्द उपलब्ध होते हैं जिन में तद्भव और देशज शब्दों का बाहुल्य है।

व्याकरण

किसी भाषा के ज्ञान अथवा दूसरे शब्दों में शुद्ध लिखने, पढ़ने और बोलने के लिए उसके व्याकरण की जानकारी नितान्त आवश्यक होती है।[7] अतएव डिंगल भाषा के व्याकरण को ध्यान में रखते हुए नागदमण का संक्षिप्त व्याकरण दिया जा रहा है।

---

[1](अ) डा० जगदीशप्रसाद—डिंगल साहित्य पृ० २६२

(आ) डिंगल ठपनाम कहुँक मरुवानी हु विशेष।
अपभ्रंश जामे अधिक, सदा वीर रस श्रेय॥
—महाकवि सूर्यमल—वंशभास्कर प्र मा पृ० १८७

[2]डा० माहेश्वरी—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० ६

[3]डा० चटर्जी—भारत की भाषाएँ और भाषा सम्बन्धी समस्याएँ पृ० ५१

[4]श्री मेनारिया—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १७६

[5]डा० चटर्जी—राजस्थानी भाषा पृ० ३६

[6]डा० माहेश्वरी—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १७८

[7]डा० जगदीशप्रसाद—डिंगल साहित्य पृ० २६२

ध्वनि समूह

१ स्वर—नागदमण मे प्रयुक्त अे, अ, ओ, औ के ह्रस्वरूपों को छोड कर बाकी स्वर हिन्दी के समान ही हैं। यथा—

अ —मध्य, अर्ध विवृत, ह्रस्व।
आ —अग्र, विवृत, दीर्घ।
आ —यह 'आ' का ह्रस्व रूप है। दमण मे प्रयुक्त इस ध्वनि का उच्चारण लगभग 'अ' के समान ही होता है—

१ माहो माह आंणद दास मुरवरी। छद ३२
२ आया ओद्रक सुरमा ऐणि आर। „ ४९
३ जाळे विरख नीला वहे विरख झाळा। „ ५३

इ —अग्र, संवृत, ह्रस्व।
ई —अग्र, संवृत, दीर्घ।
उ —पश्च, अर्ध-संवृत, ह्रस्व।
ऊ —पश्च, अर्ध संवृत, दीर्घ।

कहीं-कहीं छंद की सुविधानुसार इसका भी ह्रस्व उच्चारण पाया जाता है—

१ दूजे नजर घेन मोल्लस दूणी। छद ७१
२ ऊभी मुरळी आप सीधं अधुर। „ ९४

ए —अग्र, अर्ध विवृत, दीर्घ।
अे —अग्र, अर्ध संवृत, ह्रस्व।
इस ध्वनि के लिए कोई स्वतन्त्र लिपि चिह्न नहीं है। दमण मे प्रयुक्त इस ध्वनि का उच्चारण लगभग 'इ' के समान होता है—

१ देवो आपरी लाज लीधो दहूलो। छद ३३
२ खेलीजे रमीज पिता मातु खोळा। , ३९
३ घेर्‌यो नद रो घोट अहिकोट अेहो। „ ९९

ऐ —अग्र-मध्य, अर्ध विवृत, दीर्घ।
अ —यह ध्वनि 'अ' का ह्रस्व रूप है। इसका उच्चारण लगभग अ+इ की तरह पाया जाता है।

१ अरे कूण लाज पखो आव ओरी। छद ८१
२ पैसारा उसारा लरा पाइकारा। „ १०२

ओ —पश्च, अध-सवत, दीर्घ।
ओ —पश्च, अध सवत ह्रस्व।

इस ध्वनि के लिए भी स्वतन्त्र लिपि चिह्न नहीं है। दमण मे प्रयुक्त इस ध्वनि का उच्चारण लगभग ह्रस्व 'उ' की तरह होता है—

१ बोलाव मळ नाथ नांखी मुरख्नी।
२ मोरे नद बावो जसोमती माई। छद ३५
३ जोवो नदर प्रेह खजवट्ट जागी। „ ५८
४ गोपीनाथ रा हाय आया गद्गद्। „ ७५
„ १००

ओ —पश्च मध्य, अध सवत, दीर्घ। इत्यादि
औ —यह 'ओ' का ह्रस्व रूप है। इस ध्वनि के लिए भी स्वतन्त्र लिपि चिह्न नहीं है। दमण मे प्रयुक्त इस ध्वनि का लगभग 'अ+उ' उच्चारण होता है—

१ आया औद्रकै सूरमा ऐणि आर।
२ नौळी धाटसे सामठी हाट नांखी। छद ४९
अं —अनुस्वार। „ ९९

२ व्यजन—नागदमण मे प्रयुक्त व्यजन ळ, ड, ब, ड़, न, य को छोड कर शेष हिन्दी की तरह ही होते हैं। यथा—

स्पर्श (स्पृष्ट प्रयत्न)
क—कण्ठ्य, अल्पप्राण अघोष
ख—कण्ठ्य, महाप्राण, अघोष
ग—कण्ठ्य, अल्पप्राण, सघोष
घ—कण्ठ्य, महाप्राण सघोष
ङ—कण्ठ्य, अल्पप्राण, सघोष, सानुनासिक
च—वर्त्स्य, अल्पप्राण, अघोष
छ—वर्त्स्य, महाप्राण, अघोष
ज—वर्त्स्य, अल्पप्राण, सघोष
झ—वर्त्स्य, महाप्राण, सघोष
ञ—वर्त्स्य, अल्पप्राण, सघोष सानुनासिक
ट—मूर्धन्य, अल्पप्राण, अघोष
ठ—मूर्धन्य, महाप्राण, अघोष

ड—मूर्धन्य, अल्पप्राण, सघोष
ढ—मूर्धन्य, महाप्राण, सघोष
ण—मूर्धन्य, अल्पप्राण, सघोष, सानुनासिक
त—दन्त्य, अल्पप्राण, अघोष
थ—दन्त्य महाप्राण, अघोष
द—दन्त्य, अल्पप्राण, सघोष
ध—दन्त्य, महाप्राण, सघोष
न—दन्त्य, अल्पप्राण, सघोष सानुनासिक
प—ओष्ठ्य, अल्पप्राण, अघोष
फ—ओष्ठ्य, महाप्राण, अघोष
ब—ओष्ठ्य, अल्पप्राण, सघोष
भ—ओष्ठ्य, महाप्राण, सघोष
म—ओष्ठ्य, अल्पप्राण, सघोष

अन्तस्थ

य—वर्त्स्य, अल्पप्राण, ईषद्विवृत
र—मूर्धन्य, अल्पप्राण, ईषद्विवृत घर्षित
ल—दन्त्य, अल्पप्राण, ईषद्विवृत, पार्श्विक
व—दन्तोष्ठ्य, अल्पप्राण, ईषद्विवृत

ऊष्म

स—दन्त्य, तालव्य, महाप्राण, अघोष
ह—कण्ठ्य, महाप्राण, सघोष

अन्य

ड़—मूर्धन्य, अल्पप्राण, सघोष, उत्क्षिप्त
ढ़—दन्त्य, महाप्राण, सघोष, उत्क्षिप्त
ब—राजस्थानी ब। इसका उच्चारण संस्कृत के 'ब' से भिन्न होता है।
ळ—मूर्धन्य सघोष, [उत्क्षिप्त]

कारक

नागदमण की भाषा में—संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया सूचक शब्दों का प्रयोग हिन्दी भाषा के समान ही दो लिंग तथा दो वचन मे हुआ है। नपुंसकलिंग के रूप भी उपलब्ध हैं परन्तु नपुंसकलिंग एवं पुल्लिंग मे विशेष अन्तर नहीं है। कारकों के लिए विभक्ति प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है तथा कहीं कहीं

विभक्ति प्रत्ययविहीन शब्दों के मूल तथा विकारी रूपों से काम चलाया गया है। यथा—

कारक	प्रत्यय	उदाहरण		
कर्त्ता	×	पहस जसोदा जिम चक्रपाणी।	छंद	२
	×	जुथ धन घधीक कांठ जमना।	,,	१४
	आ	भगव्वानन धेन गोप्या भळाव।	,,	५
	—	कपूरी ग्रहे पान बीडा ग्रसन।	,,	७
कर्म	×	जावो नागणी नाग बगो जगाडो।	,	६७
	×	किया सारता लोक बेहू किनारी।	,	९
	नू	काळीनागनू आणियो कान्ह कूक।	,	१०९
	,,	जसोदा तोई राजनू पुत्र जाण।	,,	११५
	न	भगवानन धेन गोप्यां भळाव।	,,	५
	,,	अहिरावन जाव कोई न सूझ्यो।	,,	११९
करण	×	गळ मध्य ओपा खुरी-खेह ग्रेवा।	,,	६१
	अ	घड़ गेडिय वेद भवान घेरी।	,,	१०
	,,	न बीठो करीम नेत्र निहाळी।	,,	३८
	,,	कान ही नयो सांभळयो नागकाळी।	,,	३८
	सू	नवा नेहसू त गोपी निहाळ।	,,	४
	,,	हुई नवरी धेनसू धेन हेला।	,	६
	हू	काळीनागहू आज ही कत कांप।	,,	५२
	—	जव जागसी नाग राखा जतन।	,,	३०
सम्प्रदान	×	इसा बाळ वेग्यो कथा मूझ आव।	,	३५
	नू	काळीनागनू जागवू तेथ कोध।	,	६७
	—	कथा दत्त दीअ विप्र वेद बोल।	,	६२
अपादान	[illegible]	हिम उतरी आस गोवाळ हाथ।	,,	१४
	,,	गयो जाणि चिंतामणि रक गांठ।	,,	१८
	हुत	मठाहुत आया अठ काम केहा।	,,	३१
	सू	इसो छोडी ते मातसू बात आखो।	,,	६८
	,,	अहिनारिसू नारी माल अनेरी।	,,	६६
सम्बन्ध	×	सत्री कहका कस रयस सासो।	,,	७४
	,,	रही सामडो देव दाणव्व राणी।	,	७२
	चो	धव नागणी चक्रिका मारचो ही।	,,	२८
	,,	दही दूध रावाचो मा सुखदाई।	,,	६१

	चो	उतारवा ए भोमचो भार आयो ।	छद ९१
	च	भलो हक बलभद्रच नाम भाई ।	,, ५८
	रा	काळीनागरा कान समाळ केवा ।	,, १३
	र	पहूच प्रभुरै लटक प्रहूची ।	, २४
	रो	अमा नागणीपत्यरो जूझ आछ ।	,, ५१
	री	घर बसर तानरी टाट घुट्टी ।	,, ७४
	तणा	महामद्र जाति तणा कान मोती ।	,, २२
	तणी	हुई हूह मरत्ता तणी हेल हाथ ।	,, १२
	तण	जमुना तणं माखियो नीर जाड ।	,, १२
	तणो	तणो केसरी कसतुरी तिलक्क ।	,, २७
	,,	अयनो तणो भारि ले कथ आयो ।	,, ६५
	हू	दोहू भ्रकुटो कोरहू देखि हूहै ।	,, २७
	ओ	पडीछा नहींछो प्रिया राज पायो ।	,, ११६
अधिकरण ×		इमो आज ते कोण भूलोक आछ ।	,, ५२
	,,	मडाया मथुरा धरा वास मोरा ।	,, ५८
	अ	सुण्यो रूप वेदै मु पेख्यो सवेही ।	,, ३२
	,,	पहूच प्रभुर ल्टक्क प्रहूची ।	,, २४
	अ	हिंडोळ घलाइं वर हूलरायो ।	, २९
	माहे	पियूस हुवावहि माहपरेवा ।	,, ६५
		मणि नग हीरातणी ज्योत माहे ।	,, २४
	मा	जणणीतणी जूण मा ए न आयो ।	,, ९१
सबोधन	×	प्रभू आपरा जाणि भ्रचत पायो ।	,, ९७
	,,	कहे कीजिय काहू मीरू विभाग ।	,, ९

सामान्य टिप्पणिया

१ स्वर से आरम्भ होने वाले प्रत्यय का प्रयोग करने पर पूव शब्द के अतिम स्वर का प्राय लोप कर दिया गया है ।

२ तणी, माहे आदि प्रत्ययों का प्रयोग शब्द से पूव भी हुआ है ।

३ सम्बन्ध कारक के प्रत्ययो मे परस्थ शब्द के लिए लिंग वचन के अनुसार लिंग वचन का परिवतन हुआ है ।

४ करण व सम्बन्ध कारक का 'आ' प्रत्यय केवल बहुवचन वाची शब्द के आगे प्रयुक्त हुआ है ।

५ बहुवचन मे अकारात शब्द के प्रत्यय लगने के पूव अतिम 'अ'

विभक्ति प्रत्ययविहीन शब्दों के मूल तथा विकारी रूपों से काम चलाया गया है। यथा—

कारक	प्रत्यय	उदाहरण		
कर्त्ता	×	पन्नस जसादा जिम चक्रपाणी।	छद	२
	×	जुव येन घधीक कांठ जमन्ना।	,,	१४
	आं	भगवानन धेन गोप्या मळाव।	,,	५
	—	कपूरी पहे पान बाढा असन।	,,	२
कर्म	×	जाया नागणी नाग वगो जगाय।	,,	३७
	×	किया सारखा लोक बैहू विनारी।	,,	९
	नू	काळीनागनू आणियो कान्ह कूड।	,,	१०१
	,,	जसोदा तोई राजनू पुत्र जाणं।	,,	११५
	नं	भगवाननं धन गोप्यां मळाव।	,,	५
	,,	अहिरावने डाव कोई न सूझ्यो।	,,	१९९
करण	×	गळ अम्य ओधां तुरी-खेह पेवा।	,,	६१
	अ	पड़ गेंडिय वेद महान घेरी।	,,	१०
	,,	न बोठी करीव नत्र निहाळी।	,,	१८
	,,	कानैं ही मथो सामळ मौ नागवाळी।	,,	१८
	सू	मबा नेहसू ते गोपी निहाळ।	,,	४
	,,	हुई नवरी धेनसू धेन हेला।	,,	६
	हू	काळीनागहू आज ही कस काप।	,,	५२
	—	जर जागलो नाग रातो जतन।	,,	३०
सम्प्रदान	×	इसो याळ वेरो दया मूझ आव।	,,	३५
	नू	काळीनागनू आगवू तेण कोप।	,,	६७
	—	वधा देस बोज विप्र वेद बोल।	,,	६२
अपादान	अ	हिव ऊतरी बात गोवाळ हाय।	,,	१४
	,,	गयो जाणि चितामणि रक गांठ।	,,	१८
	हूत	वटाहुत आयो मठ काम केहा।	,,	३३
	सू	इसो छोडो से मानसू बात आखी।	,,	६८
	,,	अहिनारिसू नारी माल अनेरी।	,,	१६
सम्बन्ध	×	तत्रो वहका वस रंयत खासो।	,,	७४
	,,	रहो मांमडी देव दाणव्य राणी।	,,	७२
	चौ	धव नागणो चक्रिका मारचो हो।	,,	२८
	,,	कहो दुध रावाचो आ सुन्दराई।	,,	६३

	पो	उतारेया ए भोगरो नार आयो।	छद	९१
	प	मलो हुए बलभद्रच नाम माई।	,,	५८
	रा	वाळोनागरा वान समाड क्या।	,,	११
	र	पहूच प्रभुर सदष प्रहूषो।	,	२४
	रो	अमा नागणीपत्यरो जूत आछ।	,,	५१
	री	घर कसर तानरो टाट पुट्टी।	,,	७४
	तणा	महानद्र आति तणा कान मोतो।	,,	२२
	तणो	हुई दूर महत्ता तणी हल हाथ।	,,	१२
	तण	जमुना तण मांग्यिो म र आड।	,,	१२
	तणो	तणा कसरो कसतूरी तिलवर।	,,	२७
	,,	अयसो तणा मारि से वध आयो।	,,	६५
	हू	दोह भनुगो वारह देसि हूई।	,,	२७
	ओ	पखोडा महोंडो प्रिया राज पाया।	,,	११६
अधिकरण	×	इमो आन ते कोण भूलोक आछ।	,,	५२
	,,	मडाया मथुरा घरा यास मोरा।	,,	५८
	अ	सुण्यो रूप वेदे सु पेरयो सवेरी।	,,	३२
	,,	पहूच प्रभुर स्दषक प्रहूषा।	,,	२४
	अं	हिंडोळ घलाड घर हुलरायो।	,,	२९
	माहि	पियूस कुनावहि माहैपरेवा।	,,	६५
		मणि नग हीरांतणो ज्योत माहै।	,,	२४
	मां	जणणीतणी जूण मा ए न आयो।	,,	९१
सबोधन	×	प्रभू यावरा जाणि प्रघन पायो।	,,	९७
	,,	कहै कोजिय थान्ह मोह विमाग।	,,	९

सामान्य टिप्पणियां

१ स्वर से आरम्भ होने वाले प्रत्यय का प्रयोग करने पर पूर्व शब्द के अंतिम स्वर का प्राय लोप कर दिया गया है।

२ तणो, माहे आदि प्रत्ययों का प्रयोग शब्द से पूर्व भी हुआ है।

३ सम्बन्ध कारक के प्रत्ययों मे परस्थ शब्द के लिए लिंग वचन के अनुसार लिंग वचन का परिवर्तन हुआ है।

४ करण व सम्बन्ध कारक का 'आं' प्रत्यय केवल बहुवचन वाची शब्द के आगे प्रयुक्त हुआ है।

५ बहुवचन मे अकारांत शब्द के प्रत्यय लगने के पूर्व अंतिम 'अ'

का प्रायः 'आ' हो गया है।

६ ओकारांत शब्द बहुवचन में अकारांत हो गये हैं।

७ हिन्दी के आकारांत शब्द [राजा, गज को छोड़ कर] राजस्थानी में आकारांत हो गए हैं।

८ ईकारांत व ऊकारांत शब्द के आगे बहुवचन में 'आं' या 'यां' जोड़ कर अंतिम स्वर को ह्रस्व कर दिया गया है।

९ इकारांत व उकारांत शब्दों के बहुवचन बनाते समय उनके आगे 'आं' या 'यां' जोड़ दिया गया है।

१० हिन्दी और संस्कृत शब्दों के मध्य आने वाले रेफ को स्थानांतरित करके शब्दों को विकृत कर दिया गया है। यथा—धर्म = ध्रम, कर्म = क्रम इत्यादि।

११ जिन शब्दों में रेफ नहीं होता है उनमे रेफ का आगम कर लिया गया है।

सर्वनाम

नागदमण मे सर्वनामों का भिन्न भिन्न रूपों में प्रयोग हुआ है। उनका विवरण इस प्रकार है —

अमा (हमारा रे)	अमा वद तोडा सधी पार आप।	छंद	७६
	अमा नागणी परथरो सूक्ष माछ।	,,	५१
	अम्हा सामुन्हे हे तातो सिरुम आवे।	,,	८०
	समा देव मोटा अमा मत्त थोडी।	,,	११२
अमारा रो (हमारा)	अमारा नगता तणा एह नीरा।	,,	५८
	अम्हारो धणी स्याम सूठो अमारो।	,,	५४
अमासू (हमारे से)	वाचा मांज ते माफ कीज अमासू।	,,	११३
अम (हमारे)	अम हाथ मे नागणी जाय एती।	,,	६६
आ (यह उभयलिंगी है)	वही दूधघी आ गुळदाई।	,,	६१
	धडोए थिऊ भीमक आ जधावो।	,,	७८
आप (स्वयं)	ठगेया गयी आप आप ठगाय्यो।	,,	९२
	जिथो आपसू आप आठोळ काहे।	,,	१०१
	सवार धणा आप आप अरज्ज।	,,	११८
	प्रभू आपरा आणि अम्रत पायो।	,,	९७
	हवो आपरी लाज लोधो दकूलो।	,,	३३
	किसू आपरो मोल आप कराव।	,,	८०
	सुणो नागणी आपणी हद्द माहों।	,,	८६

	असटआर हुवौ आपँ अप्पलाणी ।	छंद ११८
इसा (ऐसे)	रढीज इसा मात आग रढाळा।	,, २७
इसो (ऐसा)	इसो वाल देखी दया भू ▪ आवै ।	,, ३५
	इसो छोड स मातमू बात आडो।	,, ६८
उवै (उसने)	अघोराज मारा उवैं कीध आरा।	,, १०३
ए (यह)	जणणी तणी जूनर्मा ए न आयो ।	,, ९१
	उतारेवा ए मोमचो भार आयो।	,, ९१
अेण (इस प्रकार की)	जाम्यो अेण जुगत्ति ।	,, ४
अेनैं (इसको)	सखो वाळ अेनैं त्रिभुवन्न सूस ।	,, ८८
अेह (यह)	रला सू नहीं एह कूदत लूणी।	,, ७१
	लम एह मूक्या पछ छांट लाग ।	,, ७३
	अहीराव न डाबडो एह आडो।	,, ८४
	विढ त्रिजरो एह उच्छाह वाळी।	,, १२१
अेहरी (इसकी)	मट एहरी गम्म एहां अवेसा ।	,, ८७
अैंरी (इसकी)	अैंरी जोवान देखी घखन हेरी ।	,, ८६
अै (ये)	घणीज नही बोल अ काळ वाळा।	,, ३०
अैरै (इसके)	अैरै कूण लाज पखी आव ओरी।	,, ८१
अैसी (ऐसी)	अैमो मागणो कूण जे कूख आयो ।	,, २९
ओ (यह)	पढ लातरी थेन ओ तीर तीर पीध ।	,, ६७
	त्रिलोरी न त्रासइ योहा ओ न सूस ।	,, ८७
	गितो डावडो ओ वळो देस आण्यो ।	,, ९२
	मारया हो सप घाव सू ओ न मान।	,, १०८
काही (कोई)	कही सू धडो वपडो तीर काहो ।	,, ६६
किसै (कौन से)	सड सो किसै मूळ पूछा लडाई।	,, ५०
किही (किसी ने)	किही कोर चपी ग्ही मा यकाव ।	,, ३५
कूण (कौन)	असी मागणो कूण जे कूख आयो ।	,, २९
	चढ कूण काळो तणो सीम चाप ।	,, ५२
	थळ दूसरो ताहर कूण वीरो ।	,, ५७
	अर कूण राज पखो आव ओरी।	,, ८१
केण (कौन से)	सूतो साप उपाडीज केण कोड ।	,, ६८
कोण (कौन)	इसो याज ते कौण भूलोक आछ ।	,, ५२
जिकै (जो)	जिभाव जिकै भावता भोग जाणो ।	,, २
जिरी (जिसकी)	जिरी पृक आग मर हूक फाला।	,, ५३

जे (जिसकी)	अतो मागणी कूण जे भूरत आयो ।	छंद २९
जेहो (जैसा)	जसोदा ढळो वदळो मम जेहो ।	,, १५
जेहो (जैसों को)	सांमो सेस महेस जेहो न सूझ ।	, ११६
तमा (तुम-आप)	तमा देय मोटा अमां मत्त थोडो ।	,, ११२
	तुशारा रेशारा जिशारा तमासू ।	,, ११३
ता (वह)	वई वांसळी सिग्गळी नादवा ता ।	, ७८
ताहरी (तुम्हारी)	तव ताहरी वेष सश्रवट्ट झूटो ।	,, ६४
तिवै (वे)	न सम तिवै नागणी बोल बूडो ।	,, ६४
तिसो (वसा)	तिसो नागणी गव्वुरोचन टीको ।	, १२
तुना (तुम्हें)	भज नाम तोई तुना पुत्र भावै ।	,, १५६
	तुनै देलावू आज वगा तमासा ।	,, ५
तू (तू)	जुडैया जु तू माग काळो जगाव ।	,, ४०
	पछा पोवरा नागणी तू पिछाण ।	,, ६९
	लला तू नहीं एह पूवत लूणी ।	,, ७१
	अहिनारी तू एह नेठाह आण ।	,, ७२
	कहू नागणी सुण तू रोप कान ।	,, ७६
	मजाण वाळ तू वकूचाळ मायो ।	,, ९२
तूझ (तुम्हारे)	वटवरो अटका नहीं तूझ केडे ।	,, ४१
	दियो वास दूरतर तिको तूझ वाड ।	,, १२०
तूही (तूही)	खरो हेक तूही दिया सब खोटा ।	,, ११३
ते (वह)	रम्यो स्याम ते ठाम जोवत रामा ।	,, १९
	जुवो नागणी ते हुतो गम्यु जायो ।	,, ६५
	ते ववण सुणण अहिराव तणा ।	,, १२२
	आया आज ते माफ कीज अमासू ।	,, ११३
तेण (उस)	काळीनागनू जागवू तेण कीध ।	,, ६७
तेह (उसे)	भया नेहसू तेह गोपी निहाळ ।	,, ४
तोनू (तुम्हें)	पले ततता आज तोनू पसाय ।	, ८२
तोन (तुम्हें आपको)	जड रूप तोन भणावत जेहा ।	,, ११४
तोसू (तुम्हारे से आपसे)	हिव जोडि तोसू वातां वाद हारो ।	,, ८१
थारा (तुम्हारा आपके)	खम आज थारा भुज सेप भारा ।	,, १०५
थारी (तुम्हारी-आपकी)	जुन वस थारी परस्से सनेहो ।	,, ४०
थार (तुम्हारे)	काळीनू न नापू तो थार कमावू ।	,, ७७
	दिस मोरळो हेकु थार दुभुज्जा ।	,, ४९

	पत छोहवी सोह् रिछया न थारैं ।	छंद	४९
	वधारया न थारैं अज बाळ बाळा ।	,,	३९
थारो (तुम्हारा)	नहीं नागणी नाग थारो निवार ।	,,	७७
	प्रिया तातन गोत्र थारो पिछाण्या ।	,,	६७
मूहै (मुझे)	लटक्क मुहै नागणी बोल खारो ।	,,	३४
मूझ (मेरा)	प्रभू जागसी मूझ पाछा पधारो ।	,,	३४
मूझ (मुझे)	इसो बाळ देखी दया मूझ आव ।	,,	३५
मूझ (मेरे)	मण्या नागपत्नी जिता मूझ मोर ।	,,	५७
	मोरे कस मामो रहे मूझ मूळ ।	,,	५९
	वह आज ते नागणी मूझ थारो ।	,,	६१
	वृथा वैंण जाण रख मूझ याळा ।	,,	७२
मो (मेरे)	जप मो दिसो जेम काळी अगाडो ।	,,	६८
मोरा (मेरा)	मडाया मयुरा धरा वास मोरा ।	,,	५८
मोर (मेरे)	मोर नद बाबो जसुमति माई ।	,,	५९
	मोरे कस मामो रहै मूझ मूळ ।	,,	५९
	मोर देख आहीर व गाम मांह ।	,,	७३
मोरी (मेरा)	मोरो घाट वराट एय न मावू ।	,,	३१
	मोरो एह फकालियो द्रोहमाणो ।	,,	५५
	मोरो जागसी स्याम याय मयूरैं ।	,,	९४
राज (आपके)	पडोछा नहीं छी प्रिया राज पायो ।	,,	११६
राजनू (आपको)	जसोदा सोई राजनू पुत्र जाण ।	,,	११५
रावळो (आपका)	बळो रावळो वणिओ देखि वाई ।	,,	९३
वा (उसने)	रढ़ वाद काढ कियो वा न रीसा ।	,,	१०७
वो (वह)	बळ वो सादर यरणवू ।	,,	१
वेही (वे)	वडा मागरी नागरी नारी वेही ।	,,	३२
सोई (वे)	प्रभू अग लागो सोही फूल पाखो ।	,,	९९
हू (मैं)	इता दोहयो हू हुतो उप्पवासी ।	,,	६०

विशेषण

नागदमण मे विशेषणों का प्रयोग हिंदी की तरह ही हुआ है तथा उनके लिंग और वचन विशेष्यानुवर्ती होते हैं। गुणवाचक विशेषणों मे कुछ डिंगल भाषा के मौलिक विशेषणों का प्रयोग भी हुआ है। सख्यावाचक विशेषणों मे यौगिक सख्याओं के द्वारा बने प्रयोग विशिष्ट कहे जा सकते हैं।

गुनवापर

अहोनो	अहोना न छोड़ निराधार नवी ।	पद	१६
अउणा	अउणा करो बोल नेणा अणाण ।	,,	८२
अमुठो	अम्ठो अमुठो मर्ने काज आवो ।	,,	०१
अम्ठा	अम्ठो अमुठो मर्ने काज आवो ।	,	११
आयना	भतारा नहीं आयना मुन मना ।		४१
आवन	हुमो टावरो आवन आज आवो ।		५४
आनरा	मओ आनरा मालिनो नग मावो ।		११
आ ही	ओव घोर वारम मदृ आहि ।		१८
ऊ प	गुरस्यो तमो मागनो ऊ प लेवा ।	,	११
ऊभी	अमिरारो जग लई मोल ऊभी ।		२४
ऊणो	विजोग नमोण वन ऊणो बमायो ।		०७
ओछो	मथनीर तारा निरा मन माही ।		१५
पाउनाना	पवोजे नहीं बोल अ रानवाउना ।	,	१७
पाउो	काठो मालियो ऊपर मालवाडी ।	,,	१११
गारा	काहारा परारा साम हाथ गारा ।	,	१०१
गारो	सटक्क गुण मागणो बोल गारो ।	,,	१४
पगर राउ	गमाण वाउ तू पगर राउ मायो ।	,,	१२
मूठा	मरठो घणो स्योव मूठो ममारो ।	,,	५४
ध्वरी	फिर दथरी सव माही परसो ।	,,	४५
दताळा	ढाळा पटाळा दनाळा न हाथो ।	,,	४२
दुसल्ला	दुरगा दुवाहा दुहल्ला दुसल्ला ।	,	४१
दुवाहा	दुरगा दुवाहा दुहल्ला दुसल्ला ।	,,	४१
दुरगा	दुरगा दुवाहा दुहल्ला दुसल्ला ।	,,	४१
दुहल्ला	दुरगा दुवाहा दुहल्ला दुसल्ला ।	,,	४१
धीठ	ममो धीठ घोटा पथ मागनारो ।	,	८१
नवा	नवा नेह सु तेह गोपी निहाळ ।	,	४
	नवा नेह वीरस्य परम मन्न ।	,	६२
नवो	विहाणु नवो नाथ नामो वरेमा ।	,	१
नव	नव विहाण मत्ति ।	,	४
नामजद्दा	जुदेवा न को उम्मरा नामजद्दा ।	,	४२
नीवो	मरा तेह लाग रह देह नीवो ।	,,	६२
नीला	माळ विरल नीला वह विरल माळा	,,	५१

पटाळा	हठाळा पटाळा दताळा न हायी ।	छंद ४२
पाघोर	बोल वादतो मोर पाघोर बोलें ।	,, ७८
भल्ला	मडांरा नहीं आवसा भूल भल्ला ।	,, ४१
भली	भली नागणी नावियो राह भूली ।	,, ३३
भल	अण्टो अतूठो भल काज आयो ।	,, ९३
भलो	भलो हक बलभद्र च नाम भाई ।	,, ५८
भुजाळा	सचाळा भुजाळा लकाळा न सायी ।	,, ४२
भोळा	भरोज नहो आमतू बाथ भोळा ।	,, ३९
वडा	दत वडा वा दत	,, २
वडा	वडा नागरी नागरी नारि वे ही ।	,, ३२
	वडा शृ ग सीतग हेमग वाळा ।	,, ५३
	वडा गोपरो पुत्र आयौ विहाण्णां ।	, ६७
	वडा मोच भूपाळ वेराण वाळा ।	, ८४
	वडा जोपसी सुद्ध बाह बडाई ।	, ९६
वाकी	पयाण न वाण न पम्माण वाकी ।	,, ४५
मयारा	थमेरी न हुवा रहस्य मयारा ।	,, २०
मयूर	मोरो जाणसी स्याम बाथ मयूर ।	, ९३
रगराती	रमैं सग गोवाळिया रगरानी ।	, ११
रगी विरगी	थयी वोळमा रग रगीविरगी ।	,, २८
रूडी	वईकुठ रै नाथ रूडी विचारी ।	, ९
लकाळा	सचाळा भुजाळा लकाळा न सायी ।	, ४२
सचाळा	सचाळा भुजाळा लकाळा न सायी ।	,, ४२
सयाणी	सवाहे सखी त्यार हाली सयाणी	, १६
सीतग	वडा शृ ग सीतग हेमग वाळा ।	,, ५३
सुचगी	सुहै उपरा पाग साणी सुचगी ।	,, २८
हठाळा	हठाळा पटाळा दताळा न हायी ।	,, ४२
परिमाणवाचक		
ऊंड	उम जू ग जेथी फिर नीर ऊंडै ।	,, १०१
घणा	प्रभू घणा चा पाडिया ।	,, २
	घणा दीह रो मू कियो नेम घात ।	,, ६०
घणी	घणी घूमर डवर घेर घेरो ।	, १०
	घणी भोम चाली चढी वात घोड ।	,, १५
	महम्मा घणी प्राणण घेन माहो ।	,, ६६
घणू	चढाव घणू साकड तीर चाढें ।	,, १२

घणै	घणै उच्छव ब्याहिय प्रेट् प्रेवा ।	छंद ६५
घणो	अरठो घणो साम झूठो अमारो ।	" ५४
	घणो पातियो सांवड स्याम घेरो ।	" १८
जाडै	जमुनां तण नांतियो नीर जाडै ।	" १२
थड	थड थेहड हुह माती न पट्टा ।	" ४८
सवी	मिल थोट सांमी सवी होट माय ।	" १२
सवै	सव ग्रामला सामला प्रत्यसट्टा ।	" ८
	रमवा सवै साय स्रु हेक राग ।	" ९
सामठ्ठी	थाग नागणो भेट सामठ्ठी आण ।	, ११७
सारै	हाहाकार हक्कार ससार सारै ।	" १५
ससेप	प्रगाचार नारद ससेप गाई ।	" १६
सख्यावाचक हेक		
	रमवा सव साय स्रु हेक राग ।	" ९
	झिल आवता ऊलट हेक भेर ।	" ११
	खड खापड हेक हेका खघोळा ।	" १७
	ऊभो घूट हेको घरो जात आरा ।	" २०
	मिळो नागणी हेक हेकां मिलाव ।	" २१
	दिस मोरली हेक पार दुभुजा ।	" ४९
	मुह जोड होसी घडी हेक मांहे ।	" ५६
	भलो हेक बलभद्र च नाम भाई ।	" ५८
	जणणी किणी हेक तु ही न जायो ।	" ८३
	सरो हेक तू ही बिया सव तोटा ।	" ११३
इकी वेवटी	इकी वेवटी चोवट आय ऊभो ।	" ६
एकणी	पुणू एकणी वार इक्कीस पाळां ।	" ७२
एको	मही सेन सनाथि एको सजाई ।	" ५७
उभै	पचास उभै लट्ट दो पट्टराणी ।	, ९०
	इग्यासी उभ सौ दस वाधि आठ ।	" ११
दु	उभ जग जेयो फिर नीर ऊडै ।	" १०१
दुहु	दिस मोरली हेक पार दु भुजा ।	" ४९
दूजी	दुहु भुज घर काळो वमण ।	" १२२
दूसरी	नारा गांठियो सूट दूजी न सायो ।	" ८३
दो	वळ दूसरी ताहर कुण वीरो ।	" ५०
दोहूं	पचासा उभ लट्ट दो पट्टराणी ।	९०
	परसपार पिडार या दोहु पास ।	, १०

विऊ	घडीए विऊ नोमड मा जयायो।	छंद	७८
विहू	विहू लोवन नोर धारा वहती।	,,	१८
वि‍हैं	चव मात, भ्राता वि‍हैं धेन चारो।	,,	६१
विया	सरो हेय तू ही विया सब खोटा।	,,	११३
वेहू	प्रिया सारवा लोक वेहू किनारो।	,,	९
	वठ मांडसां आज वेहू अवाडो।	,,	३७
त्रि	सभी थाळ ऐन त्रिभुवन सूप।	,,	८८
त्रिहू	पग त्रिहू पोटी मानो सोळ मोरो।	,,	८१
त्रीन	कर त्रीन खडो नमतेय काहा।	,,	१४
त्रीजैं	सर आवियो आगसो आम त्रीजैं।	,,	६९
पचा	पचा प्रम्रत दव दच्छ पताळा।	,,	६३
खट	पचासां उभ खट्ट दो पट्ट राणी।	,,	९०
आठ	इत्यासी उभ सो दस याधि आठ।	,,	९१
नौ	हुय नदर धन नौ ल्रप्न बूणी।	,,	७१
दसैं	इळ्यासी उभ सो दसैं याधि आठ।	,,	९१
सोळ	जळावोळ मांहैं वळा सोळ जहो।	,,	९९
	सहस्सा लिखी सोळ अर समाणी।	,,	९०
वीसा	यदम्र वहै भोम पचास वीसा।	,,	१०७
इक्कोस	पुणू एकणी वार इक्कोस पाळा।	,,	७२
	ब्रह्मांड इक्कीसा देखावी विहाण।	,,	११५
पचासा	पचासा उभ खट्ट दो पट्टराणी।	,,	९४
पचास	यदम्र वहै भोम पचास वीसा।	,,	१०७
साठ	सखी देख बेटा लिख्या लख्ख साठ।	,,	९१
इळ्यासी	इळ्यासी उभ सो दस याधि आठ।	,,	९१
सो	इळ्यासी उभ सो दसैं याधि आठ।	,,	९१
सहस्सा	सहस्सा लिखी सोळ अर समाणी।	,,	९०
सहस्सैं	यदम सहस्सैं वध व्योम व्याळा।	,,	५३
हजारा	हजारा भुजा जागसी नाग हेजा।	,,	३६
हजार	हिव एक ही गांठ पेट हजारैं।	,,	७०
लख्ख	सखी देख बेटा लिख्या लख्ख साठ।	,,	९१
कोड	वणी वात साका वधी कोड वाजा।	,,	९८
	गिणां वाद जोता केई कोड गाडा।	,,	८४

सावनामिक

पुरुषवाचक तथा निजवाचक सर्वनामों को छोड़ कर अन्य सर्वनामों

का प्रयोग विशेषण की भांति हुआ है। उदाहरण के लिए देखिए सर्वनाम।

क्रिया

भाषा में क्रिया का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। भाषाक्रम में संस्कृत तथा तद्भव धातुओं से विभिन्न क्रियाएं प्रयुक्त हुई हैं। काव्य का संवादात्मक शैली में होने के कारण वर्तमानकालिक क्रिया रूपों की प्रचुरता है। जिसका बहु प्रयुक्त प्रत्यय 'अं' है। 'छ' व 'है' बहुत कम प्रयुक्त हुए हैं। भूतकालिक क्रियाएं बहुधा ओकारान्त हैं। भविष्यत्काल में ल, ली, ला लो, प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है। कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

वर्तमानकालिक प्रयोग

रम सत गोपालियां रम रानी। छ० ११
यहै सांमळो वन मेरी बिलाउँ। ४
गवा मेहुय तेर गोपो गिराळँ। ४
माया ओढ़ा पुरमां एनि मार। ४१
हतो मान त कोन मुलोक आछ। ५२
रमा सारसी हैं ततो पग रेसा। १०
पर मुरळी मार ढाळो कन्हाई। १५
बिड सांवर सामळो पुर वासी। १०१
काळी मागनु लीजिए वनि कांनो। ३४
बिही कोर पयो रही मां वनार। ३५
जमना जप्पई मागणो छोडि मोरा। ५५
बरपाळ न मुह मां घाटि बाई। ७१
देवो आपरी लाज लीयो बहूलो। ३४
बटवां अटवां नहीं पुग वेर। ४१
पठ को सावर वरणनू। १

भूतकालिक प्रयोग

पुच्छी म'र मीसार आवी अरह। " ७
यई पांसळी तिगळी नादया तां। " ८
पणी मीम चालो घणो यात योड। " १५
जसोदा हळी कहळो तम जेहो। " १६
पढोदा नहीं छो प्रिया राज पायो। " ११६
माम मोवळी सोजरा करण मासी। " ६०
तव साहरो वेय सनवट्ट सूटी। " ७४
जमुना वही पुर सिंदूर वन " १०८
ब्रह्मांड इयवीसा वेजावो विहांण " ११५

क्रिशन दीठो गा हवो सुण्यौ न लोला सघ	छंद	३
अवनी भार ऊतारवा जाग्यौ एण जुगत्ति	,,	४
जमूना तण नारियो नीर जाड	,	१२
दही लार माहो चढ्यो ग्रछ डालो	,,	१३
बळदेव बूझ्यो दिखाळयो सुदामा	,,	१९
न दीठो कदीयै न नत्र निहाळो	,,	३७
वळै मोकळो माळिय लाडवायो	,,	८०
ठगवा गयो आप आप ठगाण्यो	,,	९०
बली राव जेहो छळी एण बाधो	,,	९२
पयो मार पांण भयो गात्र भग	,,	११०
वळै फेरियो आगण मद बाळ	,,	११९
प्रभू घणा घा पाडिया	,,	२
लवै मदरै नेस बलभद्र न हुता	,,	७५
पलै पार पिडार था दोहू पासै	,,	१०
जगाड्या जसोदा जदूनाथ जाग	,,	१

भविष्यत्कालिक प्रयोग

अमा नागणीपत्यरी जूझ आछै	,,	५१
हुसी ठावरो आकरू आज आरो	,,	५४
सुनै देखाडू आज वेगा तमासा	,,	५५
फणीनाथ में सालवू एण पाणो	,,	५५
मु ह जोड होसी घडी हेक मांहे	,,	५६
फणीपेण न खावसी वेखि फोरा	,,	५६
सरै आविजो जागसी जाम त्रीजै	,,	६९
चवीजै नहीं बोल ऐ काळवाळा	,,	६७
काळो मू न नाथू तो थारै कमाबू	,,	७७
मोरो जागसी साम वाय मधूरै	,,	९४
घडा जीपसी जुद्ध वाहै बडाई	,,	९६
अठे माडसा आज वेहू अखाडो	,,	३७
हजारां मुखां जागसी आप हेवां	,,	२६
बुलाडो जगाडो जुवो जुद्ध बाथै	,,	५१

अव्यय

नागदमण मे क्रियाविशेषण, नामयोगी, सयोजक और केवळ प्रयोगी भेद से चार प्रकार के अव्ययों का प्रयोग हुआ है जिनका छद सख्या सहित अकारादिक्रम इस प्रकार है —

अचाणच (२१), अजे (३९,४०,४४) अठे (३३,३७), आ (६३ ७८) आकर रो (५४ ११), आगे (७५) ,आगो (८३), आज (३,३७,५४,५५,८२, ८३), इसो (१०९), ऊघो (६४), अण (४,४९,५५), अह (५५,७२,७३,८४,१२१), अेहरी (८७), अेहा (३५), अेहा (८७), ओछो (९५), ओरी (८१), ओ (९२), कठ (५७) कटा (३३), कदि(३७), ि्यो (८३ ९५), किसू (४१,८०, ८९), की (११५), कूण (५२, ८१), के (२), केई (८४), कण (६८) केमि (११४), कहा (११४), को (८२,९०), गुड (१९), घणां (२), चमकी चमकी (३१), घो (९१), ज (५९,८३), जाण (६,१०,१३,४८,१००), जाणि (१८, ९७), जाण (२७,११७), जिरू के (५४ ११७) जु (४०), जे (२९ ६९ ७०), जेता (८२) जेम (१०५) जेहा (११४) जेही (११५), जेहो (९२) तणी तण तणो (५९,९१ १२०,१२१), तब (७४,७५), तर (६६) तिक को (६४,१२०), त (१९,५२,५६,६१), ताई (११६) तोनू (८२)तोर (५०) थोडी (११२), तो विसो (६८ १२०), दुरतर (१२०) धारआग (७३), न (बहुप्रयुक्त), नवो (४२), नथी (३८), नमो (८१), नहीं (४१ ४३, ५० ७७, ७८, ७९, ११६), नांही (४४,४५) ना (८२, १००), नित (४),, न (८४,१०१,१०६,१०८) नहो (५९), पछ (७३), पहेला (७८), पाछो आगो (८१), पास (७०), पास (११६) पासा (५५), पासे (१०), पुणि (२२), पुर (१०८), बिच (२३), बिचाळ (४), बगा (५५), बारबारा (१०३), मल (३७), म (२० ३५ ३९,७९,९२) मां (३९,७९), मामटू (३०) माहे (२४,६५ ९९), माहोमाह (३२) मूळ (५०) मूळ (५९), मोकळी (८) रूडी (९), रसाळी (९६), रीतो (७०), लार (४ १३) यळ (२५,३१,५७, १११, ११९) विहाण (१,४ ६९), विहाणयी (६७), विचाळ (१६,११९), वैगो (३७,११७) चुपा (७२), सग, समा (१५), सांकड (९८) सामहो (८०), सांमो (१२), सार (३), सारा (१०२), सिर (१,११२), हिव (१४, ७६,७७,८१), हो (५२), हुवक (४८), हे (८०), हेमा (३६) ।

चतुर्थ अध्याय

नागदमण का काव्य-सौष्ठव

स्वरूपगत भेद को दृष्टि में रखते हुए प्राचीन संस्कृत आचार्यों ने श्रव्य काव्य को गद्य, पद्य, मिश्र नामक तीन वर्गों में विभाजित किया है एवं पद्य काव्य को भी महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक काव्य नामक तीन उपवर्गों में बांटा है। इन सब में प्रमुखता महाकाव्य को मिली। महाकाव्य के स्वरूप-गठन का सर्व प्रथम विवेचन आचार्य भामह ने अपने काव्यालंकार नामक लक्षण-ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है। तत्पश्चात् दंडी, रुद्रट, हेमचंद्राचार्य इत्यादि विद्वानों ने इसकी संक्षिप्त विवेचना की। महाकाव्य का सबसे सुन्दर एवं विस्तृत विवेचन आचार्य विश्वनाथ के साहित्यदर्पण में उपलब्ध है। खंड काव्य पर विचार करते हुए साहित्यदर्पणकार ने लिखा है—

खण्डकाव्य भवेत्महाकाव्यस्यैकदेशानुसारि च।

—साहित्यदर्पण, षष्ठ परिच्छेद श्लो० ३२९

अर्थात्—महाकाव्य के एक अंश का अनुसरण करने वाला खंडकाव्य होता है। इस लक्षण के उपरांत भी खंडकाव्य की स्वरूप गत विशेषता जानने के लिए महाकाव्य की विशेषताएं जानना शेष रह जाता है। इसके स्वरूप को जाने बिना खंडकाव्य और महाकाव्य की सीमाएं निर्धारित करना असंभव है।

साहित्यदर्पणकार ने महाकाव्य के स्वरूप का विवेचन निम्न रूप में किया है —

१ महाकाव्य का कथानक सर्गों में विभाजित रहता है।
२ महाकाव्य का नायक कोई देवता या धीरोदात्त गुणों से समन्वित कोई उच्चकुलोत्पन्न क्षत्रिय होना चाहिए। एक ही वंश में उत्पन्न अनेक नरेश भी उसके नायक हो सकते हैं।
३ शृङ्गार, वीर तथा शांत में से कोई एक रस प्रधान होना चाहिए।
४ उसमें नाटक की समग्र संधियों (मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श, उपसंहृति) को स्थान प्राप्त हो।
५ महाकाव्य का कथानक या तो ऐतिहासिक होना चाहिए या

सज्जनाधिप।

६ उसमें चार वर्गों (धर्म अर्थ काम मो) ■ स कोई एक फल स्वरूप में होना चाहिए।

७ प्रारम्भ ■ नमस्कार, आशीर्वाद अथवा मुख्य कथा की ओर संकेत के रूप में मंगलाचरण वर्तमान रहता है।

८ उसमें कहीं कहीं दुष्टों की निंदा और सज्जनों की प्रशंसा होती है।

९ महाकाव्य के सर्गों की संख्या आठ से अधिक होनी चाहिए और इन सर्गों का आकार बहुत बड़ा या बहुत छोटा भी नहीं होना चाहिए। प्रायः प्रत्येक सर्ग में एक ही छंद का प्रयोग होता है और सर्गान्त में छंद परिवर्तन अपेक्षित है। कहीं कहीं सर्ग में विविध छन्दों का प्रयोग भी हो सकता है। प्रत्येक सर्ग के अंत में आगत कथा की सूचना होनी चाहिए।

१० उसमें सन्ध्या, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, प्रदोष, अंधकार, दिन, प्रात काल, मध्याह्न, मृगया, पर्वत, ऋतु, वन, समुद्र, संयोग, वियोग, मुनि, स्वर्ग, नगर, यज्ञ, युद्ध, यात्रा, विवाह, मन्त्रणा, पुत्रोत्पत्ति आदि का यथानुकूल सांगोपांग वर्णन होना चाहिए।

११ महाकाव्य का नामकरण कवि, कथावस्तु, नायक अथवा किसी अन्य व्यक्ति के नाम के आधार पर होना चाहिए और सर्गों के नाम सर्गगत कथा के आधार पर होने चाहिए।

उपर्युक्त लक्षणों का ध्यान में रखते हुए विचार किया जाय तो नागदमण में महाकाव्य के अधिकांश गुण उपलब्ध हैं। नागदमण की कथा एक प्रख्यात पौराणिक कथा है। इसके कथानायक श्रीकृष्ण पूर्णब्रह्म परमेश्वर एवं नायकोचित गुणों से सम्पन्न हैं। आरम्भ में मुख्य कथा की ओर संकेतान्वित मंगलाचरण विद्यमान है। समस्त काव्य में वीर रस अंगीभूत है वात्सल्य, शांत रस सहायक रूप में प्रयुक्त हुए हैं। काव्यवस्तु— पाँचों नाटकीय संधियों में विभक्त है। सज्जन स्तुति एवं खल निंदा का प्रसंग यत्र तत्र आया है। प्रात काल, गो दोहन, गो चारण, कंदुक क्रीडा संयोग वियोग, स पवर्णन, युद्ध इत्यादि प्रसंगों का यथानुकूल वर्णन हुआ है। समग्र काव्य में मंगलाचरण तथा कलश को छोड़कर एक ही छंद का प्रयोग हुआ है। इसका नाम कथावस्तु के आधार पर है। पुरुषार्थ चतुष्टय फल के रूप में प्राप्त है जिसे स्वयं नागदमण कार ने यत्र तत्र स्वीकार किया है। इतना सब कुछ होते हुए भी यदि कोई त्रुटि है तो वह है—काव्य की सर्गहीनता और वस्तुसंक्षेप। नागदमण की कथा का संबंध मात्र एक दिन की घटना से है। इसमें समग्र जीवन की व्याख्या समुपस्थित करना कवि के लिए कठिन ही नहीं बल्कि असंभव भी था। फिर भी सूला सांया ने अपनी काव्य प्रतिभा के बल से भगवान श्रीकृष्ण के लोकोप

कारक स्वरूप की चित्रमय झाकी उपस्थित करते हुए गोरक्षा का सदेश प्रस्तुत किया है वह किसी भी महाकाव्य से कम नहीं है। परन्तु शास्त्रीय दृष्टिकोण से यह खडकाव्य की ही परिधि मे आता है।

नागदमण का रस-निरूपण

रसयुक्त वाक्य ही काव्य है[1]—कह कर रसवादियों ने रस की महत्ता प्रस्थापित की है। नागदमण वीर रस प्रधान काव्य है। झूला सोयाजी का भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त होते हुए भी वीर रसान्वित भगवच्चरित्र का व्याख्यान करना उनकी वशगत विशेषता है। चारण कुल सदा से ही वीर भाव का विस्तारक रहा है। नागदमण का नेति नेति प्रक्रिया द्वारा चतुर्विध सैन्य तथा शस्त्रास्त्र वर्णन उक्त परम्परा का सुदर निर्वाह है।

विभाव, अनुभाव तथा सचारी भावों के सयोग से परिपुष्ट स्थायी भाव ही रस का स्वरूप ग्रहण करता है।[2] वीर रस का स्थायी भाव उत्साह माना गया है।[3] इसके दान, धर्म, युद्ध और दया यह चार भेद अलकारिकों ने बताये हैं।[4] नागदमणमें अगिरस स्वरूप युद्धवीरका वर्णन हुआ है। रसके आश्रय भगवान श्रीकृष्ण हैं और आलम्बन है कालिय नाग। नाग का विष प्रभाव से यमुना के जल को दूषित करके गौ तथा गोपाल समाज को हानि पहुचाना और नागपत्नियों द्वारा भगवान को केवल साधारण बालक एव कालिय को एक बहुत बडा वीर समझना, उद्दीपन है। कालिय के भयकर आक्रमण के समय भगवान का निश्चल रह कर उसके प्रहारों को विफल करने की चेष्टाए अनुभाव के रूप मे वर्णित हैं। गर्व, तर्क, स्मृति इत्यादि सचारी भावो का यथा स्थान निरूपण हुआ है तथा वात्सल्य, करुण और रौद्र रसों का सहायक रसो के रूप मे वर्णन है।

यद्यपि वर्ण्य विषय वस्तु के आधार पर नागदमण एक वीर रसान्वित खण्डकाव्य ही निर्णीत होता है। परन्तु कवि का अतिम लक्ष्य भगवान श्रीकृष्ण की लीला गायन द्वारा सासारिक दुखों से निवृत्त होकर मोक्ष प्राप्ति है। इसी कारणसे यह कृति भक्ति रसान्वित ही मानी जाएगी।

नागदमण मे भक्तिरस

प्राचीन आचार्यों ने भक्ति को स्वतन्त्र रूप से रस की सज्ञा नहीं दी है। शात रस के अतर्गत भावरूप से इसका वर्णन है। देवता आदि विषयक रति को भाव कहा गया है[5] रस नहीं परन्तु यह बात कहां तक उचित है?

---

[1] वाक्य रसात्मकं काव्यम्—विश्वनाथ

[2] विभावेनानुभावेन व्यक्तः सचारिणा तथा।
रसतामेति रत्यादिः स्थायी भावः सचेतसाम्॥—सा० द० परि० ३

[3] उत्साह स्थायी भावकः—वही परि ३

[4] स च दान धर्म युद्धै दया च समन्वितश्चतुर्धास्यात् —वही परि० ३

[5] रतिर्देवादि विषया व्यभिचारी तथाञ्जितः। भावप्रोक्त ।—काव्य प्रकाश

भगवद्गीता भागवत आदि के श्रवण से जो भक्ति रस का अनुभव करते हैं वह उप णाय नहीं। इस रस का आलंबन भगवान, पुराणादि श्रवण उद्दीपन, रोमांच आदि अनुभाव तथा हर्ष आदि संचारी है। स्थायी है—भगवद्विषयक प्रेम रूप भक्ति। इसका शांत रस में समावेश नहीं हो सकता। कारण यह कि—प्रेम, निर्वेद या वैराग्य के विरुद्ध है और वैराग्य ही शांत रस का स्थायी भाव है।[1]

ईश्वर में परम अनुरक्ति को भक्ति कहते हैं।[2] यह दो प्रकार की मानी गई है—रागानुगा और वैधी। वैधी से रागानुगा भक्तिको श्रेष्ठ माना गया है। इसके भी दो भेद हैं—कामरूपा और सम्बन्धरूपा। विषय सम्भोग तृष्णा को काम कहते हैं। इन्द्रियार्थ ही बद्ध जीव का विषय है। इसीलिए पण्डित लोग इसे काम कहा करते हैं। जिस जगह परमतत्वस्वरूप भगवान, विषय रूप में वरण किए जाते हैं, उस जगह विषय सम्भोग तृष्णा को प्रेम कहा जाता है। काम और प्रेम में स्वरूपगत भेद नहीं है, केवल विषयमात्र का भेद है।[3]

प्रेमाभक्ति की दो अवस्थाएं होती हैं—भाव और प्रेम। अलंकारिक वैयाकि विषयक रति को भाव कहते हैं रस नहीं यह पहले स्पष्ट किया जा चुका है। पर वैष्णव भक्तों का भाव उससे भिन्न है। जहां अलंकारिक कृष्ण संबंधी रति को केवल भाव कहते रस नहीं, वहां भक्ति शास्त्री उसे रस भी कह सकते हैं। भाव शुद्ध रति है। अलंकारिकों की रति से यह रति भिन्न प्रकार की है। स्त्री पुत्रादिक के प्रति जो रति है यह बद्ध जीव की जड़ विषया रति है। पर श्रीकृष्ण के प्रति भक्त की रति चिद्विषया होती है[4] अर्थात् अलंकारिकों के रस जड़ोन्मुख हैं और भक्तों के रस ईश्वरोन्मुख[5] यही दोनों में भेद है।

भक्तिरस शास्त्रियों के मतानुसार भक्तिरस व्यापार में निम्नांकित पांच भाव होते हैं—१ स्थायी भाव, २ विभाव, ३ अनुभाव, ४ सात्विक भाव और ५ संचारी भाव। इनकी परिभाषाएं अलंकारिकों जैसी ही होती हैं। स्थायीभाव नाम शुद्ध-रति, विभाव अनुभाव सात्विक तथा व्यभिचारी भावों से परिपुष्ट होकर पांच स्वभावों को ग्रहण करती है तथा उसी के अनुसार रति के पांच भेद होते हैं जैसा कि निम्नांकित तालिका से स्पष्ट है—

---

[1] श्री रामदहिन मिश्र—काव्य दर्पण पृ० २१२

[2] अ—सापरा नुरक्ति रीश्वरे। —शाण्डिल्य सूत्र

आ—सा त्वस्मिन् परम प्रेम रूपा। —नारद भक्ति सूत्र

[3] श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी—सूर साहित्य पृ० ३२

[4] श्री श्रीचैतन्य शिक्षामृत पृ० २१०–२११

[5] डा० रामरतन भटनागर—हिन्दी भक्ति साहित्य पृ० ८८

स्वभाव	शांत	दास्य	वात्सल्य	सख्य	शृंगार
स्थायी	शांतरति	दास्य रति	वात्सल्य रति	सख्य रति	मधुरा रति
आलम्बन	परब्रह्मत्व	सर्वेश्वरत्व	सुकुमारत्व	सुजानत्व	मनहरणत्व
उद्दीपन	एकांतध्यान	नमस्कार वंदन	बाल सुलभ चेष्टाएं	क्रीडा	वसंत ऋतु, वस्त्राभूषण
सात्विक अनु०	मूर्च्छा के अतिरिक्त स्तम्भादि आठों	स्तम्भादि आठों	स्तम्भादि आठों	स्तम्भादि आठों	स्तम्भादि आठों
संचारी	मति, धृति, निर्वेद, स्मृति	हर्ष, गर्व, चिंता, मति, धृति, निर्वेद, तर्क शंका, दीनता तथा विप्रलम्भ के अन्य संचारी	दास्य की तरह	दास्य की तरह	दास्य की तरह
नागदमण में वर्णन	आरम्भ तथा अंत की स्तुति एवं यमुना द्वारा स्तुति का वर्णन	नागपत्नियों द्वारा पूजा अर्चा का वर्णन	गोप पत्नियों के स्वरूप दर्शन एवं कथोपकथन का वर्णन	गोचारण के समय यमुना तट पर कंदुक-क्रीडा का वर्णन	नागपत्नियों द्वारा स्वरूप वर्णन तथा कथोपकथन का वर्णन

रागानुगा भक्ति को प्रेम भक्ति की पुष्टिकारिणी समझकर इसे पुष्टिमार्ग की संज्ञा दी गई है। आचार्य वल्लभ इसके प्रबल प्रचारक रहे हैं। इन्होंने विजयनगर के राजा कृष्णदेव की सभामें शैवों को पराजित करने के उपरांत दक्षिण से वृन्दावन आकर गोवर्द्धन पर श्रीनाथजी के मंदिर की स्थापना की तथा अपने उपास्य बालकृष्ण (श्रीनाथजी) के नित्य तथा नैमित्तिक आचारों द्वारा सेवा का प्रबन्ध किया। वल्लभकुल सम्प्रदाय में वही प्रणाली वर्तमान तक गृहीत है।

झूला सांयाजी भी बालकृष्ण (श्रीनाथजी) के अनन्य भक्त थे। आचार्य वल्लभ द्वारा प्रतिष्ठापित नित्याचार हरिसेवा का वर्णन इन्होंने नागदमण में बड़े ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है—

आचार्य वल्लभ द्वारा प्रतिष्ठापित आठो प्रहर की सेवा तथा नागरीदासकार की वर्णनानुसार तालिका—

क्रम	सेवा का नाम	समय	भाव	नागरीदासजी द्वारा
१	मंगला	प्रात ५ से ७ बजे तक	जनराग के पद, जगाने के पद, और दधि मथन के पद	बिहाणू नवोनप जागो वहना इत्यादि पद सं० १
२	श्रृंगार	७ से ८ बजे तक	बाल रूप सौंदय, वेष भूषा, बाल क्रीड़ा के पद	लिया सार सिंगार गोसार भाता इत्यादि पद सं० ३
३	ग्वाल	८ से १० बजे तक	सख्यभाव चोगान, गोचरण आदि के पद	नरयो मांग निहूर मारग माठ इत्यादि पद संख्या ४ से ७ तक
४	राजभोग	१० से १२ बजे तक	छाक के पद	जिमाव त्रिक नायता भोग आगो इत्यादि पद सं० २
५	उत्थापन	सायं ३ से ४ बजे तक	लीला के पद	वई बालड़ी सोगड़ी नाचवा ता इत्यादि पद सं० ८ से १२ तक
६	भोग	सायं ५ बजे	कृष्ण रूप, गोपीदशा, मुरली, रूप माधुरी, गाय गोप आदि के पद	अचाणक ऊभो दरबार आय— इत्यादि पद सं० २१ से ११९ तक सभी भावों का वर्णन है।
७	संध्या	६ ३० बजे	गो ग्वाल सहित वन से आगमन, गोदोहन घया, वात्सल्यभाव से यशोदा का बुलाना आदि के पद	महाराठ माठा तणो मांग मोरो अतोश दिसो आवियो पाएा ओडो। पद सं० १२०
८	शयन	७ से ८ बजे तक	अनुराग के पद तथा संयोग शृंगार के पद	रम्यो नरय राधारमण पद सं० १२२ में केवल संकेत किया है।

विशेष—नागदमणकार ने राजभोग का वर्णन शृङ्गार तथा ग्वाल से पहले किया है। यह तत्कालीन गोप-समाज के क्रियाकलाप का प्रभाव है। वर्तमान में भी गोप समाज का क्रियाकलाप नागदमणकार के वर्णनानुसार ही सम्पादित होता है। यथा (१) प्रातःकाल उठना, (२) कलेवा, (३) गोचारण सामग्री तथा परिधान, (४) ग्वालों के साथ वन गमन, (५) क्रीडा, (६) मध्याह्न भोजन, (७) सायंकाल में गायों सहित वन से आगमन, (८) भोजन शयन।

अलंकार

रस या व्यंग्य के पश्चात् यदि काव्य में किसी और का महत्व है तो अलंकारों का। 'अलम्' का अर्थ है भूषण। जो अलंकृत करे वह अलंकार जिसके द्वारा अलंकृत किया जाय इस कारण व्युत्पत्ति से उपमा आदि का ग्रहण हो जाता है।[1]

अलंकारों का उपयोग सौंदर्य-वृद्धि के लिए किया जाता है। यह सौंदर्य भावों का हो या उनकी अभिव्यक्ति का। भावों को सजाना, उन्हें रमणीयता प्रदान करना अलंकारों का काम है और दूसरा काम है भावों की अभिव्यक्ति को प्राञ्जल करना व उसे प्रभावशाली बनाना।[2]

रस सिद्ध कवियों को अपनी रचनाओं में अलंकारों के लिए प्रयास नहीं करना पड़ता है। ध्वन्यालोक के मतानुसार— निरूप्यमाण कठिनाइयों को झेलने पर भी प्रतिभाशाली कवियों के समक्ष अलंकार प्रथम स्थान ग्रहण करने को अपने आपको 'हम पहले हम पहले' कहते हुए टूटे से पड़ते हैं।[3]

कविजनोचित संस्कार मूलतः वर्तमान होने के कारण नागदमणकार को अलंकारों के लिए प्रयास नहीं करना पड़ा है। नागदमण में डिंगल के वयणसगाई जैसे क्लिष्ट परन्तु अनिवार्य शब्दालंकार का सर्वत्र सुन्दर निर्वाह हुआ है। वयणसगाई के सफल प्रयोग से अन्य समस्त काव्यगत दोषों का परिहार हो जाता है।[4] साथ उपमा आदि अर्थालंकारों का प्रयोग भी यथा स्थान हुआ है तथा मूला सांयाजी की उत्प्रेक्षाएं तो अलंकारों में अपना एक

---

[1] अलङ्कृतिः अलङ्कारः करणव्युत्पत्त्या पुनः अलङ्कारशब्दोऽयमुपमादिषु वर्तते
—वामन वृत्ति

[2] श्री रामदहिन मिश्र—काव्य दर्पण पृ० ३२६

[3] अलङ्कारान्तराणि हि निरूप्यमाणदुर्घटान्यपि रससमाहितचेतसः प्रतिभानवतः कवेः अहंपूर्विकया परापतन्ति —ध्वन्यालोक

[4] आखै इण भाषा अमल, वयणसगाई वेस
दग्ध अगण वद दुगण, लागै नहि लवलेस —कविमंड—रघुनाथ रूपक गीतां रो
पृ० १२

विशिष्ट स्थान रखती हैं। डिंगल साहित्य के प्रख्यात अलंकार वयणसगाई का आवश्यक समझकर सर्वप्रथम निरूपण किया जा रहा है।

उत्तम, मध्यम और अधम प्रकार भेद से वयणसगाई को तीन वर्गों में रखा गया है। उत्तम के भी आदिमेल, मध्यमेल और अन्तमेल नामक तीन उपभेद माने गए हैं।[1] इनको अधिक अखरोट, सम अखरोट और न्यून अखरोट भी कहते हैं।[2] अरध अखरोट एक चौथा भेद भी कहीं कहीं मिलता है।[3] नागदमण में वयणसगाई के सभी भेदोपभेदों का व्यवहार हुआ है। यथा–

आदिमेल—चरण के प्रथम वाक्य के आदिवर्ण की आवत्ति उसी चरण के अंतिम वाक्य के आदि मे होती है।

उदाहरण— विहाणू, नयो नाथ जागो वहेला,
हुवो दोहिया धेनु गोवाळ हेला।
जगाडे जसोदा जदुनाथ जाग,
महो माट घूम नवनीत माग ॥ छं० १

विशेष—उक्त उदाहरण मे व व, ह ह, ज ज तथा म म की आवत्ति दर्शनीय है।

मध्यमेल— चरण के प्रथम वाक्य के आदिवर्ण की आवृत्ति उसी चरण के अंतिम वाक्य के मध्य में होती है।

उदाहरण— १ सारद करी पसाय। छंद १
२ लियां लकडी कथ ऊमा हुलास। ,, १०
३ रीतो वाहूडू जे अभोरयो वरान। ,, ७०
४ घडोय बिहू नीमड आ अघायों। , ७८
५ होहि गोपद अधुहारि। , १२२

अतमेल—चरण मे प्रथम वाक्य के आदि वर्ण की आवृत्ति उसी चरण के अतिम वाक्य के अत मे होती है।

उदाहरण— तद नदर मेल बलभद्र म हुता। छंद ७५

अरधमेल—चरण म प्रथम वाक्य के आदिवर्ण की आवृत्ति उसी चरण के

[1] वयणसगाई तीन विध, आद मध्य तुक अंत।
मध्यमेल हरि महमहण, तारण दास अनंत ॥
आढा किशनाजी—रघुवरजस प्रकास पृ० १८२

[2] वरण मित्त तु धरण विच वरणिया तीन वहत।
आद अधिक सम मध अवर, न्यून अंक सो अंत ॥
कवि मंछ—रघुनाथ रूपक पृ० ३४

[3] अरध मेल अखरोट इक, चल तुक लिया कवि चाल
कवि मंछ —व० पृ० ३५

मध्य वाक्यों मे होती है।

उदाहरण—१ वल्ह व वड्यो दिवाळयो सुनामा। छंद १९
२ हाहाकार हक्कार ससार सार। ,, १५
३ सत्र सु दरी सु दरी देखि मोही। ,, २५
४ ढळक्कतडो ढाल नेजा न धज्जा। ,, ४९
५ त्रिलोकी न त्रासई वीहा ओ न धूजा। ,, ८८
६ घणी वात साकावधी फोड फाजा। ,, ८९

मध्यम कोटि की वयणसगाई मे असमान स्वरों, तथा स्वरों के साथ य, व, अथवा ह का मेल होता है। यथा—

उदाहरण—१ आप वधाणो ऊजल। दूहा ३
२ इकी वेवटी चोवट आय ऊभी। छंद ६
३ ऊभा गाय गोवाळ ऊरस आर। ,, १५
४ इस बाळ गोपाल पामी अचमा। ,, २१
५ इसं नासिका सिध्ध दीपक ऐरी। ,, २६
६ अमारा भगत्ता तणा एह औरा। ,, ५८
७ उडै डींगळा पींपळां रा अगारा। ,, १०३
८ ऐरी गोवीन देखी चरे न हेरी। ,, ८६

अधमकोटि की वयणसगाई में विभिन्न वर्णों जसे 'ट' वर्ग और 'त' वर्ग अथवा अल्पप्राण और महाप्राण वर्णों का मेल होता है। यथा—

उदाहरण—१ दडी लार का'हो चल्यो पूरुछ डाली। छंद १३
२ तब नदरी लार आहीर टोळा। ,, १७
३ दरब्बार काळी तणो मेलिह डावो। ,, ३८
४ दळक्कत्तडी ढाल नेजा न धज्जा। ,, ४९
५ जाल परस नीला यहै निरग्र झाळा। ,, ५०
६ फणिनाथ न झालवू ऐण पाणी। ,, ५५
७ समा देव मोटा अमा मत्त थोडी। ,, ११२

नागदमण मे उक्त वयणसगाई के अतिरिक्त—छेकानुप्रास, वृत्यनुप्रास, श्रुत्यनुप्रास, लाटानुप्रास, अंत्यानुप्रास, पुनरुक्ति, वक्रोक्ति इत्यादि शब्दालकारों के उदाहरण यत्र तत्र दृष्टिगोचर होते हैं तथा उपमादि अर्थालंकारों का व्यवहार भी यथास्थान हुआ है। कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

उपमा— १ सुण्यो वात आघात माता सनेही,
जसोदा ढळी कदळी जेम जेही। छंद १६
२ जहीं नागणी बोल एहा निवास
वस रसमण डसमण विस्वजास। ,, ३५

रूपक— १ सुण्यो वात आघात छंद १६
२ न खम तिक नागणी बोल बूंदी । „ ६४
३ उड डींगळां पींगळारा अगारा । „ १०३
४ समद्रा पार ससार, होहि गोपद अणुहारी । „ १२२

उत्प्रेक्षा— १ हुई नदरो धेन सू धेन हेला,
मिल वाळवा जाणि थीगग मेळा । „ ६
२ पुळो नेर नीसार आवी प्रहट्ट ।
त्रिवेणी उल्लट्टीय समद्र तट्ट । „ ७
३ कालिन्दी तण आई लोटत काठ,
गयो जाणि चिंतामणि रंक गाठ । „ १६
४ इस नासिका सिघ्घ दीपक्क ऐरी,
काळो चप जाण लळी लप करी । „ २६
५ अली सकुली जाणि किधी अलश्क । „ २७
६ घेर्यो नदरो धोट अहिकोट एहो,
जळाबोळ माह कळा सोठ जेहो । „ ९९
७ गोपीनाथरा हाथ आया गडद्द
अही मारडो जाणि छाट उडद्द । „ १००
८ अही मूठ बाज जिहा ना उपाड
मही गारड्ड जाणि काळो रमाड । „ १०
९ काळी नागरा कान्ह समाळ केवा,
लधो जाण जूट्यो वधी मच्छ लेवा । „ १३

असम— महा खम्मिया निधि जादम मोटा,
खरो हेक तू ही बिया सब्ब खोटा । „ ११४

अतिशयोक्ति— जाळ विरख मीला वहे विरख झाळा
वदन सहस्री वध व्योम व्याळा ।
वडा शृङ्ग सीतग हेमग वाळा,
जिरी फूंक आग भर हूंक फाला ॥ „ ५३

रूपकातिशयोक्ति—१ महाकाळ काळी नको बाळ मान,
पडो दोतडो आज ही बाघ पाने । „ ३६
२ जुड रूप तोन त्रणाव्रत जेहा,
कुहाडा त्रणा ऊपरा मार केहा । „ ११४

व्याजस्तुति— १ मनासू न मूकइ घडो हेक मामो
करे सूर ऊगा तणो नित्य सामो । „ ५९

२ प्रिया तात न गोत्र थारा पिछाण्या,
वडा गोपरो पुत्र आयो विहाण्या । छंद ६७

३ जोवो नदर प्रेह खत्रघट जागी,
हिवे लागवा सव श्री लोक लागी । „ ७६

नागदमण मे प्रयुक्त छद

नागदमण काव्य में प्रारम्भ के चार दोहों तथा अत मे एक कलश के अतिरिक्त सवत्र भुजगप्रयात छद का व्यवहार हुआ है । भुजगप्रयात सुप्रसिद्ध समवर्णिक छद है जिसका लक्षण राजस्थानी छदशास्त्र में इस प्रकार दिया गया है—

च्यार यगण पद प्रत चवां, छन्द भुजगप्रयात ।

आढा किशनाजी-रघुवर जस प्रकाश प० १३६

नागदमण के सवाद और उक्ति वैचित्र्य

नागदमण का विशेष महत्त्व उसके वणन और सवादों के कारण है । × × × ×विशेषतया नागणी और कृष्ण के सवादों मे माधुय, वात्सल्य, आश्चय, भय, उत्साह आदि भावों का एक साथ सुन्दर सामजस्य मिलता है । वे बडे फबते हुए और उपयुक्त हैं ।[1] कवि को प्रकृति चित्रण करते हुए काव्य के अनुकूल वातावरण प्रस्तुत करने म विशेष सफलता मिली है ।[2] सफल सवादों का विवरण इस प्रकार है—

१ नागणी और कृष्ण सवाद— छद ३० ५५
२ नागणी और यमुना सवाद— „ ५६
३ नागणी और कृष्ण सवाद— „ ५७ ८४
४ नागणी और अन्य स्त्री सवाद „ ८, ९३

उक्त सवादों मे तथा वणनो मे लोकोक्तियां और मुहावरे मणिकांचन योग स्वरूप प्रयुक्त हुए हैं जो भाषा की सजीवता तथा सौन्दय वृद्धि के मूल उपादान समझे जाते हैं । कतिपय सफल प्रयोग दृष्टव्य हैं—

१ वईकुठ रै नाथ रूडो विचारी । छद ९
२ रम सग गोवाळियां रगराती । „ ११
३ मड्यो दूसरो खेल खेलत माय,
हिव ऊनरी वात गोवाळ हाथ । „ १४
४ घणों मोम चाल्यो चढी वात घोड । „ १५
५ लिया जीह दत नहीं लीक लोपी,
गुड गाय गोवाळ झूरत्य गोपी । „ १९

[1] श्री मोतीलालजी मेनारिया—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ १३२
[2] श्री पुरुषोत्तम जी मेनारिया—रुकिमणी रास [प्रस्तावना] पृष्ठ २१

६ बुलाय मळ नाथ नांसो मुरधनो ।
७ काळीनागसू लीजिए बगि कानो छंद ३२
पड्यो तात सोस चढ मात पानो ।
८ रढोज इसा मात आग रढाळा, ,, ३४
घवीज नहीं बोल ज काळचाळा ।
९ दरब्बार काळी तणो मेल्हि डायो । ,, ३७
१० मरीज नहीं आम सू वाय मौळा । ,, ३८
११ बधारया न धार अज वाळ वाळा । ,, ३९
१२ अज मुख प पान री सोढि आय । ,, ३९
१३ हारियां जीपियां करतार हाथ । ,, ४०
१४ सूतो साप जगाडीज केण कोड । ,, ५१
१५ पिता मातरो ओधणो पककवानो , ६८
मोत्यारी हुई पूयरी साच मानो ।
१६ लला तू नहीं अह पूवत लूणो । ,, ७०
१७ अमा पय साडा तणो धार आग । ,, ७१
१८ मिळ कसरा सूत पाणी न माग । ,, ७३
१९ मिळ दादुरां मेह तो साच मान । ,, ७५
२० हडीज नहीं जगळा जाट राणी । ,, ७६
२१ किस्न आपरो मोल आपे कराव । ,, ७९
२२ नरा नारी को नागणी ना वियाणी, , ८०
रही बांझडी देव दाणव्व राणी ।
२३ मारी गाटियो सू ठ दूजो न सायो ,, ८२
जणणी किणी हेक तू ही ज जायो ।
२४ गिणा बाद जोता केई कोड गाडा । ,, ८३
२५ सती याळ एन त्रिभुवन्न सूण । ,, ८४
२६ प्रभू धग लागी सोई पूल पासी । ,, ८८
२७ लोकांही विचाळ प्रभू लीक लाग, , ९९
अहेडा सुण्या साप रा दयि आग । ,, ११४

नागदमणकार वा काव्यगत संदेश

मूला सापाजी ने प्रस्तुत काव्य मे भगवान श्रीकृष्ण व सर्वेश्वर भक्तिवाद के साथ साथ गो-सरक्षण के महत्त्व को भी प्रतिपादित किया है। भारतवष मे प्राचीनकाल से लेकर वतमान तक गो सरक्षण को एक धार्मिक अनुष्ठान के रूप में माना गया है । अनेकानेक भारतीय वीरों ने समय समय पर अपने प्राणों

की बाजी लगाकर गो रक्षा के महत्त्व को अक्षुण्ण रखा है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी गो रक्षा का महत्त्व कम नहीं है। भारत एक कृषिप्रधान देश है। गाय इस देश की सर्वोपरि राष्ट्रीय निधि है। गायों के द्वारा दूध, दही, घृत इत्यादि अमृतोपम पुष्टिकर आहार तो उपलब्ध होता ही है साथ ही साथ कृषि कार्य के सम्पादनार्थ बैल भी गायों द्वारा ही प्राप्त होते हैं। इस प्रकार की राष्ट्रीय-निधि का दुर्बल होना, नष्ट होना देश का दुर्भाग्यसूचक लक्षण है। जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण गो रक्षा निमित्त महाकालस्वरूप कालिय नाग से लोहा लेने में नहीं हिचकिचाये उसी प्रकार भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि गो संरक्षण के लिए यदि काल से भी टक्कर लेनी पड़ जाय तो उसमें आनाकानी न करे, इसी में राष्ट्र का कल्याण है।

झूला सायाजी
कृत
नागदमण

मूलपाठ
महत्त्वपूर्ण पाठभेद
शब्दार्थ एवं भावार्थ

अथ श्री नागदमण लिख्यते

दूहा

वळ[1] वो सादर[2] वरणवू[3] सारद[4] करो पसाय ।
पवाडो[5] पनगा सिर[6], जदुपति कीधो[7] जाय ॥ १ ॥

प्रभू घणा[1] चा पाडिया, दत वडा चा दत ।
के पालण पोढिया, के पय पान करत ॥ २ ॥

किण न दीठी कानवौ[1], सुण्यौ न लीला सध[2] ।
आप बधाणौ[3] ऊखळ, बीजा छोडण बध ॥ ३ ॥

अवनी भार उतारवा, जाग्यौ[1] एण जुगत्ति ।
नाथि[2] विहाण नित[3] नव नव विहाण नत्ति ॥ ४ ॥

छंद भुजंगप्रयात

विहाणू[1] नवो नाथ जागौ वहेला[2]
हुयौ[3] दोहिवा[4] धेनु, गावाळ हला[5] ।
जगाडै जसोदा जदूनाथ जाग[6],
मही माट घूम, नवनीत[7] मागै[8] ॥ १ ॥

---

१ [1]वळतो [ख ग] वाणी काज वरणवा [घ], विधि [ड][2] सारद [ग, ड] [3]वीनवु [ख ग घ ड] [4] सादर [ग],[5] पवाडु [ख] पुवाडा [ग], [6] सरस्य [ख] सरस [ग], [7] कीनो [ड घ] ।

२ [1]प्रणाम पाडिया [ख] घणाई [ग] [2] पासाण [ड]।

३ [1]कान्हुमा [ख], [2] सुध [ग] [3] बधाव [ख] ।

४ [1]जाग्यो [ग ड],[2] नाथ [ग ड घ],[3] नवेनित [ख] ।

१ [1] विहांणे [ड], [2] वहिला [ख] [3] दीयो [ख घ], [4] दूहवा [घ], दोहिवा [ड] [5] हिला [ख], [6] जागो [ख घ ड], [7] नवंनिढि [ड], [8] मांगो [ड] ।

अथ श्री नागदमण

दोहे

हे शारदा ! आप मेरे पर अनुग्रह कीजिये जिससे मैं यदुपति श्रीकृष्ण ने कालिय नाग के सिर पर चढ़कर जो पराक्रमपूर्वक युद्ध चरित्र किया, उसका सादर वर्णन कर सकूं ।१।

प्रभु श्रीकृष्ण ने अनेक बड़े-बड़े दैत्यों के—कइयों के पलने में सोते हुए और कइयों के स्तनपान करते हुए, प्राण उखाड़ डाले (नष्ट कर दिये) ।२।

भगवान श्रीकृष्ण के लीलायुक्त चरित्र ऐसे हैं जो न तो देखे गये हैं और न सुने गये हैं। दूसरों को बंधनमुक्त करने वाले स्वयं ओखली से बंधे हैं।३।

भगवान श्रीकृष्ण भूमि का भार उतारने के लिए इस रूप में प्रकट हुए हैं कि—नित्य प्रातःकाल में नवीन नवीन उच्छृंखल व्यक्तियों को अपने वश में कर लेते हैं ।४।

भुजंगप्रयात छंद

हे नाथ ! प्रातःकाल में गायों को दुहने के लिए ग्वालों की पुकार हो रही है अतः शीघ्र जागिए। इस प्रकार जसोदा के जगाने पर यदुपति श्रीकृष्ण जाग और मटके में दही मथते देख कर मक्खन मांगने लगे ।१।

---

१ मळ=पराक्रम। वो=वह। सारद=शारदा। पसाय=अनुग्रह। पवाडौ=युद्ध चरित्र। पनगां=सर्प के। सिर=ऊपर। कीधो=किया।

२ घणां का=अनेकों के। पाड़िया=उखाड़े। वडा=मोटे। के=कइयों के। पोन्यां=सोते हुए। पय=दूध। करत=करते हुए।

३ किणीं न=किसी ने भी नहीं। दीठो=देखा। लीला सथ=लीला युक्त। बीजां=दूसरों के। बंध=पाश।

४ अवनी=पृथ्वी। भार=बोझ। आयो=प्रकट हुआ। एण=इस प्रकार। जुगति=युक्ति, रूप। नाथि विहाण=निरंकुश, उच्छृंखल। नव=नवीन, नमस्कार करते हैं। विहांण=प्रातःकाल नत्ति=वश में कर लेते हैं।

१ विहाणू=प्रातःकाल। नवो=नवीन। वहेला=शीघ्र। दोहिवा=दुहने के लिये। हेला=पुकार। जगाड=जगाये। नवनीत=मक्खन।

जिमाय[1] जिर भारा भाग जाणि
पम्ग जगाना जिम[2] धवपाणो ।
अरोग अघाय तियो[3] आरमन,
मपूरो[4] ग्र६ पार बीना[5] मगन ॥ २ ॥

सिया मार[1] मिगार गारारनोना,
रर आज मा[2] जम्मुना नट्ट वाला ।
गुण्यो राम आगम्म[3] ऊभा मट्नी,
हरसा हरवा हवणो टरजो ॥ ३ ॥

भरया[1] गाग गिहूर मारग माढ
यह रामला ग्रज रारी निराळै ।
धरै गार रन्वार[2] पिनार वाढ,
नवा नह मू तेह[3] गोपी निहाढ ॥ ४ ॥

हरीहो[1] हरीहो हरी[2], धन हार,
हम्मा वडो नदकुम्मार[3] झाव[4] ।
अहीराणिया अवनला[5] नूल आव
भगव्नान न मन गोप्या भळाव[6] ॥ ५ ॥

इको[1] वेवटो चोवट[2] आय ऊभी
सभाली[3] ल्यियो स्याम[4] मोरी[5] गुरम्भी[6] ।
हुई[7] नदरी धेन सू धेन[8] हला
भिळै[9] बाळना[10] जाणि श्रीगग भेळा ॥ ६ ॥

---

२ [1] जिमाड [ग] जिमाडो [ड], [2] धको [ड] [3] किये [ख ग घ] [4] कपूरे [ख ग घ], [5] बीडो [ख] ।

३ [1] लार [ख], [2] माजरो [ड], [3] माग [ख ग घ] ।

४ [1] गदि [ख], भरे [ड], [2] सवार [ड] लबार [ग], [3] देह [ख ग ड] ।

५ [1] हरीहे हरीहे [ख ग], [2] देहरी [ख], [3] कूवार [ग], [4] झाल [ख] [5] आवलो [ख], आवला [ग], [6] भुलाव [ग] ।

६ [1] इकु [ख], एके [ग], [2] चुवट [ख], [3] सभाले [ख ग] [4] नाथ [ख ग], [5] गोपी [ग], [6] सरूरी [ग], [7] हुव [ख ग], [8] गोवाळ हेला [ड] । [9] मेला [ख], [10] बाहुना [ख] ।

श्रीकृष्ण को जो जो व्यंजन रुचिकर हैं उन्हें ही परोस कर यशोदाजी भोजन करवा रही हैं। तृप्त होकर भोजन कर लेने के पश्चात् भगवान श्रीकृष्ण ने आचमन किया और कपूरी पान का बीड़ा ग्रहण किया। २।

भगवान श्रीकृष्ण ने गोचारण के शृङ्गार प्रसाधन कर लिये क्योंकि आज वे यमुना-तट पर कोई खेल करेंगे। उनका आगमन सुन कर गोकुल बालाएं प्रत्येक मकान पर उन्हें देखने को खड़ी हो गई। ३।

श्यामल गात्र श्रीकृष्ण व्रज की गली में चल रहे हैं और उनके पीछे दुधमुंहे बछड़े तथा बाल ग्वाल चल रहे हैं जिन्हें मार्ग में सिंदूर भरे गोपियां नूतन स्नेह सिक्त होकर मार्ग में देख रही हैं। ४।

भगवान श्रीकृष्ण हरी हो! हरी हो!! कहते हुए गायों को हांक रहे हैं। इधर अहीरनियां झरोखों पर चढ़ी नंदकुमार को देख रही हैं। उधर अहीरनियों का सुंदर समूह तथा गोपिकाएं आकर अपनी अपनी गायें श्रीकृष्ण को सम्हला रही हैं। ५।

इक्की दुक्की गोप बाला चौराहे पर आकर खड़ी हो गई और भगवान से कहने लगी कि—श्याम! मेरी गाय को सम्हाल लेना। नंद के गो समूह के साथ अन्य गायें इस प्रकार आ-आ कर मिल रही हैं मानों माल आ आ कर श्रीगंगा में मिल रहे हों। ६।

---

२ भावता=रुचिकर। भोग=भोजन सामग्री, व्यंजन। जिमें=खाते हैं। चक्रपाणी=सुदर्शनधारी श्रीकृष्ण। अरोग=भोजन किया। धपाये=तृप्त हुए। आचमन=हाथ धोना, पीना। ग्रहे=लिये।

३ लिया धार=धर लिया अर्थात् लेकर लिया। सिणगार=शृङ्गार। गोचार लीला=गोचारण लीला के। का=कोई। तट्ट=किनारे। कीला=खेल। आगम्म=आना। हरेवा हरेवा=देखने के लिए। हवेली-हवेली=मकान मकान पर।

४ भरयां=भरे हुए। मारग्ग=मार्ग। भाळ=देख रही हैं। व्रज सरी=व्रज की गली। विचाळ=मध्य में। लार=पीछे। लव्वार=दुधमुंहे बछड़े। विहार=गोप। तेह=उनको, सिक्त। निहाळ=निहार रही हैं।

५ हरी=भगवान कृष्ण। धेन=गाय। झरुखां=वातायनों। झांकै=देख रही हैं। भव्वना भूप=सुंदर समूह। भळाव=सम्हला रही हैं।

६ इकी दुकी=इक्की-दुक्की। चौवटे=चौराहे पर। ऊभी=खड़ी रह गई, ठहरी। सांम=श्याम। सुरभ्भी=गाय। हेला=परिमिलित। मिळै=मिलते हैं। वाळला=माल। जाणि=मानो। भेला=साथ।

पुळी[1] ग'र- गोसार आवी[3] प्रटट,
    त्रि णी उजटोप[4] समद्र[5] तरट ।
महाराग सोधा[6] तणी मोड[7] माण,
    हरी मजरी[8] तिल्गर वण[9] हाथ ॥ ७ ॥
पई[1] पाराळी मिगळी[2] गारा[3] ता ।
    गर माळ गुजा[4] स्रज माळ माना ।
गर जागरा सामरा प्र र मद्दा
    जमूरा रण तार[5] जाटोग जड्डा ॥ ८ ॥
रमवा गर[1] गाय मृ हर गाग[2],
    तर[3] गाजिय गार आग विभाग[4] ।
पदुठ र गाय म्हो विगारी[6]
    विया मारग्ग रोर यहू[8] गिनारो ॥ ९ ॥
गगपार[1] पिडार धा दोट पास,
    ल्यिा[3] ग्वरडी रय[4] ऊभा हुलाग ।
घड्-गडिय गेंद मदान परा[5],
    घणी घूमर उवर घेर धरी[6] ॥ १० ॥
झिल आवना रूग्ट[1] हक घेर
    फिरी राम चोटा बही[3] दोट फेर ।
मयी आवरो[4] माणिया[5] सत गानी
    रम सग गोवाळिया रगराता ॥ ११ ॥

---

७ [3] पुरे [ग], पुरा [घ], परे [ड] - नयर [ख] नगरे [ग] [3] कोधा [ख ग] कीधी [घ] [4] फिरवनश [ख], फिरवलस [ग], [5] सिंधु [ख ग], [6] सुधा [ख], सुधा [ग], [7] सोढ [ड], [8] सुदरी [ग घ], [9] बीण [ख] ।

८ [1] माह [ख ग] [2] सगउा [ख], सगली [ग] [3] हेकसाता [ख ग], [4] स्रग बाल गोवाल गाता [ख], [5] आयुणा [ख], [6] मीर [ड] ।

९ [1] साम [ड], [2] रगा [ख] [3] मही [ख], [4] विमगा [ख] [5] सारी [ख ग], [6] विस्तारी [ख], [7] जोष [ख ग], [8] दुहे [ख] दोनू [ग] बने [ड] ।

१० [1] बाल [क], [2] दोय [ड], [3] क्रिया लाकड़ी कथ गेन्री फला से [ख ग ड] [4] गज [ख], [5] घर [ग] [6] फेरी [ड] ।

११ [1] उलटा [ख ग] [2] दोट [ख ग], [3] करे [ग ड], तणो (घ), [4] माकुडे [ग], माकड़ो [ड], [5] खेलते [ग] ।

सारी गायें चल पड़ीं और नगर से निकल कर समतल भूमि मे आ गई जसे सागरतट पर त्रिवेणी उलट आई हो । श्रीकृष्ण तिलकयुक्त मस्तक पर हरी तुलसी और सौंधा की सुवासित सुगंधि धारण किये तथा हाथों मे बासुरी लिये आ रहे हैं ।७।

बासुरी एव सींगा के बजने की ध्वनि हुई । व्रज बालकों के शरीर पर गुजाओ की मालाए शोभित हो रही थीं । इधर उधर वाले सारे गोप-बालक यमुना तट पर परस्पर शब्द करने लगे ।८।

खेलने के लिए सब बालकों ने एक स्वर से कहा कि—हे कृष्ण ! आप हमारे साथी (गोल) बांट दीजिए । बकुण्ठपति श्रीकृष्ण ने अच्छी तरह विचार करके बराबर के लोग दोनो ओर बाट दिये ।९।

दोनों ओर अपार गोप बालक कधों पर लाठिया लिये उल्लसित हो रहे थे । इतने मे ही गढे हुए मैदान से गेंद को मदान के अन्दर घुमाने का प्रबन्ध करते हुए घर लिया ।१०।

मुख्य खिलाड़ियों मे प्रमुख खिलाडी श्रीकृष्ण खेल में मस्त तथा लीन होकर ग्वालों के साथ खेल रहे हैं । वे अधर मार्ग से आती हुई गेंद को एक ही चोट से उलट देते हैं एव 'राम चोट' कहते हुए उस गेंद की चाल को पलट देते हैं ।११।

---

७ पळी=चलकर । न'र =नगर । नीसार=निकलकर । प्रहट्ट =सम तल भूमि पर, चौक में । तट्ट=किनारे पर । सौंधा = द्रव्य, माथे में डालने का सुगंधित मसाला । सोढि=सुगंधि । माथ=मस्तक पर । मजरी=तुलसी । वेणु=बासुरी । हाथ=हाथ में ।

८ वई=बजी । बांसळी=बांसुरी की । सिंगळी=सींगी की । नादवा=ध्वनि । तां=वहा पर । गातां= शरीर पर । आमथा समला=इधर उधर वाले । प्रथ सद्दा=परस्पर शब्द करने वाले । आहीर वद्दा=अहीर बालक ।

९ रमेवा=खेलने के लिए । हेक=एक । राग=आवाज से । विभागै=हिस्सों में बाटना । रूडी=अच्छी । सारसा=समान । वेहूं=दोनों । किनारो=किनारे, तरफ में ।

१० पखेपार=अपार । बंध=कधों पर । हुलास=उल्लसित हो रहे हैं । मैदान=खेलने का चौगान । घणो=बहुत । घेर=घेरे में ।

११ ऊमट=मोड देते हैं । मेर=प्रहार से । फिरि=घूमकर, पुन । दोट=चलती हुई गेंद । मभी=मुख्य । आकरो=तेज । मातो=मस्त । रम=खेल रहा है । रग राती=लीन होकर ।

मिल नाट गांमो[1] गमी[2] दाट माथै,
    हुई दुहै[3] मल्ग तणा हूठ हाथ ।
घटान[4] घणू मातद तीर[5] नाड[6],
    जमूना तण नागिवी नीर जाड ॥१२॥

दशे[1] लार वाही नम्यो ग्रच्छ[2] टाळी,
    भरो झप[3] टाळी द्रहे नाग वाळी[4] ।
माळीनाग रा[5] रा ठ गभाळ ग्या
    लयो जाण मून्यो दवौ[6] मच्छ लवा ॥१३॥

मडो[1] दूसरी मेरु मलत माथे,
    हिव[2] उनरा वात गोवाळ हाथे ।
कर[3] मोन गऊ नमतय[4] काहा,
    जोधै धेन घडोक[5] काठ जम ना ॥१४॥

जदुनाथ फाळी समा[1] वाय जाड,
    घणो भोम नाखी चढा वान घोड ।
ऊभा[2] गाय गावाळ[3] झूरत जार,
    हाहाकार हयकार ससार मार ॥१५॥

सुण्यो वात आघात माता साही,
    जसोदा ढळी कदळी[1] खभ जेही ।
सबाहे[2] मखी लार हाली सयाणी
    रहावी जिचाळ थकी नदराणी[3] ॥१६॥

---

१२ [1] प्रामो [ग], गामा [च] [2] सभी [ड घ] [3] दूध [ग], दुद्ध [ड], [4] वड व [ड], [5] नोट [ख ग], फेर [ड] [6] वाडे [ट] ।

१३ [1] दहा [ख ग] दह्र [ड], [2] ग्रग्र [ग] [3] झांफ [ख], झंप [ग] [4] माली [ख ग ट] [5] सु [ख ड], [6] द्रहे [ग] ।

१४ [1] मिय [ख] रि [ड] [3] करविण [ख], [4] नम देव [ख], नमदेय [ ], [5] ढोढव [ख] घेडीक [ग], धुकार [ख] ।

१५ [1] सरीसो बय [ग], [2] ऊभी [ग], [3] गोवार ।

१६ [1] कदळो [ग] [2] समाहे [ग] [3] व्रज राणी ।

दोनों ओर के खिलाड़ियों के सम्मिलित हाथों से गेंद की सभी चालों पर सामने सामने प्रहार होने लगे तथा यमुना तट पर अत्यन्त निकट ले जाते हुए गेंद को यमुना के गहरे पानी में डाल दिया।१२।

गेंद के पीछे श्रीकृष्ण वृक्ष की डाल पर चढ़े और जहां पर कालिय नाग का कुण्ड था उसमें छलांग लगाई। श्रीकृष्ण, कालिय नाग का घर स्मरण करके इस प्रकार कूदे मानो लुब्धक (किलकिला पक्षी) मछली प्राप्त करने के लिए समुद्र में कूदा हो। १३।

खेले जा रहे खेल के ऊपर अन्य खेल रच गया। अब ग्वालों के हाथ से बाल चली गई। श्रीकृष्ण को तीनों लोक नमस्कार करने लगे और यमुना के तट पर खड़ी हुई गायें स्तब्ध होकर देखने लगीं।१४।

'पशुपति श्रीकृष्ण कालिय से बाहु युद्ध करेंगे' यह बात घोड़े चढ़कर (अत्यन्त तीव्र गति से) दूर दूर तक पहुंच गई। गायें एवं ग्वाल खड़े हुए आत्तनाद पूर्वक विलाप कर रहे थे। सारे विश्व में हाहाकार मच गया।१५।

यह सुनकर स्नेहमयी माता यशोदाजी इस बात के आघात से कदली स्तम्भ की तरह गिर गई। समझदार सखियों ने उन्हें सम्हाला और फिर वे उनके पीछे पीछे चलने लगीं, किन्तु चलते चलते वे मार्ग में ही पथ गई।१६।

---

१२ चोट=प्रहार। साम्ही=सामने। सबी=सारी। मल्ला=खिलाड़ियों। तणी=की। संकड़=निकट। नांखियो=डाल दिया। नीर जाडै=गहरे पानी में।

१३ लार=पीछे। मच्छ=वृक्ष। डाली=शाखा। झप=छलांग। कालीद्रहे=कालिय नाग के कुण्ड में। संभाल=स्मरण करके। वेश्म=घर। लखी=लुब्धक पक्षी (राजस्थान में इसे किलकिला भी कहते हैं)। मच्छ=मत्स्य। दधी=समुद्र। लेवा=लेने के लिए।

१४ खेलत=खेले जाते हुए। म थ=ऊपर। हिव=अब। त्रीन=तीन जुग=देखती हैं। थंढीय=स्तब्ध। कंठ=किनार पर।

१५ साम्ही=सामने, से। बाथ जोड़=बाहु युद्ध करेंगे। भोम=पृथ्वी। ऊभा=खड़े हुए। झूरत=विलाप कर रहे थे। धार=प्राप्त। सार=समस्त।

१६ आघात=प्रहार। ढळी=गिर पड़ी। खंभ=स्तम्भ। सबाहे=सम्हाल करके। हाली=चली। सयाणी=चतुर। रहाणे=राह के। विचालै=बीच में।। थकी=शिथिल हो गई।

तबै नदरी लार[1] आहीर टोळा
खड आपड हेक हेका[2] खघोळा[3] ।
जुवै[4] जोपिता जूथ भेळी जसूदा,
वपैयो[5] हुई, कानह्लो मेघ वूदा ॥१७॥

विहू[1] लोचनै नीर धारा वहती,
कनैयो[2] कनयो जसूदा वहती[3] ।
कलदी[4] तण आइ[5] लोटत[6] माठ,
गयो जाणि[7] चिंतामणि रत्न गाठ ॥१८॥

बलह्देव वूझ्यो[1] दिखाळ्यो[2] सुदामा,
रम्यो साम ते ठाम जोवत रामा ।
लिया जीह दते नही लीक[3] लोपी,
गुड[4] गाय गोपाळ झूरत्य गोपी ॥१९॥

ऊभी घूट[1] हेको करी[2] जात आरा,
थभेरी म[3] हूका लहैका मथारा ।
जसोदान के[4] क्षप साघी जमना
पहे लाभियो मान हू जात पन्ना[5] ॥२०॥

अचाणक ऊभो दरब्बार आय,
मिळी नागणी हेक हका मिळावै ।
इस[1] वाल गोपाल पामो अचभा,
रही दोवळी[2] नागणी देव रभा ॥२१॥

---

१७ [1] नारि [ग घ ङ] [2] हाली [ख], [3] हलोले [ख घ], गलोले [ग ङ], [4] जाई जोवती [ख ग], [5] बाबीयो [ग] ।

१८ [1] बहै [ख ग] [2] का हुवो काह्वुवो [ग], [3] करतो [ख] [4] कालीन्द्री [ख], कुमीन्द्री [ग], [5] आवि [ख ग] [6] झूरति [ख] [7] नग [ख ग]

१९ [1] वूझ [ङ घ] [2] दिखाबो [ख] न्हिाल [ग घ घ] [3] निज [ख ग] लजा [घ], [4] गयो [ख में नहीं ग] ।

२० [1] घोट [ख ग], छोट [ङ] [2] करिजास [ख घ] करैनास [ग], कर जाम [ङ], [3] थभ थाम ऊभो [ग घ], थभे ऐम [ङ] [4] यह पर्याय नहीं है [ख ग घ], [5] पेहलो मरे मात वान पन्ना [ङ] ।

२१ [1] थामै [ख ग] [2] देवटो [ग]।

तभी नद के पीछे अहीर समूह एक दूसरे के कंधों को पकड़ पकड़ कर चलने लगा तथा स्त्री समूह में यशोदाजी चातक के समान बनी हुई कन्हैया रूपी मेघ बूंदों को देख रही थीं ।१७।

यशोदाजी कन्हैया ! कन्हैया !! कहती हुई, दोनों आंखों से अश्रुधारा बहाती हुई यमुना के तट पर लोट रही थीं मानों किसी दीन हीन के पास से चिन्तामणि रत्न खो गया हो ।१८।

बलदेव के पूछने पर सुदामा ने जिस स्थान पर श्रीकृष्ण खेले थे वह स्थान बताया । उसे यशोदाजी देख रही थीं । पास ही गायें, ग्वाल बाल और गोपिकाएं, दांतों तले ओष्ठ दबाये हुए विलाप कर रहे थे ।१९।

समस्त गायें गोप एवं ग्वालिनियां मानसिक पीडा न सहने के कारण उच्च स्वर से आर्त्तनाद करती हुई यूथ बनाए खड़ी थीं । इधर भगवान श्रीकृष्ण ने यमुना के अन्दर छलांग लगाई । उनको पानी के अन्दर मार्ग मिल गया । वे जल में ऐसे विचरण कर रहे थे मानों सर्प पानी के अन्दर विचर रहा हो ।२०।

श्रीकृष्ण को अकस्मात् दरबार में आया देख समस्त नागिनियां परस्पर एक दूसरे से मिलीं । बालक गोपाल को देखकर विस्मय को प्राप्त हुईं तथा उनके आसपास अप्सराओं की तरह एकत्र हो गईं । २१ ।

---

१७ तब=तभी । आहीर टोळ=अहीरों के समूह में । चाल=चले । झापट=पकड़े हुए । हेक हेका=एक दूसरे के । खघोल=कंधे । जुव=देखती है । जोषित जूथ=स्त्री समूह । नेनी=साथ । बपयो=चातक पक्षी ।

१८ बिहूं= दोनों । लोचन=नैत्रों से । वहती=बहाती हुई । कहती=कहती हुई । कलदी=यमुना । तण=के । कांठ=किनारे । जाणि=मानो । रक=दीन । गांठि=पल्ले से ।

१९ बूझ्यो=पूछा । रम्यो=खेला । ते=वह । ठांम=स्थान । जोवत=देख रही थी । ओठ=ओष्ठ । नीर=नजीर । गुढे=समीप । झूरत=विलाप कर रहे थे ।

२० घूट=यूथ जरया । हेको=एक । धारा=आर्तनाद । थभेरी म=रुकनी नहीं थी । दूका=मानसिक वेदनाएं, कसकें । सहेरा=दाब । मवारा=करे । पहे=मार्ग । लाभियो=मिला । पन्ना=सर्प ।

२१ अचाणक=अकस्मात्, सहसा । इख=देखकर । पामी=पाई । अचमा=आश्चर्य । दावळो=इद गिर्द, आसपास । देवरमा=अप्सरा ।

जपै [1]नागपत्नी[2] सत्री रूप जोती
महाभद्र जाती तणा बान[3] मोती ।
पुणी[4] सामळी गात्र पीळा पिछोरा,
फणा ऊपरा नग ओप कदोरा ॥२२॥

पगा[1] घूघरी रोळ आणद पुजा,
गळ हार मोती रुळ माळ गुजा ।
विच दुलडी हेक चौको विराज,
जिसौ[2] राजवो केहरी रूप राज ॥२३॥

बिहू[1] बध बाजू तणा नग बाहै,
मणी[2] नग हीरा तणी ज्योत मा[3] ।
अहीनारि जप लई[4] माल ऊची,
पहुच प्रभूर लटक्क प्रहूची ॥२४॥

सब सुदरी सुदरी देख मोही[1]
वळ दाडिमें दत चोरी विमोही ।
अधूरं[2] अमृत न जाय अघाई
झिगे कुडळा लोळ[3] कपोळ झाई ॥२५॥

इसै नासिका सिख्य[1] दीपक्क ऐरी,
पळी चप जाण ऊळी[2] रूप केरी ।
नवा नेह दीरघ्घ पक्ज नेत्र
सोभा मीन गजन मृगा सहेत्र[3] ॥२६॥

---

२२ [1] जपि [ग] जोव [स] [2] पुत्री [ग] [3] आवध [स ग] [4] पुण [ग] पणी [ग] ।

२३ [1] पदे [ग] पाग [स], [2] रमो [स]

२४ [1] बाहा [स] बगे [ग] [2] बाहुला [ग] [3] मणि जोत हीरा तणी घण माहे [ग] [4] नीचा [ग] बही परी रीझै पुनह ची [ग] ।

२५ [1]सो रे [ग ब ग] [2] दधर [स] [3] कान [स] ।

२६ [1]छिप [ग], जाणि [ग] [2] सुधी [ग] [3] सनेत्र [ग] महेरो [ग]

वे क्षत्रिय बालक श्रीकृष्ण के स्वरूप को देखती हुई कहने लगीं कि—अरे! इनके कानों में तो महामद्र जाति के मोती हैं तथा श्याम गात्र पर पीताम्बर सुशोभित है एवं उसके किनारे पर नगीने और करधनी शोभायमान हो रहे हैं।२२।

पैरों में आनंद का समूह, घुंघरुओं का शब्द हो रहा है तथा गले में मोतियों का हार एवं गुंजाओं की माला झूल रही है। साथ ही दो लड़वाली सांकल के बीच में एक चौकी शोभा दे रही है। जिस प्रकार का यह राजकुमार है उसके ही अनुरूप यह सिंह नख शोभित हो रहा है।२३।

दोनों बाहों पर बाजूबंद बांधे हुए हैं जिनके अन्दर मणि हीरे आदि नगीनों की ज्योति प्रकाशमान हो रही है। एक दूसरी नागिन बोली—अरे देखो! भगवान के पहुंचे में जो यह पहुंची लटक रही है, यह तो बहुत ही ऊंची कीमत में खरीदी गई है।२४।

सभी सुन्दरियां मुद्रिका को देखते ही मोहित हो गईं। फिर सम्मोहित करने वाली दाड़िम के बीजों के समान दांतों की पंक्ति थी जो अधरामृत पान से तृप्त ही नहीं हो रही थी, साथ ही कपोल चंचल कुंडलों की आभा से प्रकाशमान हो रहे थे।२५।

इनकी नासिका दीपक की लौ के समान (तीखी) दिखाई दे रही है यह मानों चम्पे की कली एवं लाप की नोक है। नवीन स्नेह के समान सवर्द्धनशील बड़े नेत्र, कमल के समान शोभायमान हो रहे हैं। इसप्रकार मानों मीन, खंजन एवं मृगों की सभी छटा यहां एकत्र हो गई है।२६।

२२ जप=कहने लगी। खत्री=क्षत्रिय। जोती=देखती हुई, ज्योति। सांमळो=श्यामवर्ण का। गात्र=शरीर। पीला पिछोरा=पीले रंग का वस्त्र। कणा ऊपर=किनार पर। नग=नगीने। ओप=सुशोभित हो रहे हैं।

२३ रोळ=शब्द। रुळ=झूल रहे हैं। बिच=मध्य में। केहरी नख=शेर का नाखून। राज=फबता है।

२४ बिहूं=दोनों। बाहे=भुजाओं में। जोती=ज्योति। माहे=अन्दर जप=कहती है। मोल=कीमत। पहुंची=पहुंचे का आभूषण।

२५ सुंदरी=मुद्रिका अंगूठी। मोही=मोहित हो गई। वळे=फिर। दाड़िमे=दाड़िम के बीजों के समान। अधूर=अधरों के। अघाई=तृप्ति। भिग=प्रकाशमान। लोळ=चंचल, चपल। झाई=प्रतिबिम्ब।

२६ जिसड़=जो। ऐरो=इनका। चंप=चम्पा। लळी=नोक। लप=लाप नामक घास। दीरघ=बड़े। पंकज=कमल। सोभा=शोभा।

दोहू भ्रक्कुटी कोर हु[1] देगि दू है,[2]
भ्रम[3] भ्र ग सूता अली[4] जाण भूहै ।
अरो सकुली जाणि कीधी अलक्क,
तणों केसरी कस्सतूरी तिलक्क ॥२७॥

यधी चोळमा[1] रग रगी बिरगी,
सुहे ऊपरा पाघ लागो सुचगी ।
चवे- नागणो चद्रका मोर ची ही,[3]
ओपे घोप[4] पावस घटटा अछेही ॥२८॥

अराहै सराहै कर[1] आवलोक,[2]
स्यौ नाग लोका तणो राज लोक ।
ऐसी[3] भागणी कूण जे बूख[4] आयौ
हिंडोलो घलाइ[5] घर हुल्लरायौ ॥ २९ ॥

हुई रुपमयी देव देख[1] हैरा न,
जप जागमी नाग राखो जतन ।
अरू[3] दासव बाळ[4] होसी अवारो,
पगल्ले पगल्ल महल्ल पधारो ॥ ३० ॥

रहा तो घर दाव[1] दूज रहावू,
मोरो घाट वराट एथं न मावू ।
चमकी चमकी सज चित्त[2] चेती,
लुळी[3] पाय लागी वळ लू ण लेती ॥ ३१ ॥

---

२७ [1]मोर [ख,ग], ऊर [ड], स्यामची देख देहे [च], [2]द्रोहे [ङ] [3]भमे [ख ग], [4]सखि [ख ग घ] ।

२८ [1]चोळ [ख], रगमई रग रगे [घ] [2]तव [ट] [3]मूरतो‿ो [ख] मोर तेही [घ ट], [4] चाप पारध [ख], चोप पायर [ग], उप छाख पारिख [घ] ।

२९ [1] बहुं [ग] कीयो [घ] घयू [ट] [2] आविलोके [ग] अव्वलोके [ङ], [3] एही [ख], [4] पु खज [घ] [5] द्वयारे [ख च], पधारे [घ] ।

३० [1] देखी [ङ] [2] हरने [ख] कुराने [ग] हिर ये [ङ] [3] अद्रो [ख], अरो [ग], ओगे [ङ] [4] बोन [ख] ।

३१ [1] देह [ख ग], भाव [घ च], [2] चन [ख], [3] लागू [ख ग] ।

हे सखी ! दोनों भृकुटियों के किनारों को देखकर ऐसा भ्रम होता है मानों दोनों भौंहों के ऊपर भौंरे सो रहे हों और अलकें मानों भ्रमरों की शृंखला हो। इसी प्रकार केसर तथा कस्तूरी का तिलक भी शोभायमान हो रहा है।२७।

विविध रंगों में रंगी हुई चोळमां बाधी हुई है और मस्तक पर टेढ़ी पगड़ी भली शोभित हो रही है। इसके अतिरिक्त मयूर-चंद्रिका भी लगाई हुई है। नागिन कहती है कि—इनकी प्रभा तो वर्षा ऋतु की अनहीन घटा के समान प्रतीत हो रही है।२८।

इधर उधर से श्रीकृष्ण को देख कर नागलोक का दरबार साधारण लोगों से खचाखच भर गया और वे लोग कहने लगे कि—ऐसी कौन भाग्यवान है जिसकी कोख से इस (बालक) ने जन्म लिया और जिसने अपने घर पर हिंडोला डालकर हुलराया।२९।

स्वरूपमय भगवान श्रीकृष्ण को देख कर सभी आश्चर्यचकित हो गए और कहने लगे—नागराज जग जायेगा,इस बालक को यत्नपूर्वक रखो। ऐसा सुनकर नागिनें भगवान कृष्ण से कहने लगीं—वत्स ! तुम्हें देर तो होगी फिर भी आप धीरे धीरे हमारे महल में चले चलो।३०।

यह सुनकर भगवान कृष्ण ने प्रत्युत्तर दिया कि—यदि तुम्हारे घर रहूंगा तो किसी अन्य अवसर पर रहूंगा, मेरा स्वरूप विराट है अत अभी यहां नहीं समा सकता। भगवान के मुख से इस प्रकार का कथन सुनकर सभी नागिनें चौंक चौंक कर अपने मन में सावधान होती हुई भगवान के परों में झुककर पड़ने लगीं और बलैया लेने लगीं।३१।

---

२७ कोर=किनारा। भ्रम=सन्देह। भ्रमी=सखी, भौंरा। भ्रू है=भौंहों में। सकली=शृंखला। कीधी=बनाई।

२८ चोळमां=वतमान चोल के स्थान पर पहना जाने वाला वस्त्र। रंगीबिरंगी=विविध रंगोंवाली। भाती=टेढ़ी। चंगी=भली। वप=शोभायमान। चोप=कांति। पावस=वर्षा ऋतु। अछेही=अनहीन।

२९ अराहे=बिना मार्ग के। कर मावलोक=देख करके। रुधो=रुक गया, भर गया। लोकै=साधारण लोगों से। जे=जिसकी। कूख=कुक्षि। हिंडोळो=पलना। हुलरायो=दुलार किया।

३० हैरान=चकित। जंपै=कहने लगे। जत न=यत्न पूर्वक। बाळ=बालक। पधारो=चलो।

३१ दाव=अवसर। घाट=स्वरूप। वराट=अनन्त। तवी=इस स्थान पर इससे। मावू=समा सकता हूं। चेनी=सावधान हुई। झुटी झुककर। लू ण=बलैया।

सुण्यो रूप वेद मु पेख्यो मजही,[1]
वडा भागरी नागरी-नारि[2] वेही ।
माहो मात[3] आणद दास[4] मुरक्की,
वालाव [5] भळ[6] नाथ नाम्वी मुरक्की ।।३२।।

कठाहूत आयो थठ काज[1] वेहा
ग्रहा भूल्यो वापरो, साप गहा ।
भली[2] नागणी नावियो राह भूलो,
देवो[3] आप री काज लीधो[4] दड्गो ।।३३।।

सटवट मु हे[1] नागणी वोल सारो,
प्रभू जागमी[2] मूझ पाछा पधारो ।
काळो-नाग[3] सू लीजिय वगि वानो ।
पख्यो[4] तान साझ चढ मान पानौं ।।३४।।

नही[1] नागणी वोल ऐहा[2] निकास
वस रस्सण स्स्सण विरसवा[3] से ।
किही[4] कोर चपी, रही[5] मा[6] वकाव
इसो वाळ देखी दया मू झ[7] आवं ।।३५।।

हजारा मुवा[1] जागसी नाग इवा,
वडीलो[2] न छाड निराधार ऐवा[3] ।
महाकाळ काळी न को[4] बाळ मान
पग्गी दोतदो[5] आज ही[6] बाघ पान ।।३६।।

---

३२ [1] सुदेई [ख], सवायो [ग] [2] नागी भूलीन म यो [ग], [3] महामोह [ख ग] महामोद [घ] [4] दये मुरकी [ख ड] [5] मुलाह म [ख ड] [6] थळी [ख ड]।

३३ [1] काम [घ] [2] भोळी [ख घ], भूलो [ग],[3] निय [ग], दियो [ड], [4] लाधी [घ], दीघ [ग] आप [ड] राख [घ] ।

३४ [1] मुन [ख ग घ], मु ही [ड] [2] जागिस्य [ख घ] [3] कुळी [ग], काना [ड] [4] पांर [ख] परा [घ], परो [ड], ।

३५ [1] महा [ग] [2] म्हा [ग] ऐसा [ड], [3] व्रसवासे [ख], [4] कहे [ख] कहो [ग] कहो [ड], [5] रहे [ख] [6] माथ्य काव [ख], रहै मावि [ग घ], भाव काव [ड] [7] मोय [ड] ।

३६ [1] मुहे [ग घ] [2] वडीनो [ख], न डुलो [घ ड], [3] लेवा [ख] नेवा [घ ड] [4] न कयू [ख], [5] दो यणी [घ] बोकडी [ड], [6] [illegible] [ख ग]।

भगवान के जिस स्वरूप का वर्णन वेदों मे सुना था वही स्वरूप आज सबने प्रत्यक्ष देखा अत वे नाग नारियां बड़ी भाग्यशालिनी हैं। नागिनें परस्पर हसती हुई अपार आनन्द का कथन करने लगीं। इतने में ही भगवान की बोलों ने उन पर फिर मुरकी डालदी ।३२।

एक नागिन कहने लगी कि—लाला! तुम कहा से आए हो और यहां पर तुम्हारा क्या काम है ? कहीं तुम अपना घर तो नहीं भूल गए हो ? यह सर्प का घर है। ऐसा सुन कर भगवान श्रीकृष्ण बोले—हे भली नागिन! मैं मार्ग भूल कर यहां नहीं आया हू वरन् तुम्हें तुम्हारी प्रतिष्ठा रखनी है तो मेरी गेंद जो तुमने लेली है उसे लौटादो ।३३।

हे नागिन! तेरा यह कटु वचन—"मेरा स्वामी जाग जाएगा तुम वापस चले जाओ" मेरे हृदय मे खटक रहा है। नागिन बोली—मैं आपसे फिर कह रही हू—आप कालिय नाग से शीघ्र किनारा करलो अन्यथा तुम्हारा पिता इधर उधर खोजता फिरेगा और माता के (स्तनों मे) स्तन्य चढ़ जाएगा ।३४।

भगवान श्रीकृष्ण कहने लगे—नागिन! तुम्हारी रसना के अन्दर क्रुद्ध सर्प के विष के समान निवास करनेवाले वचन मत निकालो। किसी अन्य नागिन ने उसका पल्ला दबाते हुए कहा—अरी! ठहर, क्यों बकवास कर रही है। ऐसा बालक देखकर मुझे दया आ रही है ।३५।

क्योंकि हजार मुखोंवाला कालिय नाग अभी जाग उठेगा और वह हठीला इस प्रकार के आश्रयहीन को नहीं छोड़ेगा। महाकाल-स्वरूप कालिय कोई बालक नहीं जानेगा! (बालक समझ कर नहीं छोड़ेगा।) आज यह कृष्ण स्वरूप बकरी, बाघ स्वरूप कालिय के पाले पड़ गई है ।३६।

---

३२ पेख्यो=देखा। माहो माह=परस्पर। दाप=कहने लगीं। मुरककी=स्मित हास्य से। बुलाव=बचनों ने। नाखी=डाली। मुरककी=वशीकरण औषधि, मुरकी।

३३ कठाईंत=कहां से। अठ=यहां। केहा=कैसा। ग्रहां=घर। नाविमो=नहीं आया। राह=मार्ग। लीधो=लिया हुआ।

३४ मुहे=मेरे को। खारो=कटु। मूझ=मेरे। पाछा=वापिस। वेग=शीघ्र। कोनी=किनारा। सोध=ढूढता फिरेगा। थानों=स्तन्य

३५ ऐहा=इस प्रकार के। रसणी=रसना मे। डसणो=डसने वाले। विखलका से=विषधर के समान। किही=किसी ने। कोर=किनारा चपी=दबाया। रहो=ठहर। मूझ=मुझे।

३६ हमां=अभी। अडोलो=हठी। निराधार=आश्रयहीन। अेहा=ऐसा, इस प्रकार का। मान=समझेगा। दोवड़ी=बकरी। पान=पाले।

आवो[1] नागणी नाग वगो जगाडो,[2]
अठै माडमा आज वहू[3] असाडो।
रढीजे इसा[4] मात आग रढाळा,
चवीजै नही बोर, ऐ काळ चाळा[5] ॥३७॥
न दीठो कदीयै न[1] नेत्र निहाळी,
काने ही नथो[2] साभळयो नाग-काळो।
दरब्बार काळो तणो मेल्हि डावो,
खड जम राणा[3] न को लाभ ख्यावो ॥३८॥
चाळा मा कर[1] मामुहा जुद्ध चाळा,
बधारचा[2] न थारै अज बाळ वाळा।
खेलीजै रमीज पिता[3]-मातु खोळा
भरीज नही आभ सू बाथ भोळा ॥३९॥
जुडवा[1] जु तू[2] नाग काळो जगाव,
अज मुरख प पान री[3] मोडि[4] आव।
जुन वस धारी परस्स समही,[5]
काळी नाग सू जुद्ध[6] रो लाग केही ॥४०॥
कछवा[1] वाल देख किसू[2] काळ छडै
फटक्का जटक्का[3] नही तूझ येड।
दुरगा दुबाहा दुहल्ला[4] दुझल्ला,
भडा रा नही अभला झूल[5] भल्ला[6] ॥४१॥

---

३७ [1] जा हे [ख] [2] जगावो [ख] [3] वबे [ग घ] वोहू [ङ], [4] इसु मात [ग घ] मलोमात [ङ] [5] चविबोली मितव्य मकाल बाला [ख], चव बाल एह चवा काळ चाळा [ग] चवई बोल ऐहई चवई चकचाळा [घ]।

३८ [1] कदुमेण्य [ख घ] जविचाण [ग], कदेईन [ङ] जदीकेण [च] – धी [ख], कनेही नही [ङ], [3] न चपा [ख] निश्रयो [ग], विचे [ङ]।

३९ [1] करतो [ख], समा [ख घ], [2] बधे रोम थारे [ग], बधेचान थारे [ङ], [3] यह पद्यांश नहीं है [ख ग], धणू [ङ]।

४० [1] जडेवा [ख], [2] न तु [ग], [3] रा [ग], नहीं दे [ङ], [4] मोड [ख], [5] जुन वस धारी परास स जेहो [ख घ च], [6] सग्राम [ङ]।

४१ [1] छावा [ख], छवा [ग], चवा [ङ], छवि [च] ■ कमू [ङ], [3] मटका [ग], हटक्का [घ], [4] तू हाथो [ख], तू हाटव [घ], मोष[5] [ख], कुस [ङ], [6] माया [ङ]।

ऐसा सुनकर भगवान श्रीकृष्ण कहने लगे—हे नागिन ! तुम शीघ्र जाकर कालिय को जगा दो, हम दोनों यहां पर अखाड़ा रचेंगे । नागिन बोली—लाल ! इस प्रकार का रोना मां के सामने रोना (इस प्रकार मां के सामने मचलना) यहां ये काल को प्रेरित करने वाले वचन मत कहो ।३७।

तुमने कभी कालिय नाग को आंखों से निहार कर नहीं देखा है और न कानों से सुना है । कालिय के दरबार को यमराज भी बायां रख कर चलते हैं और तुम भी कोई लाभ नहीं उठाओगे ।३८।

तुम युद्ध को प्रेरित करने वाली चालें मत चलो (अपनी शक्ति और उम्र से बढ़ करके स्वांग मत करो) । अभी तक तुम्हारे बचपन के केशों का मुण्डन भी नहीं हुआ है । तुम अपने माता पिता की गोद में खेलना, कूदना । भोले ! आकाश को बाहुपाश में नहीं भरा जा सकता ।३९।

तुम कालिय नाग को युद्ध के निमित्त जगाते हो ! अभी तक तो तुम्हारे मुंह से दुग्ध पान की गंध आ रही है । हृदय से लगाकर स्पर्श करने जैसी तुम्हारी अवस्था देखते हुए कालिय नाग से युद्ध का लगाव कैसा ।४०।

मैं बालक देखकर कहती हूं कि—क्यों मौत को बुला रहा है । तेरे पास सेना आदि भी कुछ नहीं है और दुरत्यय, दुवह, दुलभ, युद्ध व एव श्रेष्ठ योद्धाओं का अच्छा समूह भी नहीं है ।४१।

---

३७ वेगो=शीघ्र । मठ=यहां । अखाड़ो=दंगल । रडीब=रोना (क्रि०) रडाळा=रोना । चवीज नहीं=नहीं कहना । काळ चाळा= काल के उपद्रव, काल को प्रेरित करने वाले ।

३८ दीठो=देखा । निहाळी=निहार कर । नथी=नहीं । सांभळयी =सुना । डावो=बायां । सर्ड=चलते हैं ।

३९ चाळा=चाल, नखरा । मा=नहीं । सामुत्रा=स मुख । जुद्ध चाळा=युद्ध के उपद्रव, युद्ध को प्रेरणा देने वाले । वधारपा =काटे । अजे=अभी तक । बाळ=केश । खोळा=गोद में । बाथ=आकाश । बाथ=बाहुपाश ।

४० जुड़ेवा=युद्ध करने को । पै पानवी=दुग्धपान की । सोहि=गंध जुन=देखकर । परसस=प्यार करें । लाग= लगाव, कर ।

४१ च्ह्वां=कहती हूं । किंयू =क्यों । दुरत्यय भटवर्ग=प्रचण्ड योद्धा समूह । केडे=पास । भडारा=वीरों के । अच्छला=श्रेष्ठ । भून=समूह ।

न [illegible][1] [illegible], [illegible] [illegible] रह्या,
[illegible] न [illegible] [illegible][2] [illegible] रह्या ।
[illegible] [illegible] [illegible] न [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] ॥४२॥

[illegible] न [illegible] न [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रह्या ।
[illegible] [illegible][1] [illegible] [illegible] न [illegible],[2]
[illegible][3] [illegible], [illegible] ॥४३॥

[illegible] [illegible] [illegible][1] [illegible] न ठाई
[illegible][2] [illegible] [illegible] न पाई ।
जरी [illegible][3] टोप नाहीं [illegible]
[illegible] न [illegible] न [illegible] न [illegible] ॥४४॥

फिर हवरी सत्य[1] नाहीं फरस्सी
[illegible] [illegible][2] कट्टार वरस्सी न[3] वरसी ।
टबारी न आरी न अडार टाषी,
[illegible][4] न [illegible] न कमाण वाषा ॥४५॥

नफेरी न भेरा न निस्साण रह्या
रिणतूर बाज न गाज रवह्या ।
न को बाजदे पाय[1] पायाळ[2] बज्जई[3]
छिण ऊफण रेण रेणा न छज्जई[4] ॥४६॥

---

४२ [1] नहीं [इ] [2] रण्ण उछाह बहा [ङ] ।

४३ [1] बाहु बाहु [घ], [2] महथी [ङ],[3] नही जीण संगासगा जीव रसी [ख ध], जूबे [ङ] अंग अगे [घ] ।

४४ [1] हाथ रणीन ठाई [ख ग], [2] प्रहुंच प्रभूर [घ घ], [3] जरी छेकड़ी [ख ग] ।

४५ [1] सेल [ख ग] [2] कचोनो [ङ], [3] स [ङ], [4] बधाए [ख ग ङ],

४६ [1] बाजनों पाय [ख], बाजना धाय [ङ], [2] पइमाळ [ख घ], पेयाल [ङ], [3] बाई [ङ], [4] छाई [ख ङ] ।

नहीं कोई हयदल एव पैदलों का मेघ गजन हो रहा है। लडने के लिए चुने हुए प्रसिद्ध उमराव भी नहीं हैं। चचल भुजाओंवाले सिंह के समान साथी भी नहीं हैं और हठीले घोडे एव बडे बडे दांतों वाले हाथी भी नहीं हैं।४२।

घोडों का और सुभट्टो का समूह भी नहीं है और पाखरों मे लगे हुए घुघरुओ की झनकार भी नहीं सुनाई दे रही है। बाहुओ के अदर हजार कीलो वाला बाजूबद तथा शरीर पर बख्तर एव ओवरखो भी नहीं है।४३।

वीरों के हाथों मे तथा रानों मे यथास्थान राखे के कवच भी नहीं बोल रहे हैं और पहुंचों पर पहुंचिया तथा परों पर लोहे के मोजे भी नहीं हैं इसी प्रकार छवडियो द्वारा जटित निरस्त्राण युक्त कवच भी नहीं हैं। तुम्हारे पास गुप्ति, शक्ति, बर्छी एव गदा नामक शस्त्र भी नहीं दिखाई देते हैं।४४।

विस्तृत सेना मे फरसिया भी नहीं फिर रही हैं और कटिवस्त्र से कटारी भी कसकर बांधी हुई नहीं है। भीषण टकार करने वाले धनुष भी नहीं दिखाई देते हैं। और तो और मामूली बांकी कबाण एव बाण तक भी पास मे नहीं हैं।४५।

नफीरी, भेरी, नगारे एव रणतूर भी नहीं बज रहे हैं और उनसे होने वाला नाद भी नहीं हो रहा है। घोडों के पव प्रहार से पाताल भी नहीं बज रहा है (या घोडों के पावों मे डाली हुई पायलें भी नहीं बज रही हैं) तथा सैन्य पद रज से सूर्य भी ढका हुआ नहीं दिखाई दे रहा है।४६।

---

४२ जुडेवा = युद्ध करने के लिये। उम्मरा = उमराव। नामजद्दा = चुने हुए। सचाळा = चंचल। सचाळा = सिंह। पटाळा = घोडे।

४३ थाघरट्टा = समूह। पाखर = बख्तरों मे। रोळ = झनकार। पट्टा = समूह।

४४ ठव = यथास्थान। ठाई = जचाकर, युक्तिपूर्वक। पाई = परों मे। अरड्डा = कवच। छती = शक्ति।

४५ बबर = समूह, विस्तार। कड छोळ = कटिवस्त्र मे। प्रहार टकी = धनुष। पसाण = पास में तूणीर (?) बांकी = अदभुत, टेढी

४६ भेरी = भेर। निसांण = नगारे। रणतूर = युद्ध के बाजे। घोरै = डाक का, बहुत। बाजरे = घोडों मे। रेण = धूलि। रेणी = सूर्य, आकाश।

न मा[1] हैदळ पन्ठ मप नहा,
        गुन वा न नो उमगा[2] नाम जद्दा ।
मगाळा गुजाळा उगाळा न सायाँ,
        हुठाळा पटाळा दनाळा न हायो ॥४२॥

पाटा न भगा न नहीं पायन्द्रा,
        नहीं पूयग पागर गळ पट्टा ।
गाह चाह[1] बाज् हजाग न गनी,[2]
        नहीं[3] अगि अग, नहीं जीयरग्गी ॥४३॥

टा हापळा राग[1] राग न ठाई,
        म्रहून[2] प्रहूनी लोह मीजा न पाई ।
जडी छगनडी[3] टोप नाही जग्द्दा
        गुपत्ती न छत्ती न वत्ती न गद्दा ॥४४॥

फिर हबरी सच[1] नाही फरस्मी
        पड बोळ[2] कट्टार घरसी न[3] घरसी ।
टपारी न भारी न अढार टावी,
        पपाण[4] न वाण न कमाण वावो ॥४५॥

नफेरी न भेरी न निस्साण-नद्दा,
        रिणतूर वाज न गाज रवद्दा ।
न घा वाजई पाम[1] पायाळ[2] वज्जई[3]
        छिण ऊफण रेण रणा न छज्जई[4] ॥४६॥

---

४२ [1] नहीं [ड], [2] रणण उछाह जद्दा [ड] ।

४३ [1] वाहू बाह [घ], [2] महनी [ड], [3] नही जीएा पगरावरा जीव रसो [ख घ], जूझे [ड] अग अगे [घ] ।

४४ [1] हाथ रगीन ठाई [ख ग], [2] प्रहूंच प्रमूर [घ घ], [3] जडी छिकड़ी [ख ग] ।

४५ [1] सेल [ख ग] [2] कचोली [ड], [3] स [ड], [4] बघाएा [ख ग ड],

४६ [1] वाजनो वाय [ख], वाजनो वाय [ड], [2] पड़पाळ [ख घ], पेयाल [ड], [3] वाई [ड], [4] छाई [ख ड] ।

नहीं कोई हयदल एव पैदलो का मेघ गर्जन हो रहा है । लड़ने के लिए चुने हुए प्रसिद्ध उमराव भी नहीं हैं । चचल भुजाओंवाले सिंह के समान साथी भी नहीं हैं और हठीले घोड़े एव बड़े बड़े दांतों वाले हाथी भी नहीं हैं ।४२।

घोड़ों का और सुभट्टो का समूह भी नहीं है और पाखरों मे लगे हुए घुघरुओ की झनकार भी नहीं सुनाई दे रही है । बाहुओं के ऊपर हजार कीलो वाले बाजूबद तथा शरीर पर बख्तर एव जीवरखी भी नहीं है ।४३।

वीरों के हाथों मे तथा रानों मे यथास्थान लगे के कवच भी नहीं बोल रहे हैं और पहुँचों पर पहुंचिया तथा पैरो पर लोहे के मोजे भी नहीं हैं इसी प्रकार छलडियो द्वारा जटित गिरस्त्राण युक्त कवच भी नहीं है । तुम्हारे पास मुसि, नक्ति, बर्छी एव गदा नामक शस्त्र भी नहीं दिखाई देते हैं ।४४।

विस्तृत सेना मे फरसिया भी नहीं फिर रही हैं और कटिबन्ध से कटारी भी कसकर बाधी हुई नहीं है । भीषण टकार करने वाले धनुष भी नहीं दिखाई देते हैं । और तो और मामूली बांकी कबाण एव बाण तक भी पास मे नहीं हैं ।४५।

नफीरी, भेरी, नगारे एव रणतूर भी नहीं बज रहे हैं और उनसे होने वाला नाद भी नहीं हो रहा है । घोड़ों के पद प्रहार से पाताल भी नहीं बज रहा है (या घोड़ों के पावों मे डाली हुई पायलें भी नहीं बज रही हैं) तथा सैन्य पद रज से सूर्य भी ढका हुआ नहीं दिखाई दे रहा है ।४६।

---

४२ जुडेवा= युद्ध करने के लिये । उम्मरा=उमराव । नामजद्दा=चुने हुए । चचाला=चचळ । लकाला=सिंह । पटाला=घोड़े ।

४३ थायरट्टा=समूह । पाखर=बख्तरों की । रोळ=झनकार । थट्टा=समूह ।

४४ ठव=यथास्थान । ठाई=जवाहर, युक्तिपूर्वक । पाई=पैरों में । जरद्दा=कवच । छनी=जटित ।

४५ बवर=समूह, विस्तार । कद्द चोळ=कटिबन्ध से । प्रहार टकी=धनुष । पत्ताण=पास में तूणीर (?) बांकी=मदमुत टेढो

४६ भेरी=भेर । निसांण=नगारे । रणतूर=युद्ध के बाजे । घोरै= घोर कर, बहुत । बाजते=घोड़ों मे । रेण=धूलि । रेणां=सूर्य, आकाश ।

न था नवीए साप गापा न राअै[1]
वड रागरी[2] धुनि न फौज न बाज ।
गुड गाळ[3] गाळा न दारू न गाज,
वहै हाथ होना[4] न ना गाज बाज ॥४७॥
न ना[1] हू नवे जग छूट त्याई
त्रिवाळ वजाळ न वाजे त्रिघाई ।
घड वहड हूह माती न पट्टा
धुर जाण[3] आसाढ री मघ[4] घट्टा ॥४८॥
टळवत्तडी[1] टाड नेजा न धज्जा,
दिस मारळी हर थार दुधुज्जा ।
आया ओद्रक[2] सूरमा एणि[3] आर,
पतै लोहथी[4] लोह रिछया न धारै ॥४९॥
नही सन सनाधि एवो सजाई
लड सो विस मूळ[1] पूछा, लडाई ।
भण[2] नागपत्नी[3] जिता भूप भीर,
तिता माही[4] ऐवो नही तूझ[5] सीर ॥५०॥
पटक्का सगा बाहरो नाग[1] काछ,
अमा नागणी पत्य[2] री जूव आछ ।
धुलाडो जगाडो जुवो जुध्ध बाथ ।
हारिया जीपिया [3] करतार हाथै ॥५१॥
इसी आज ते[1] कौण भूलोक आछै,
काळीनाग सू जुध्ध[2] संग्राम काछ ।
चढ[3] हूण काळी तणी सीम चाप,
काळीनाग हू आज ही कस काप ॥५२॥

---

४७ [1] न कू नासिये साप सागा म राज [ख ग ड], [2] बडारागरी [ख ग ड],[3] गडीनाह्य [ख] गुडे [ग], गडे [ड],[4] कोका [ख,ग] ।
४८ [1] यथा हूं [ख] [2] घड्ड बेह बेहूह [ख] घुडा बेहूं बेहूं [घ च] [3]जेम [ख ग] [4] मेड़ [ग ड] ।
४९ [1] ढलकतडे [ख], री [ग] नको [ड], [2] धापे उमगे [ड], [3] ऐद्र [ड] [4] लहडु [ख घ] ।
५० [1] सून [ख], सूप [ग], भाति [च] पून [ड], [2] पुए [ग], [3] पुपो [ख ग], [4] मा॒लो एको [ख], [5] नाग [ड] ।
५१ [1] नाम [घ] [2] भूभरो पति धाहू [ग], [3] धात [ख ग ड] ।
५२ [1] जे [ड], [2] ओघ [ड], [3] घढ वियवासा [ख ग] ।

सेना में शाखा प्रशाखा के नकीब भी नहीं शोभित हो रहे हैं और मारू राग की धुन भी नहीं बज रही है । तोपों के गोलों से तथा बारूद के छूटने से गर्जना भी नहीं हो रही है । युद्ध के शब्द से होने वाला कोलाहल भी नहीं सुनाई दे रहा है ।४७।

'हुवक' ऐसी आवाज करते हुए आग्नेयास्त्र भी नहीं छूट रहे हैं । बड़े नगारों का लयपूर्ण घोष भी नहीं हो रहा है । दोनों सैन्य समूह में आषाढ़ की मेघ घटा के समान रव (हुंकार) भी नहीं हो रहा है ।४८।

लटकती हुई ढालें एवं भालों की नोक पर फहराती हुई ध्वजाएं भी नहीं दिखाई देती हैं । हमें तो तुम्हारे हाथ में केवलमात्र एक मुरली दिखाई देती है । इस कालिय के द्वार पर आते हुए अनेक शूरवीर भी भय खाते हैं । परन्तु तुम्हारे शरीर पर तो लोहे का कवच तक भी तो नहीं है ।४९।

तुम्हारे पास न तो सेना है और न एक भी सेनापति है । मैं पूछती हूं तुम किस आधार पर युद्ध करोगे ? भगवान कृष्ण इस प्रकार के वचन सुनकर बोले—नागिन ! तुमने मेरे लिए जितने सहायक गिनाए हैं उनमें से तुम्हारे पास तो एक भी नहीं है ! ।५०।

नागिन ! सैन्य एवं वीरों से रहित नाग लड़ेगा उसका और हमारा युद्ध होगा । तुम नाग को जगा करके बुलाओ और फिर हमारा बाहु युद्ध देखो । हार जीत की बात तो ईश्वर के हाथ है ।५१।

नागिन बोली—ऐसा आज पृथ्वी पर कौन है जो कालिय नाग से युद्ध लड़े और उस पर चढ़ाई करके उसकी हद दबावे ? कालिय नाग से आज कस तक कांपता है ।५२।

---

४७ नकीए=नकीब (शाखा के मुख्य गायक) । साख=शाखा । बडी राग=मारूराग । गुडनाळ=तोप, बंदूक । दारू=बारूद । गाज=गर्जता है । होर हौका=युद्धरव ।

४८ त्रिबाळै=नागारों के । बड़ाळ=बड़ों के । त्रिघाई=लयपूर्ण ध्वनि । थट्ट=समूह में । हूह=हुंकार । माती न=मची नहीं ।

४९ नेजा=भाले । धज्जा=ध्वजाएं । दुभुज्जा=दोनों हाथों में । धीद्रक=भयभीत होते हैं । ऐणि=इसके । थारैं=तुम्हारे ।

५० सेनाधि=सेनापति । मूळ=आधार । लड़ाई=युद्ध । भणे=कहे । मूझ=मेरे । मीरू=सहायक । तिणमाहे=उनमें से । तोरे=पास ।

५१ कटकरो=सेना । सर्णो=वीरों, तलवारों । वाढ्ढ=लड़ेगा, बाधेगा । थाछ=होगा । जुवो=देखो । करतार=ईश्वर ।

५२ असो=ऐसा । ते=वह । कुण=कौन । सीम=हद (सीमा) । चांप=दबाए । हू=से । कांप=कांपता है ।

न वा नकीऐ खाप सापा न राज,[1]
वढे रागरी[2] धुंनि फौज न वाज ।
गुडे नाळ[3] गोळा न दारु न गाज,
वहै होक हीका[4] न को साक वाज ॥४७॥
न का[1] हूब्बक जन छूट ह्वाई,
निबाळ वटाळ न वाजै त्रिघाई ।
यडै वेहडे[2] हूह माती न थट्टा,
घुर जाण[3] आसाढ री मघ[4] घट्टा ॥४८॥
ढळक्कतडो[1] ढाऊ नेजा न धज्जा,
दिस मोरळी हेक थार दुभुज्जा ।
आया औद्रक[2] सूरमा ऐणि[3] आग,
यत लोहवा[4] लोह रिछचा न थार ॥४९॥
नही सैन सैनाधि एको सजाई
लड सो किमं मूळ[1] पूछा, लडाई ।
भण[2] नागपत्नी[3] जिता मूझ भीर,
तिता माही[4] ऐको नही तूझ[5] तीर ॥५०॥
कटक्का खगा वाहरो नाग[1] काछै
अमा नागणी पत्य[2] रो जूझ जाछ ।
बुलाडो जगाडो जुवो जुध्ध बाथ ।
हारिया जीपिया [3] करतार हाथै ॥५१॥
इसी आज ते[1] वाण भूलोक आछ,
काळीनाग सू जुध[2] सग्राम काछै ।
चढै[3] क्रूण काळी तणी सीम चांप
काळीनाग हू आज ही कम काप ॥५२॥

४७ [1] न कू नासिये साप खगा न राज ।[ख ग ड], [2] वडारागरी [ख ग ~],[3] नडीनाय [ख] गुडे [ग] गडे [ड],[4] कोका [ख,ग] ।
४८ [1] दवां हूं [ख] [2] थट्ट वेह वहूह [ख] पुडा वेहूं वेहूं [घ च] [3]जेम [ख ग] [4] मेह [ग ड] ।
४९ [1] ढलक्तडे [ख], री [ग] नरा [ट], [2] आपे उमगे [ड], [3] ऐह [ड], [4] लहडु [ख घ] ।
५० [1] सूत्र [ख], सूच [ग], माति [घ] पुत्र [ड] [2] सुण [ग], [3] पुषो [ख ग], [4] मा॒ोसो एको [ख], [5] नाम [ड] ।
५१ [1] नाम [घ] [2] जूझरो पति थाछ्र [ग], [3] वात [ख घ ट] ।
५२ [1] जे [ड], [2] जोध [ड], [3] चढ विपवाम्मा [ख ग] ।

सेना में शाखा प्रशाखा के नकीब भी नहीं शोभित हो रहे हैं और मारू राग की धुन भी नहीं बज रही है। तोपों के गोलों से तथा बारुद के छूटने से गर्जना भी नहीं हो रही है। युद्ध के शब्द से होने वाला कोलाहल भी नहीं सुनाई दे रहा है।४७।

'हूवक' ऐसी आवाज करते हुए आग्नेयास्त्र भी नहीं छूट रहे हैं। बड़े नगारों का लयपूर्ण घोष भी नहीं हो रहा है। दोनों सैन्य समूह में आषाढ़ की मेघ घटा के समान रव (हुंकार) भी नहीं हो रहा है।४८।

लटकती हुई ढालें एवं भालों की नोक पर फहराती हुई ध्वजाएं भी नहीं दिखाई देती हैं। हमें तो तुम्हारे हाथ में केवलमात्र एक मुरली दिखाई देती है। इस कालिय के द्वार पर आते हुए अनेक शूरवीर भी भय खाते हैं। परन्तु तुम्हारे शरीर पर तो लोहे का कवच तक भी तो नहीं है।४९।

तुम्हारे पास न तो सेना है और न एक भी सेनापति है। मैं पूछती हूं तुम किस आधार पर युद्ध करोगे? भगवान कृष्ण इस प्रकार के वचन सुनकर बोले—नागिन! तुमने मेरे लिए जितने सहायक गिनाए हैं उनमें से तुम्हारे पास तो एक भी नहीं है!।५०।

नागिन! सैन्य एवं वीरों से रहित नाग लड़ेगा उसका और हमारा युद्ध होगा। तुम नाग को जगा करके बुलाओ और फिर हमारा बाहु युद्ध देखो। हार जीत की बात तो ईश्वर के हाथ है।५१।

नागिन बोली—ऐसा आज पृथ्वी पर कौन है जो कालिय नाग से युद्ध लड़े और उस पर चढ़ाई करके उसकी हद दबावे? कालिय नाग से आज कंस तक कांपता है।५२।

---

४७ नकीए=नकीब (शाखा के सुयश गायक)। साप=शाखा। वडी राग=मारूराग। गुडनाळ=तोप, बदूक। दारु=बारुद। गाज=गर्जता है। होक हीका=युद्धरव।

४८ निवाळँ=नागारों के। बडाळ=बड़ों के। निघाई=लयपूर्ण ध्वनि। घड=समूह में। हूद=हुँकार। माती न=मची नहीं।

४९ नेजा=भाले। धज्जा=ध्वजाएं। बुभुज्जा=दोनों हाथों में। भींद्रक=भयभीत होते हैं। ऐरिण=दमक। थार=तुम्हारे।

५० सेनाधि=सेनापति। मूळ=आधार। लडाई=युद्ध। भणे=कहे। मूझ=मेरे। भीरू=सहायक। तिणामां२ी=उनमें से। तोरे=पास।

५१ कटकां=सेना। खागों=वीरों, तलवारों। फाछ=लडेगा, बाधेगा। थाय=होगा। जुवो=देखो। करतार=ईश्वर।

५२ असो=ऐसा। ते=वह। कूण=कौन। सीम=हद (सीमा)। चांप=दबाव। हू=से। कांप=कांपता है।

जाळै त्रिरय नीला बहै विरख झाला,
वद न सहस्स वव व्योम व्याला[1] ।
वटा भृग मीलग[2] टेमग[3] वाळा,
जिरी फूक आग भर टूक फाळा ॥५३॥

अम्ठौ घणी माम झूठी[1] जमागे ।
हुसी टाकरा आफरू आज[2] आरो[3] ।
निज नारि वरखाणिया कद्र[4] नाह ।
वदे[5] जस्म वरी जिक हत्य वाह[6] ॥५४॥

पनगा नरा दाणवा देवि[1] पासा ।
तुन दखावू[2] आज वगा तमासा[3] ।
फणी[4] नाथ न झालबू ऐणपाणी[5] ।
मारो[6] एह[7] ककालियो द्रोहमाणी ॥५५॥

मुहे[1] जोड होमी घडी इक माहे ।
निचो[2] नाग ते बोल घोटा निबाहे ।
जमना जप्पई नागणी छोडि जोरा ।
फणी फेण[3] न खावसी देवि फोरा ॥५६॥

जमना तणै[1] नागणी बण[2] जागी,
लियो[3] बोल[4] त खाजना[5] ऊेण लागी ।
कठ वास मूसाळ घोटो[6] किणी रो,
वळ दूमरो ताहर कूण वीरो ॥५७॥

---

५३ [1] विष वाला [ग] [2] सेनग [ग], [3] बल [ग] ।

५४ [1] तुठी [ख] रुठो [ड] तूठउ [घ], [2] फ्रूक मारी [ग ड], [3] इसके आग च प्रति मे अधिक पाठ है —
खड सीह सोनींग हजार रत्नीज, करतार न मावती बात कीज ।
बधा मनपा कमला जीव वामी समजे लीयो रत्न तउआ समाली ।
धुर हान बठो लग माही हुव, बिहु खाण वानो परि पाव चूक ।
बडा बोलियै बोल लेना विचारो, घराहे मदा मन गध उतारो ॥
[4] कद [ख ग], वय [ड], तुहे [घ], [5] वडे [ड], [6] दश्य [ड], यहा]च] ।

५५ [1] वेग [ग], देखि [घ] [2] तुना दाखवा [ड], [3] हम एवणी गोठ फेरा हमारो नहो नागणी लाग मारोलगारी । प्रपा [ड] [4] पुणि प्रणि [ख ग] [5] जांवयो [ग], [6] मुखे [ग], [7] ऐण [ख], एम [ड]

५६ [1] मुर [ड], [2] नग्यो [ख],नह्न [ग] निज [ड], [3] फुणा फीण [ड] ।

५७ [1] जर [ड] [2] वेण [ड], [3] लिय [ग], [4] बोलउो [ख ड], [5] सोमना [घ], [6] ढोटो [ड] ।

जब कालिय नाग के सहस्र मुखों से विष ज्वालाएं निकलकर व्योम मे सर्पाकार होकर बढती हैं तब हरे वृक्षों को जला देती हैं तथा जो हिमालय की बड़ी-बड़ी शीतल चोटियां हैं वे तो उसकी फुत्कार के सामने छलांगें भरने लगती हैं ।५३।

मेरा पति कालिय क्रोधित हो जाने पर पागल हो जाता है ठाकुर ! आज बहुत ही घोर लड़ाई होगी । भगवान ने कहा—नागिन ! अपनी नारी के बखान करने पर पति की इज्जत नहीं बढा करती, प्रत्युत जिसके बाहु प्रहारों का बखान शत्रुगण करें तब ही उसकी सच्चे माने मे इज्जत बढ़ती है ।५४।

पन्नगों, मनुष्यों, राक्षसों और देवताओं के समक्ष आज तुम्हें शीघ्र ही खेल दिखाऊंगा और इन्हीं हाथों से कालिय को वश मे करके पकड़ूंगा । यह कालिय मेरा परम शत्रु है ।५५।

नागिन बोली—अभी घड़ी भर के अदर आमना सामना हो जाएगा । तुमने नाग की निंदा की है इन वचनों को नागपुत्र निभाएंगे । जमुना कहने लगी—नागिन ! तुम जोर छोड़ दो । इसको छोटा समझ कर कालिय नाग नहीं जायेगा ।५६।

यमुना के वचन सुनकर नागिन सजग हुई और वचन के द्वारा ही श्रीकृष्ण की परीक्षा लेने लगी । नागिन बोली—तुम्हारा निवास एवं ननिहाल कहां पर है ? तुम किसके पुत्र हो और तुम्हारा दूसरा भाई कौन है ? ।५७।

---

५३ विरख=वन । विरख=विष । झाळां=लपटें । पाळां=सर्प । शृंग=चोटी । सागर=शीतल । हेमगर=बर्फ वाले पहाड़ । हूंगर=पहाड़ पहाड़ की चोटियां । फाळां=छलांग ।

५४ भड़कीं=ख्ट होने पर । नाथ=पति । क्रूठो=पागल । म्हारो=हमारा । आकरू=तेज । मारी=युद्ध म तनादयुक्त कोलाहल । वखाणियां=प्रशंसा करने पर । वड्=इज्जत । वद=कहें । हत्थवाहू=प्रहारों की ।

५५ पासां=समीप, से । वगा= शीघ्र । तमासा=खेल । फणीं=नाग । नाथन=काबू करना । एण पांणी=इन्ही हाथों से । द्राहमाणो=शत्रु ।

५६ मुहजोड़=आमना सामना । जपण=कहने लगी । जोरा=जोर ।

५७ वणा=वचनों से । आणी=सचेत होकर । खोजना=जांच, परीक्षा । कठै=कहां । वास=निवास । मूसाळ=ननिहाल । धोटो=पुत्र । कूण=कौन । बीरो=भाई ।

अमारा[1] भगता तणा[2] एह ओरा,
मडाया[3] मथुरा धरा वास मोरा ।
मोरै नद बावो जसोमत्ति[4] माई,
भलो[5] हेक बळभद्र चै[6] नाम भाई ।।५८।।
मोरै कस मामो रहै[1] मूक्ष मूळे,
कियो वास[2] नडो जमूना ज कूळे[3] ।
मनासू न मूकई घडी हेक मामो ।
करै[4] सूर ऊगा[5] तणी[6] नित्य सामो ।।५६।।
मामे मोकळी सोजवा[1] करण मासी ।
इता दीह चो[2] हू हुतो उप्पवासी[3] ।
घणा दीहरो मू कियो नेम घातै ।
हवै जीम सु जुज्ज विश्रात जात ।।६०।।
चवै[1] मात, भ्राता विन्है[2] धेन चारी,
वहे आज ते नागणी मूक्ष[3] वारी,
सुरभी तणी नागणी ऊच सेवा,
गळे अघ्य ओघा[4] लुरी-सेह ग्रेवा[5] ।।६१।।
नरा[1] सेह लागै[2] रहै देह नीको,
तिसो[3] नागणी गव्वुरोचन[4] टीको ।
बधा देस दीजै विप्र[5] वद बोल,
नही नागणी तोइ[6] गोदान तोल ।।६२।।

---

५८ [1] प्रमां [ग], [2] रिद वास [ट] [3] मडामामद्दे व ध्यरा वास मोरा [ख] मडघा माम धरे धरा [ङ] मडे रिद्धि वा विधि वा [घ], [4] असोदासु [ङ], [5] बळ [ख], [6] छ।

५६ [1] कहू [ग] कहे [ङ घ], [2] नास [ख ग] [3] मकोल [ग] भकूलं [ङ], [4] सज [ट], [5] ऊग [ख ग] [6] समेजुष्ट [ङ] ।

६० [1] मारवा [ङ] सोभना [च], [2] रो [ङ] [3] मप्पवासी [ख ङ] ।

६१ [1] चवि [घ], [2] बने [ङ] [3] घाज तो घ० पा० [घ], [4] प्राघ धाग [ग] भग ऊर्भा [घ], [5] सेवा [ग घ] ख प्रति में प्रद्ध पद्यान नहीं है।

६२ [1] नवयो [ग] नवो [ङ], [2] लागो रही [ङ] [3] जिमठ [ग घ] सजू [ङ] [4] गऊरोचन [ग], गवरइ चान्द्र [घ] गायरो चडू [ङ] [5] विप्रादान [ग] गो देन [घ] द्विजावे० [ङ], [6] ताय [ग] गायरइ [घ], तेह [घ], ख प्रति में यह पद्य नहीं है ।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि—मेरे भक्तों के हृदयों में एवं पृथ्वी पर मथुरा में मेरा निवास है। मेरे बाबा नन्दजी और माता यशोदाजी हैं और मुझसे बड़ा बलभद्र नाम का एक भाई भी है।५८।

मेरे कंस नामक मामा हैं जो मेरे समीप ही यमुना तट पर निवास करते हैं। वे मुझे एक घड़ी भी मन से नहीं उतारते हैं, नित्य सूर्योदय होते ही सामना करने के लिए तैयार रहते हैं।५९।

मामा ने मुझे खोजने के लिए मौसी को भी भेजा था। मैं इतने दिन से उपवास ही कर रहा हूं। बहुत दिनों का नियम डाल रखा है, अब युद्ध की भ्रांति मिट जाने पर ही भोजन करूंगा।६०।

हे मालिन! माता ने कहा है कि—तुम दोनों भाई गायें चराओ। आज मेरी बही (गायें चराने की) बारी है। गायों की सेवा बहुत श्रेष्ठ है। इनकी पद रज से पाप समूह नष्ट हो जाते हैं।६१।

जिस प्रकार गो पद रज से मनुष्यों का शरीर अच्छा रहता है, उसी प्रकार गोरोचन का तिलक करने पर भी शोभित होता है। वेदों और ब्राह्मणों का कहना है कि—समस्त देश का दान देने पर भी गो दान के तुल्य नहीं हो सकता।६२।

---

५८ म्हांरा=हमारे। मोरा=हृदय (उर), कोठा। मोरा=मेरा। माई=भी। भलो=अच्छा। नाम=नाम वाला।

५९ मूझ=मेरे। मूठै=समीप। नैड़ो=निकट। कूल=तट पर। सांमो=युद्ध, अगवानी।

६० मोकली=भेजी। खोजनां=जांच। मासी=मौसी। दीहड़ां=दिनों का। उप्पवासी=भूखा। घणां=बहुत। नेम=नियम, व्रत। घाते=डालकर। हव=अब। जुज्झ=युद्ध। विभ्राति=विडम्बना। जाते=बीतने पर।

६१ चवै=कहती है। बिन्है=दोनों। चारो=चराओ। ते=वह। मूझ=मेरी। वारो=बारी। सुरभी=गाय। ऊंच=श्रेष्ठ। गळै=नष्ट होते हैं। अध्य=पाप। थोघां=समूह। खुरी खेह=खुरों की धूलि। धेवां=गायों की।

६२ नीको=अच्छा, सुन्दर। तिसो=उसी प्रकार। टीको=तिलक। बधा=समस्त। बोल=कहते हैं। सोइ=तब भी। तोलै=तुल्य।

पचाअम्रत देव इच्छ[1] पखाळा ।
सवै तीथ वासौ वस[2] गव्वसाळा[3] ।
दही दूध रावा[4] ची आ सुखदाई ।
मठा घाळीया[5] खाड खोहा मळाई[6] ॥६३॥
वळै हाथ सू मात आफ विरोळै ।
घृत पीजियै आण निवात[1] घोळै ।
लियौ मागि लूणी दियौ मात लूदौ ।
न खम तिकै नागणी बोल वूदौ ॥६४॥
घणै[1] उच्छवै व्याहिया ग्रेह ग्रेवा,
पियूस दुवावहि माहै परेवा ।
अवनी तणौ मारि ले कघ आयौ,
जुवो[2] नागणी ते हुतो गव्वुजायौ[3] ॥६५॥
कही सू खडो कपडो तीर[1] काही,
महम्मा घणी प्रागण[2] धेन माही ।
खळा हळां नागळा पाण[3] खेती,
अमै नागणी हाथ मे[4] आय ऐती ॥६६॥
पड लातरी धेन औ[1] नीर पीध,
काळीनागनू जग्गवू[2] तेण[3] कीधै ।
प्रिया तात न गोन थागी पिछाण्या,
वडा गोप री पुत्र[4] आयौ विहाण्या ॥६७॥

---

६३ [1] कीज पखाळा [ग], माछा वम्बाळै [ङ],[2] रहै [ङ],[3] धेनु [ङ], घ प्रति में यह पद्यांश नहीं हैं । सवामस दे दूध उगे सवारो, एरी नागणी तोल मोटो प्रमारो म० पा० [ङ],[4] जे नवनिध [ग] रो घासना [ङ] नवनीत जे [घ][5] मीठा घोलवा [ग] घोलिए [ङ], [6]मिमाही [ङ], मिठाई [घ], यह पद्य ख प्रति में नहीं है ।

६४ [1] नोनीत [ङ], निवाण [घ], यह पद्य ख प्रति में नहीं है ।

६५ [1] वरा उवक माह प्रासी गरबी, पचासा घव धेन माहै परवी [ग], घरह मुछवह व्याहनह सेह प्रीवा पचू माधव माहै परवा [घ], गरा उवका ग्र॰ ग्रेही गरवी पचामाडते धेन माहो परवी [ङ] [2] जोने [ङ][3] धेन । यह पद्यांश घ प्रति में नहीं है ।

६६ [1] कोर [ट] चोर [घ],[2] पाहुणो [ग],पाहुण [घ], प्रामणे [ङ] [3]कीजेन [ग ङ] [4] प्रापमी रात [ग घ],म प्रति म यह पद्यांश नहीं हैं।

६७ [1] हुऐ [ग], पड [घ], प [ङ],[2] न जागवो [ग], जगाडी मे [ङ], जगाडी जे [घ घ],[3] वेण [ङ],[4] पूत [ग] ।

दही, दूध, घृत, शहद एवं चीनी (पंचामृत) के द्वारा प्रक्षालन की देवता भी इच्छा रखते हैं। समस्त तीर्थों का निवास गोशाला में होता है। दही, दूध एवं मट्ठा मिलाई हुई राब, चीनी मिलाया हुआ खोया तथा मलाई, मिश्री मिलाया हुआ घृत पीने में यों ही सुख देने वाले हैं फिर जब माता उन्हें अपने हाथ से मथकर देती है तो उसमें स्वाद और भी बढ़ जाता है। माँ से मक्खन मांगने पर वह उसका बड़ा सा लौंदा दे देती है। हे नागिन! इस प्रकार के खान-पान वाला मनुष्य वचन रूपी बूंदें (छींटाकशी) सहन नहीं कर सकता।६३ ६४।

घर के अन्दर गाय के प्रसूत होने पर बड़ा ही उत्सव मनाया जाता है तथा उसका पीयूष मिट्टी के बर्तन (पारी) में दुहा जाता है। हे नागिन! जो पृथ्वी का भार अपने कंधों पर धारण कर के आया वह गाय की सन्तान ही था।६५।

हे नागिन! किसी भी किनारे (छोर) पर चलकर देख लो। जिसके प्रांगण में गाय है उसका बहुत महत्त्व है और खलिहान में तथा हल चलाने में बैलों के आधार (शक्ति) से ही खेती का कार्य होता है। इस प्रकार का गो-बल स्वरूपी धन हमारे हाथ में है।६६।

इस ह्रद का पानी पीने से गायें दुबल होती जा रही हैं। इसी कारण से कालिय नाग को जगाना है। नागिन ने कहा—प्रिय! तुम्हारे पिता एवं गोत्र को हमने पहचान लिया है, सुबह सुबह बहुत बड़े गोप के पुत्र यहां आए हो! जिस प्रकार मेरे सामने कालिय नाग को जगाने की

---

६३ इच्छ=इच्छा करते हैं। पखाळा=प्रक्षालन। बस=रहते हैं। गव्वुसाळा=गोशाला में। राब=छाछ में आटा डाल कर बनाया हुआ पदार्थ।

६४ वळे=पुन। चाफ=स्वाद। बिराळ=मथकर। जाण=मानो। निवात=मिश्री। लूणी=मक्खन। लूंदो=लौंदा। न खम=नहीं सहन कर सकते हैं। तिके=वे। बोल बूंदे=छींटाकशी।

६५ उच्छव=उत्सव। ग्रह=घर में। ध्रेवां=गाय के। पियूस=खीस, पियूष। परेवां=पारी में। अवनी=पृथ्वी। भार=बोझ। कंध=कंधोंपर। गव्वुआयो=गो प्रसूत।

६६ खड़ो=चलो। कपडो=पकड़ो। तोर=छोर (किनारा) काही=कोई भी। महम्मा=बड़ाई। प्रांगणे=आंगन के। मांहि=अन्दर। खळां=खलिहानोंमें। हळां=हल में। पांण=आधार पर। नांगळां=बैलों के। अम=हमारे, मेरे। हाथमें=वशवर्ती। आथ=धन सम्पत्ति। एती=इतनी।

६७ खातरी=दुबल। ओ=यह। पीध=पीने से (पर)। जगवू=जगाना। पिछाण्यो=पहचाने। विहाण्यो=प्रात।

जपै गो दिसी जेम[1] थाळो जगाडो[2],
 इना[3] टाट, ले मात सू वात[4] आहो ।
हराम मिल वापमू पूछि होई,
 सुतो, साप जगाडीज[5] येण योट ॥६८॥
यहै वाग जे[1] सापरी आळ गोज,
 तर[2] आविजो जागसी जाम ग्रीजे ।
पदा पीव[3] रा नागणी तू पिछाण[4],
 यट टाकुर वात वाच विहाणै ॥६९॥
रीतो[1] याहडू जे अजोटयो घरानै,
 निसाणी मणा फेण पास न मान ।
पिता मात रो औंचणो[2] पवचानो,
 मारया री हुई घूघरी साच[3] मारो ॥७०॥
दूज नद र घेन नोलरस दूणो,
 टला तू नहो एह श्रुदत लूणो ।
जिहा[1] वोल्ता उपड बोल जेता,
 लटा लहै[2] लेखो फणा फेण[3] लेता ॥७१॥
अहो[1] नारि[2] तू एह नेठाह आणै,
 जिये योलिया[3] योल गदत जाण ।
वृथा वैण जाण रख[4] मूक्ष वाळा,
 पुणू[5] एकणी, नार इक्कीस पाळा ॥७२॥

---

६८ [1] प्रेम [ग], कोली अगावो [ख], [3] प्रसी [ड] [4] भात [ख] भात [ड] [5] जगाडिय [ड]
६९ [1] तो [ग] जो [ड] [2] तुमे [ग], तवा [ड], [3] पद्मा पावरा [घ घ], पापरा [ड] [4] पमाणो [ख] ।
७० [1] रीतु बाहडु कोम्र जीतु नरामि [ख] रीतो बाहडु तो जोतो कुणरान [ग घ], आतु बाहिरो को भजे तू न जाणु [ड], रीतो आऊ तो कोइ जोतो घराम [च], रे उधणै [ग], उणटु [ख], पोखियड [घ], वसट्यो [ड] [3] साघ्र [ख ड घ] ।
७१ [1] जेहा [ड] वालिजे [ग ड] [2] लहेस [ख], लेरा [ड], [3] फुणा मीण [ग ड] ।
७२ [1] प्रसो [ड] [2] नागणि [ड] [3] नीकल्या [ग], नीसरया [ड], [4] नके [ड], [5] पणा [ड] ।

बात कह रहे हो इसको छोड़कर माता से बातों में हो हठ कर लेना। यदि तुम्हारी माँ हा मर ले तो फिर पिता से नत बद कर पूछ लेना कि—सोते हुए सांप को किस उत्साह के लिए जगाया जाय ? ।६७-६८।

यदि तुम्हारा पिता कह दे कि—तुम जाकर भले ही सांप से छेड़-खानी करो, तो तुम तभी आजाना। साप तीसरे पहर में जगेगा। भगवान ने कहा—नागिन ! तुम अपने पति के पक्ष को अच्छी तरह पहचानती हो तभी तो सुबह से ही उस बड़े ठाकुर (सप) की बातें बांच रही हो।६९।

यदि मैं सांप को बिना जीते खाली घर लौट जाऊ तो घर वाले सांप के चि ह के बिना यहां आने की बात को ही नहीं मानेंगे। नागिन बोली—लाला ! तुम यह सत्य समझो कि—तुम्हारे माता पिता के पकवान उल्ट गए हैं एव घूघरी मुक्ताओं मे परिवर्तित हो गई ज्ञात होती है।७०।

नद के घर नौलाख दूध दने वाली गायें हैं अत यह नाच-कूद तुम्हारी नहीं है उस मक्खन का ही प्रताप है। तुम्हारी जिह्वा से जितने बोल [कुवचन] निकले हैं उनका हिसाब तो कालिय ही लेता पर वह अभी सो रहा है।७१।

श्रीकृष्ण ने कहा—नागिन ! तू यह निश्चयात्मक रूप से समझ ले कि मेरे वचन जो निकल गए हैं वे हाथी के दांतों के समान हैं जो निकलने के पश्चात् कभी नहीं मुड़ते। तैने मेरे वचनों को व्यर्थ समझ रखा है वास्तव में ऐसी बात नहीं है मैं जो एक बार कह देता हू उसका इक्कीस बार तक पालन करता हू।७२।

---

६८ मोदिसी=मेरी तरफ। जेम=जिस तरह। छोड=त्याग। माडो=हठ। हेकाम=हां। होड=प्रतिज्ञा करके। कोड=प्रस नता के लिए।'

६९ माळ=छेड़खानी फूठ। तर=तब। जाम त्रीजे=तीसरे प्रहर। पक्ष=पक्ष। वाच=बाचती है।

७० रीतो=खाली। बाहुडु=लौटू। जे=यदि। निसाणी=चि ह। मणापेण=कालियनाग। पाख=बिना। प्रोधणो=उलटना। घूघरी=साबुत अन्न उबाल कर बनाया हुआ पकवान। साच=सत्य।

७१ दूणी=दूध देने वाली। बोल=वचन। लेखो=हिसाब। फणाफेण=सप।

७२ नेठाह=निश्चयात्मक। ग दत=हाथी के दांत। जाणे=मानो। वृथा=फिजूल। मू क=मेरे। पुणू=कहता हूं। वार=दफा। पाळो=पालन करता हू निभाता हूँ।

अमा पथ साडा तणो थार आग, ।
लरा एह[1] मूवया पछै छाट लाग ।
मोरे देव आहोर च गाम[2] माहै,
सत्री उमट षयका लग्ग वाहै[3] ॥७३॥
सत्रो कदृश[1] कस रैयत्त[2] सासी,
वहै[3] वट माय वहै व्रज वासी ।
घर[4] नसर तातरी टाट घुट्टी,
तदै ताहरी केथ सत्रवट[5] त्रुट्टी ॥७४॥
रळो[1] कसर राज प्रवेस रमता[2]
तद[3] नदर नेस[4] बलभद्र न हुता[5] ।
हिवै[6] नागणा मो वलभद्र आगै,
मिळ कमरा दूत पाणी न माग ॥७५॥
जोवो[1] नद र ग्रेह[2] सत्रवट्ट[3] जागी,
हिव लागवा सक त्रोलाक लागी ।
वहू नागणी सुण[4] तू रोप कान,
मिळ दादुरा मेह तो साच मान ॥७६॥
काळीनू[1] न नाथू तो थार[2] कमावू,
जसोदा माई[3] नद बाब न जावू ।
नहीं नागणी नाग[4] थारो निवार,
हिव एक ही[5] गाठि फेरू हजार ॥७७॥

---

७३ [1] घट [ग], घाट [ङ], [2] षाजाव [ख ङ] [3] सत्री ऊम ही लाग्‍ए को लाग वाहै [ङ] ।

७४ [1] काहै को [ङ] [2] रेहेत [ङ] [3] विवेवाट [ङ] [4] घर कसरेतुबसी तात [ख] टाटि [ग], घाठी [घ ङ] घरै कसरे तातरी टाट घाती [च] [5] विन्नवट्ट [च] ।

७५ [1] रुले [ङ] [2] पहुता [ख], पोता [ङ], [3] तथा [ङ], [4] सेन [ख], नेह [ङ] [5] नोता [ङ] [6] वहै [ग] आवै [ङ] ।

७६ [1] जुए [ग] जोयो [ङ] [2] नेस [ख ग] [3] सत्रोट [ङ] [4] बोल रोप काने [ख ग], रुपयु बोल [ङ] ।

७७ [1] काळो नाग नाथून जा एक मायो [ङ] [2] तुम रो कमायो [घ च] [3] प्रभू [ङ] [4] लाग [ग घ ट] [5] हेकणी [ङ] ।

हमारा पंथ (मार्ग) खांडे की धार पर है अर्थात् दुर्गम है। इस दुर्गम मार्ग का त्याग करने पर ही कोई कलंक लग सकता है। हमारे गोप के अहीर क्षत्रिय हाथों मे खड्ग धारण किए कभी के उमड रहे हैं। (कि—कालिय नाग को द्रह से निकाल कर छोड़ेंगे) ।७३।

नागिन बोली—व्रजवासी कब से क्षत्रिय बन गए हैं ? ऐसे तो कंस की बहुत रयत है जो अपने अपने हिस्सों पर चल रही है। व्रजवासी भी हिस्सों पर चल रहे हैं अर्थात् कंस के अधीन रह रहे हैं। जब कंस के घर तुम्हारे पिता का सिर मूंडा गया था, तब तुम्हारी क्षत्रियता कहा चली गई थी? ।७४।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा—नागिन ! जब कंस के राज्य मे बहुत से लोगों ने मिल कर उपर्युक्त नाटक खेला था, तब नंद के घर बलभद्र के समान पुत्र उत्पन्न नहीं हुए थे। अब मेरे और बलभद्र के सम्मुख यदि कंस के दूत आ जाय तो वे पानी भी नहीं मांगते ह अर्थात् हमारे द्वारा मार दिए जाते हैं ।७५।

नागिन ने अन्य सखियों की ओर संकेत करके कहा—देखो, देखो ! नन्द के घर मे क्षत्रित्व जाग उठा है, जिससे अब तीनों लोकों को भय होने लगा है ! भगवान श्रीकृष्ण ने कहा—नागिन तू क्या ताने दे रही है ? ध्यान लगाकर सुन, मेंढक तो वर्षा होने पर ही वर्षा को सत्य मानते हैं, वर्षा की बात को नहीं ।७६।

मैं यदि कालिय को अपने काबू में न कर सका तो 'आजीवन तुम्हारे यहा ही चाकरी करता रहूगा' अपने माता-पिता के घर नहीं जाऊगा। परन्तु नागिन ! मेरे वार का निराकरण तुम्हारा कालिय नहीं कर-सकेगा। मैं अभी उस सहस्र फणधारी कालिय को इस एक गांठ की लकड़ी से घुमाऊ गा ।७७।

---

७३ अमां=हमारा । पथ=मार्ग । खांडा=तलवार । धार=नोक । पछ=बाद मे । खोट=दाग । माहे=में अहर । ऊमट=उमड रहे हैं। कद्का=कभी के । बांहे=हाथों में ।

७४ रयत=जनता । खामी=बहुत । बट=हिस्से । टाट=सिर । तदे=तब । कथ=कहां । त्रुट्टा=खोह गई थी, टूट गई थी ।

७५ रळी=मिलकर, प्रसन्नता । बेस=घर । हिव=अब । मो=मेरे । पाणी न मांगे (मु०) =मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं ।

७६ जोवो=देखो । गेह=घर । क्षत्रवट्ट=क्षत्रित्व । संक=भय । रोप-कानं=कानस्थिर करके, ध्यान पूर्वक । दादुरां=मेंढकों को । मेह=वर्षा । साच=सत्य ।

७७ न=नहीं । साधु=वश में करू । कमाऊ=चाकरी करता रहूंगा । थारो=तुम्हारा । निवारं=निवारण करसकेगा । एक ही गांठि=एक ही गांठ वाली लकड़ी से । फेरू=घुमाऊंगा । हजार=सहस्र फन वाले, नाग को ।

पपाहा अगाहा पहेला[1] पुमाणो[2]
पहाए विऊ नीमह आ जमायो[3] ।
सगी बा" पूजा नहीं साम तोन
बोल[4] बाडमा मार[5] पागोर बोन ॥७८॥

सुण्यो[1] न ओगाणो[2] पुराणो मयाणो
म्हौजे नहीं जगळा आट[3], गंणा ।
माळी नागरी मान रागी न मार्ई,
मनयाळ[4] ने मुह मा घारि मार्ई ॥७९॥

पुरा पोसियो[1] पान न धार पायो[2],
पल मोरळो माळीय लाडयायो ।
अम्हा सामहो हे गगी मिजम[3] आज,
पिसू आपरो माल आप कराय ॥८०॥

पसे भोहू पोडी, मारी सीग मोरी,
अर धू ण गाजे पती[1], आय ओरी ।
नमो धीठ[2] धाठा, चय नाग नारी,
हिव[3] जोडि तोमू वाता यार हारी ॥८१॥

मढगा[1] कहो[2] बोल जेता अघाऐ,
पल[3] ततला आज तोनू पसाऐ ।
नरा नारी मे नागणी ना वियाणी,
रही बाझडी देव दाणव्व राणी ॥८२॥

---

७८ [1] पहेली [ङ], [2] पवाये [ङ], [3] पडी राध्ययु निमडी माजपाए [ख ग], घणाइ रालीयड मीवडइ मा जु पाए [घ], घणौं रूपियो मीयडे नेट पाए [ङ], [4] बपे [ङ], [5] कोइ [घ] ।

७९ [1] सुणीज [ङ] [2] ऊसाणु [ख घ], ऊखाणो [ङ] [3] अट्ट [ङ], [4] नीमु ही म घाढाव्य बाई [ख घ], मुझो पढवेत बाई [ङ] ।

८० [1] पोसियो [ङ], [2] घायो [ङ], [3] पूड [ख], वाद [ङ] परसो देखि [घ] ।

८१ [1] पसयु [ख], पगे [घ], पग्गो [ङ], [2] घोट [ग] ढोठ [घ] उजपी [ग], जपो [घ], हुवे [ङ], [3] मजे [ग] हवै [ङ] ।

८२ [1] घटका [ग], [2] कहा [ङ], [3] पलु तेतरा [ङ] ।

तुम अखाड़े के अन्दर आने से पहले ही अपने पति के युद्ध-चरित्र पर प्रसन्न हो रही हो। अभी इसी स्थान पर दो घड़ी में निर्णय हो जाएगा। एक अन्य नागिन ने पहली नागिन से कहा—सखी ! श्याम के बराबर विवाद में हम नहीं पहुंच सकती हैं क्योंकि यह तो 'सीधा किनारा काटता हुआ' ही बोलता है ।७८।

नागरानी ! तुमने एक पुरानी लोकोक्ति नहीं सुनी है क्या—'जंगल में जाट को रोकना नहीं चाहिए'। इसने अपनी बकवास में कालिय नाग की कोई प्रतिष्ठा नहीं रखी। इसस मैं कहती हूं—बहिन ! इस मूर्ख को 'अपने मुंह मत लगा' ।७९।

प्रारम्भ से ही हम लोगों ने इसे अनादि से पोषित करने और फिर महल में अन्दर बुलाने का प्रयत्न किया। इतना करने पर भी यह हमारे सम्मुख क्रोधित हो हो कर आता है तो 'हम भी अपना मोल अपने आप क्यों कराएं।' अर्थात् इससे दूर रहना ही अच्छा है ।८०।

तुम तीनों ही पक्षों (पीहर, ससुराल, ननिहाल) में चतुर हो अतः मेरा कहना मान कर इधर आ जाओ। इस कृष्ण के किस पक्षवाले लज्जित होंगे ? अर्थात् इसके कोई पक्ष है ही नहीं। नागिन ने कृष्ण की ओर संकेत करके कहा—हे धृष्ट बालक, तुम्हें नमस्कार है ! अब मैं तुम से वाद विवाद में पराजित हुई, तू विजयी हुआ ।८१।

तेरे पास जितने चतुर वचन हैं उन्हें तृप्त होकर कहले, आज तुझे सब माफ हैं ! क्योंकि—मानव, नाग, देव, दानव जाति की कोई भी स्त्री आज तक प्रसूता नहीं हुई है सारी बन्ध्याएं हैं ।८२।

---

७८ पुमावो=प्रसन्न होना। निमड़=निपटेगा। जयावो=स्थान पर। पुजां=पहुँचना। तोल=बराबरी में। वाढतो=काटता हुआ। पाधोर=सीधा स्पष्ट।

७९ ओखाणो=लोकोक्ति। रुको जै नहीं=रोकना नहीं। काण=प्रतिष्ठा। काई=किसी भी तरह की। मां=मत।

८० धुरा=पहले। थान=स्थाणु, मूर्ख। धान=अन्न। धायो=तृप्त किया। मोकळो=बहुत। खिजभ=क्रोधित होकर। किसूं=क्यों, कहे। मोल=कीमत। आपे=स्वयं ही।

८१ प्रोढ=चतुर निपुण। अरै=इसके। पखो=पक्ष वाला। आवओरो=इधर आजा। धीठ=धृष्ठ। जोड़ि=जोड़कर। तोसूं=तेरे से। हारी=पराजित हुई।

८२ अढगा=व्यर्थ। अघाए=तृप्त होकर। पले=समीप में। तेतला=जितने। पसाए=क्षमा किए। वियाणी=प्रसूता हुई। वांझड़ी=बन्ध्या। राणी=रानियां।

नारी गांठियो सूठ दूजी[1] न रायो,
जणणी[2] किणी हेक तू ही जायो ।
आयो नाग सू झूझ लेवा अतागो[3],
अहोला हुवो आज पाछा न आगो[4] ॥८३॥
यडा भीच[1] भूपाळ मेंवाण वाळा[2],
भिव[3] नागरी[4] वाण वेवाग वाळा ।
अहीराय न उावडा[5] एह आडा,
गिणा,[6] वाद जाता घेई[7] वोढ गाडा[8] ॥८४॥
भुजगा तणी वात[1] थारै भुजारी[2],
दीहा[3] अतरा[4] रात[5] छोटा[6] दुजारी ।
सदा आणियो[7] नागणी तण[8] मारो[9]
थयो[10] येद[11] पाग[12] नवयु पण्ण[13] थारो ॥८५॥
अहीनारि सू नारि भास[1] अनरी
अेरी[2] जोवो न देतो[3] चखे न हेरी ।
सुणो[4] नागणी आपणी हद्द माही,
नरा असुरा अम्मरा गम्म नाही ॥८६॥
पवनो न चदा न दुडदो[1] प्रवेसा,
अठ एहरी गम्म एहाअ देसा[2] ।
मुण[3] नाम पारह्ल विच्चार सूनी,
घोटो[4] रूप, मारारि निबाण धूनी[5] ॥८७॥

---

८३ [1] बोबी [ख], [2] जनू नी तू ही हेक हेकीज जायो [ङ], [3] अताम [घ ङ], [4] आगे [घ ङ] ।

८४ [1] भेंच [ङ] [2] वुला [ख घ] बोल्या [ग] [3] गिरव [ग], सिह [घ] [4] सु केण [ग ङ] [5] दावडा [ङ] [6] घणी [ख], गिण [ग], गुणा [ङ] [7] कही [ङ] ।

८५ [1] भारय [ख] भांति [ग] भेद [ङ], [2] भुजारो [घ] [3] दिसी [ङ], [4] अन्तक [ख] [5] राति [ग], राता [घ ङ], [6] छेटी [ख] [7] दुजारी [घ], [8] तेण्य [ख], बोल [ङ], [9] साढ [ख ग], सार [घ], [10] पऊ [ख], [11] देव [च], [12] पासा [ख, ग] [13] पण [ग घ] ।

८६ [1] आखाइ [घ] [2] हियारो न जोवे चखे कोई हेरी [ङ], अहीराण धउ देव [घ] [3] बाइ लख [घ] [4] मुण [ङ], मुहद [घ] ।

८७ [1] दहदो [ख] दुडवो [ग घ] दिणदो [च], [2] प्रवेश [ङ], प्रवेस [ख], [3] सुण्यू आरम नाहि व्यपार सुनी [ख] सुण रूप विचार एतेह सूनी [ङ] सुण्यो उर विचार को नहि [ग] [4] दोटो [ङ], [5] नावाण्य [ख] निब्बाण [ङ] नेवाण [घ म] ।

किसी भी अन्य स्त्री ने सोंठ की गाठ नहीं खाई है ! अर्थात् प्रसव नहीं किया है, बस संसार भर में किसी एक माता ने तुझे ही जन्म दिया है। जो तू कालिय नाग से युद्ध करने का हठपूर्वक निश्चय करके आगे बढ़ रहा है।८३।

तुम यह नहीं जानते हो कि—मेघ घटा के सदृश स य वाले बड़े-बड़े खड्ग धारी राजा कालिय नाग की मर्यादा को मानते हैं। हे सखी ! अहिराज कालिय एवं इस बालक को, परस्पर विवाद की दृष्टि से तुलना करें तो यह बालक कालिय से कई करोड़ गुणा अधिक है।८४।

नागिन ने कहा—कालिय नाग और तुम्हारे बाहुओं की तुलना की जाय जो दिन और रात तथा शूद्र और द्विजों के समान अंतर दिखाई देता है। भगवान कृष्ण बोले—हे नागिन ! जो सदा से आ रहा है वही अच्छा है। तुम्हारा प्रण क्या वद से विपरीत नहीं हुआ है ? अर्थात् तुमने मेरे सनातन स्वरूप को नहीं पहचाना।८५।

नागिन स एक अन्य स्त्री ने कहा—अरी नागिन ! सुनो—क्या तुम अपनी आंखों से निहार कर नहीं देख रही हो ? ये अपनी सीमा के अंदर हैं। इनकी जानकारी मनुष्य, देव तथा दानव किसी को भी नहीं है।८६।

हे विचारशून्य ! जहां सूर्य, चन्द्र एवं पवन का भी प्रवेश नहीं है, उन देशों में भी इनकी पहुँच है। इनके नाम स्मरण मात्र से (भवसागर) पार हो जाता है। ये साक्षात्‌रूप में निर्वाण-प्रदाता कृष्ण हैं।८७।

---

८३ जायो=उत्पन्न किया। झूझ=युद्ध। अताणी=इतना आगे। अडीला=हठी। पाडोनआगो=स्थिर।

८४ मींच=शूरवीर,बादल। केकांण=स य अश्व। लिय=सहते हैं,मानते हैं। कवाण=कृपाण। बावडो=बालक। एह=यह। आखां= तुलना करें। केई कोड़ गाडां (मु॰)=अधिक। गिणां=मानते हैं। जोतां=देखते हुए।

८५ भुजगांतणी=भुजगों की। भुजांरी=भुजाओं की। दीहा=दिन। अतरा=अतर। रात=रात्रि। छाटा=शूद्रो। द्विजारी=उच्च वर्ग की। सदा=परम्परागत। तेण=वही। सारो=अच्छा है। थयो=हुआ। पण्ण=प्रण।

८६ अनेरी=अन्य। अरेरी=अरी। (स)। चख=आखों से। हेरी= निहार कर। हद=सीमा। अम्सुरां=दानवों को। अम्मरां= देवताओं को। गम्म=जानकारी, पहुँच।

८७ पवनो=पवन। चंदो=चद्रमा। दुड ो=सूर्य। पठ=यहां। एहरी=इसकी। विच्चार सुनी=विचार शून्य। रुप=स्वरूप में। मोरारि=श्रीकृष्ण। निवाण सुनी=निर्वाण प्रदाता।

राहे[1] वोलीया बाल जेता मभाळो,
वाग वाग्र दीए दाढ़ाळो[2] ।
त्रिलोरी[3] न नाराई नोहा ओन[4] यूक्ष
सगो राळ पन त्रिभुवन्न मूक्ष ॥८८॥

दिगाळ[1] विसू नागवाळा दिवाजा,
ग्रणी वाग साका-बंधी मोढ[2] वाजा ।
न मांनत नारो मुरारो निररगो,
पळो[3] मामद्रगो[4] वरगे[5] परग्गो ॥८९॥

रामा[1] साररो है सग्गो सण्ण[2] रग्गा,
प्रह्लाड[3] वाळो वळो वो विसेरा ।
सहस्सा लिसी साळ भर सयाणी,
पचासा उभ[4] राट दो पट्टराणी ॥९०॥

इठ्यासी[1] उभ सौ दश[2] वाधि आठ,
मग्गी देस बेटा लिम्या[3] लस्स साठ ।
जणणी[4] तणी ज्ण मा ण न जायो,
उतारेवा[5] ए भोम चो[6] भार आयो ॥९१॥

मजाण[1] वाळ तू, चक्रचाल माधो
वळोराव जेहो छळी एण यारो[2] ।
जितो डावडो जो, वळो देवी जाण्यो,[3]
ठगेवा[4] गयो आप, आप ठगाण्यो[5] ॥९२॥

---

८८ [1] सब [ख ग] जेता बोलिया [ड] [2] ढ्ढ [ड] [3]सा लोटे [ख ग], न लोटे [ड] [4] विहव्यो न [घ], वि॰ावू न [ड] ।

८९ [1] दिखाव [ड] [2] काय [ग घ] कोय [ड], [3] पोढ [ख] पढ [ड], [4] नाम दूजो [ड], [5] वरस्सा [ड] ।

९० [1] रमा [ग ड], [2] ध य [ड], दू यू [घ], [3] प्रह्लीमद वाळा लहै कोण लगा [ड] [4] प्रमिसिग [ख], पभे चव [ड] ।

९१ [1] प्रमिसी [ख], धम्यासी [ड] [2] दरबार [ड] [3] लस [ड], [4] जनूना तणी जांण मा एण आयो [ड], [5] हवा [ड] [6] वा [ड], तणो [च] ।

९२ [1]बिया प्र॰पा॰ [ड][2]साधा [ड] वाघा [च],[3]जाति दाऊ के हे मसो देव जांणू [ख] जिक्या दावक सलो देव जाणू [ग] जमोदा तणो नद ए देवजाणो [ड] , [4] छलेवा [ड] [5] छलाणो [ड] ।

हे सखी ! इन्होंने जितने वचन कहे उनको सुना ? प्रत्येक वचन में कितना चातुर्य था ! इनके भय से त्रिलोक त्रासित हैं ये (कालिय नाग से) क्या भयभीत होंगे ? इस बालक को तो तीनों भुवन प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं ।८८।

इनको तुम कालिय नाग का क्या शौर्य दिखा रही हो ! इनके युद्ध यद्ध करोड़ों कार्यों का कथाओं मे वर्णन है । यदि तुम नहीं मानती हो तो इनका हाथ पकड़कर सामुद्र शास्त्र के अनुसार हाथ की रेखाएं पढ़कर परीक्षा कर लो ।८९।

हे सखी ! इनके हाथ मे लक्ष्मी जैसी स्त्री होने की स्त्री रेखा है और ललाट पर जो वलि है वह एक विशेष प्रकार की है । इनके सोलह हजार स्त्रियों का उल्लेख है जिनमें १०८ पटरानियां होंगी ।९०।

हे सखी ! देखो इनके बहुत से पुत्रों का उल्लेख है और यह अन्य लोगों की तरह माता के उदर से नहीं उत्पन्न हुए हैं । ये तो पृथ्वी का भार उतारने के लिए ही आये हैं ।९१।

इनको तुम बालक मत समझ लेना, ये चक्रधारी माधव हैं । बलि जैसे राजा को इन्होंने छल से बांध लिया था । जितना यह बालक दिखाई देता है वैसा ही स्वरूप बलि ने देखकर इनको पहचान लिया था । ये माधव वास्तव में तो बलि को ठगने गये थे, पर आप ठगे गये ।९२।

---

८८ सहै=सब । बोल=वचन । सभाळी=सुना । चोज=चातुर्य । बीहा=भय । औ न=यह नहीं । बू भ=डरे, भयभीत होता है । बाळ=बालक । त्रिभुव न=तीनों लोक । सूझ=दिखाई देते हैं ।

८९ किसु=क्या । दिखाळा=शौर्य । साका=युद्ध । कोड=करोड़ों । काम=कार्यों की । न मानत=नहीं मानती हो । निरख्खो=देखो । करग=हाथ पकड़ कर । परख्खो=जांच करलो ।

९० रामा=लक्ष्मी । सारखी=तुल्य । धण=स्त्री । वळी=रेखा । विसेखा=विशेष प्रकार की । सयाणी=चतुर स्त्रियां ।

९१ जणणी=माता । तणी=की । जू ण=योनि । मां=में । आयो=उत्पन्न हुआ । ए=यह । भोम चो=पृथ्वी का ।

९२ म=नहीं । बाळ=बालक । चक्रधाळ=चक्र चलाने वाला । माधो=श्रीकृष्ण । जेहो=जैसे को । छलि=छलकर । एण=इसने । बांधो=बांध लिया । डावडो=बालक । औ=यह । आपै=स्वयं ।

वळी रावळौ वणिओ[1] दसि वाई,
प्रतिहार मा[2] मिद्ध कर्त्तार पाई ।
सवही[3] कथी[4] ग्यान[5] राणी सुणायो,
अरूठौ अतूठो भलै काज आयो ॥९३॥

ऊभो मूरळी आप लीध अधूर,
मोरो जागगी साम वाय मयूर ।
विकस्सी हम्सो वण[1] ऊची बजाई,
सपत्त पताळ सरग्गे सुणाई[2] ॥९४॥

वधाई वधाई जसोदा वधाई,
करै मूरळी नाद ठाढो कन्हाई[1]
मथ नीर ओछो[2] जिही मच्छ माही,
जसोदा विणी कान्ह जीत्यौ न जाही ॥९५॥

घडा जीप सी जुध आहे वडाई,
ग्रागाचार नारद् सखेप गाई
रही मूरळी धुन बाजी रसाळी,
वळी चेतना अजना[1] साथ वाळी ॥९६॥

लट्यौ[1] साथ जाण अमीधार जीधौ
करी[2] वण नाद सजीवत्त[3] कीधौ ।
विजागै सजोगै वेण[4] ऊचौ बजायो,
प्रभू आपरा[5] जाणि अम्रत पायो ॥९७॥

---

९३ [1] वळी रिव्मणाट्टुनतक दासवाई [ख], वळी राज सून्तूठत [ङ], वणि रै दिगाद्धानिके देववाई [घ], [2] कार्तार मैं रिद्ध [ग ङ], प्रतिहार कर्त्तार मर्याद पाई [च], [3] सवाग्गो [क ग] सवाई [घ], समाग्गी [ङ], [4] दगा [ख घ च], जमू [ङ] [5] माग [ग घ ङ च] ।

९४ [1] वेण उनो वजायो [ग क ङ] [2] सुणायो [ख ग ङ] ।

९५ [1] कान्हा डगाद [ख] [2] तो छातणु णां, णो [ख ग ङ] ।

९६ [1] रा [ङ] ।

९७ [1] नट [ख], सगी [घ च], लुटे [ङ] [2] किणो [ङ], [3] सजीव न [ङ], [4] वगेवण वायो [ख घ] वजे वेण वायो [ङ], [5] री [ङ] ।

देखो बहिन ! बलि इनका अपना बना और द्वारपाल के स्थान पर भगवान को नियुक्त करके सिद्धि प्राप्त की। इस प्रकार समस्त ज्ञान (पूर्वा वतार चरित्र सम्बन्धी जानकारी) नागिन को सुनाया और वह बोली— प्रसन्न तथा अप्रसन्न,किसी भी तरह से ये हमारे मन्ने के लिए ही आये हैं।९३।

भगवान मुरली अधरों पर रखे हुए खडे हैं मेरा स्वामी कालिय, इनके मधुर वादन से जग जाएगा। भगवान ने प्रसन्न होकर हसते हुए इतना उच्च बांसुरी वादन किया कि उसे सातों पाताल एवं स्वर्ग तक सुना दिया।९४।

मुरली की सरस ध्वनि को सुनकर व्रजवासियों में चेतना का संचार हुआ गर्गाचार्य तथा नारद जसोदा से कहने लगे—बधाई ! बधाई ! भगवान कृष्ण मुरली नाद कर रहे हैं। जिस प्रकार मोटे पानी को मगर मथता है उसी प्रकार वे यमुना के पानी को मथ रहे हैं। ये कृष्ण किसी से जीते जाने वाले नहीं, इनकी भुजाओं में सुयश है अतः कोई बड़ा युद्ध जीतेंगे। इस प्रकार संक्षेप में वर्णन किया।९५ ९६।

व्याकुल होते हुए समूह का मानो अमृतधारा स्वरूप पैलू-नाद करके जीवित कर दिया हो ! जो वियोगी स्वरों तथा संयोगी स्वरों द्वारा उच्च वेणु वादन किया है यह प्रभु ने हमें अपना समझ कर ही यह अमृत पान कराया है।९७।

---

९३ रावळो=पवना। प्रतिहार=द्वारपाल। सिद्ध=सिद्धि। कयी=कहकर। प्रम्हौ=प्रसन्न। अतूठौ=अप्रसन्न। मल=मन्ने। काज=काम।

९४ ऊभौ=खड़ा। लीघ=लिये हुए। अधूर=अधरों पर। वाय=वादन से। मधूर=मधुर। विकसी=प्रफुल्लित होकर। हसी=हसते हुए। ऊंची=तेज स्वर से। सपते पताळ=सातों पताल में। सरग्गे=स्वर्ग में।

९५ ठाढौ=खड़ा। आछौ=कम। जिहीं=जम। मछ=मगर मच्छ।

९६ जापसी=जीतेगा। बाहे=भुजाओं में। ग्रगाचार=गर्गाचार्य। ससेप=संक्षेप में। धुन=ध्वनि। रसाळौ=मधुर। वळी=लौटी चेतना=स्मृति।

९७ लटघौ=व्याकुल, मरा हुआ। जाणे=मानो। अमीधार=अमृत की धारा। ऊचौ=जीवतर। आपरा=अपने।

जिगी सिपवी[1] गग माझा जगायो
उगाट पगातार ड्यार आयो।
पगातार झाटक्तो[2] पूठ पेरी,
घणो घालियो साढ गाम घेरी ॥९८॥

घेर्यो ग्दरो घोट[1] अहिराट अहो
जळापाळ[2] माहे[3] पळा साळ जेहो।
गोळी घाटत सामटो[4] झाट गांगी,
प्रभू[5] अग लागा सोई फूल पागी ॥९९॥

गोपीनाथ रा हाथ आया गडूद
अहि गारडी जाण छाट[1] उडद्द।
महीमू ठ या जिहा[2] ना उपाड,
रमैं गारडू[3] जाणि थाळी[4] रमाड ॥१००॥

जुडो[1] जाति टोळा मिळो नागजादी,
थिडै[2] साप नैं मामळो सूरवादी।
उभ जग जेथी फिर नीर ऊड
थाळी नाग[3] नू आणियो[4] काहडूं डै ॥१०१॥

पसारा उसारा[1] सरा पाइकारा,
सहै[2] नाग[3] सारा[4] नरा नाइनारा।
मच मूठ मारा[5] झर ओण झारा
फणारा घणारा कर फूत्रकारा ॥१०२॥

---

९८ [1] जिरो सिपव [ड] [2] को टक [ड]।

९९ [1] ढोट [ड] [2] जळागोळ [ग], भळाबोळ [ग] [3] थाऐ [ड], [4] सामठी [ख ग] सामुही [ड], [5] वभू [ड]।

१०० [1] छाटयो [ड] [2] न जेही [ड] [3] गारडी जम [ड] [4] काळो [ड]।

१०१ [1] जाई गात्र टोली [ड], जात्र टाळा [ख] जुडे नाग टोळे [ग] [2] थढ [ड], अभी जग्ग जेठी फिर नीर ढहो [स च] ढै [ड], [3] सु [ड], [4] माणियो [ड]।

१०२ [1] ओसारा [ड], [2] लहि [ख] लहै [ड च] [3] लाग [ख ग च] [4] थारा [घ], लारा [ड च], [5] मर [ग ड]।

जसी सिंधु राग से कालिय को जगाया वसी ही आकृति बनाए, फणों के समूह को ऊंचा उठाए वह नरवार में आया। उसने फणों का प्रहार करते हुए अपनी पूंछ का चारों ओर घेरा देकर कृष्ण को सकट में डाल दिया।९८।

कालिय ने परकोटे के समान अपने शरीर का घेरा देकर नन्दकुमार को घेर लिया। इसमें घिरे हुए श्रीकृष्ण बादलों में सुन्दर चन्द्रमा की तरह दिखाई देते थे। कालिय ने डक डक शब्द करते हुए जोर का प्रहार किया। प्रभु के अंग पर वह पुष्प पंखुडी की तरह लगा।९९।

गोपीनाथ के दोनों हाथ कालिय की गर्दन के पीछे आए मानों गारूडी सांप को वश में करने के लिए उड़द छांट रहा हो। कालिय की केवल कंठ-ध्वनि ही बज रही थी वह जिह्वा नहीं उठा रहा था मानो कोई गारूडी खेल करता हुआ सांप को खिला रहा हो।१००।

जहां पर कालिय नाग तथा श्रीकृष्ण दोनों लड़ रहे थे वहां समस्त जाति की नागिनियां समूह बनाकर एकत्र हुई। पश्चात् उस स्थान से कालिय को भगवान श्रीकृष्ण द्रह के गहरे पानी से ले आये।१०१।

नरनायक श्रीकृष्ण द्वारा किये गये तीक्ष्ण पदाघात को कालिय सहने लगा तथा मुष्टिका प्रहार से कालिय के मुंह द्वारा शोणित के फव्वारे चलने लगे और वह अपने सारे फणों से फूत्कार करने लगा।१०२।

---

९८ सिंधवी=सिंधु (मारू) राग। फणाकार=फनों को। झाटकतै=प्रहार करते हुए। फेरी=घुमाई। घातियो=डाल दिया। सांकडै=सकट में। घेरी=घेर कर।

९९ कोट=किल्ला। मेहो=समान। जळाबोळ=बादल समूह। कळा सोळ=चन्द्रमा। नीळी=सर्प की ध्वनि। सामटि=तीव्र। झाट=प्रहार। पांखी=पंखुडी।

१०० गड्ड=गर्दन पर। गारडी=सर्प का मन्त्र जानने वाला। दड्ड=उड़द (धान्य)। मही मूठ=सर्प की ध्वनि। जिहा=जिह्वा। उपाड=उठाता है। रमैं=खेलता है। जाणे=मानो। रमाडै=खिलाता है।

१०१ जुडी=एकत्र हुई। टोळा=समूह। नागजादी=नागनियां। विढ=लड़। सूरवादी=वीर। उभ=दोनों। त्रूग=वीर। जंपी=वहां से। ऊंड=गहरे। कूंड=पानी द्रह में।

१०२ खरा=तीक्ष्ण। पाहणार=पांवों के। मार=मार। श्रोण=रक्त। झारा=फुव्वारे।

चढ़े [1] डींगळा[2] पींगळा [3] रा अगाग,
अधीराज[4] मारा उध कीध आरा ।
काहारा[5] करारा ग्रमे हाथ सारा[6],
वोछी[7] नाव[8] धारा वहै वारवारा[9] ॥१०३॥
तिधारा [1] चौधारा जुडै [2] भ्रव्जतारा,
पादूरा प्रहारा धका[3] छोचणारा ।
घमूरा धमारा सहै साप[4] सारा,
पड पाव, पाणा[5] मय मिण्णिधारा ॥१०४॥
ग्रह्यो[1] गूदळो[2] जेम काळी लगारा,
नम[3] आज[4] थारा मुजं[5] सेस भारा ।
भुजती धरा रा ग्रव थम भारा
निहस्सै[6] नगारा सुराग सवारा ॥१०५॥
काळी नाग न कान झूब[1] करारा,
।
काळो[2] नागरी कोपरी हरि[3] हथ्थे,
रह्या ठाठरी देखिवा देव रथ्थ[4] ॥१०६॥
जुडी[1] नाग[2] बाला पडी पाव[3] जाचा,
कर[4] सापरी, सावळी सूत्र वाचा ।
रढे, दाढ काढे कियो[5] वा न रीसा,
बदन वहै थोण[6] पचास वीसा ॥१०७॥

---

१०३ [1] युडि [ख] वडा [ड] [2] डिंगळा [ख] डगळ [घ], डेगळ [ङ]
[3] पिंगळा [ख घ] फेंगळा [ग] [4] अधारा भिडारा [ग ङ]
[5] कहानिरा [ख], कनोरा [ड], [6] धारा [ड] [7] वछी [ङ],
[8] दाव [ड], [9] वारि [घ] ।
१०४ [1] अधारा [ड] [2] जडे [ड], [3] ठिका [ड] [4] सांप [ट], [5] पाणा [ड]
गडुदा गमारा गडी गुठणी रा [ख ग ड अ पा]
१०५ [1] ग्रहे [ड], [2] गुदद [ग] गुदडि [ख], गुदळ [ट], [3] यम
[ख ड च] [4] ग्रोअ [ड], [5] भेली [ग ड], [6] नहस्से [ड] ।
१०६ [1] झूम्फ [ड], [2] नोखो [ड], [3] दाप [ड], काह [च], [4] भर
घुड चाहो चहै आढ माड, बहु हाथरी बाय मु नाय बीव [ङ]
प्र० पा० ।
१०७ [1] जरै [ड], जडे [ख] [2] हाथ [ग ड] [3] माथ [ड], पास [ख ग]
[4] पडो [ड], [5] वहै नाग रीसे [ड], [6] सोळ [ङ] ।

श्रीकृष्ण की मार द्वारा उसने आर्तनाद किया तथा अंगारों के सदृश डिंगलमय एवं पिंगलमय वचन कहने लगा। श्रीकृष्ण के प्रहारों को सहता हुआ कालिय, जल धारा के अंदर छोटी नाव के समान तैर रहा था।१०३।

भव तारक श्रीकृष्ण,कालिय के साथ तिरछे एवं सामने से भिड़े तथा परों में पड़े हुए साँप को हाथों से मथने लगे। साँप, श्रीकृष्ण के द्वारा किए गये एड़ियों के, घुटनों के तथा मुक्कों के प्रहार सहन कर रहा था।१०४।

श्रीकृष्ण को भुजाएं आज शेष के समान कालिय के भार को सहन कर रही हैं। उन्होंने कालिय को भू दळी (हरे प्याज के पत्ते) के समान उठा लिया। उस समय भार से पृथ्वी कंपायमान होने लगी। बड़े-बड़े स्तम्भ भी थिरकने लगे और देवताओं की विजय दुन्दुभि बजने लगी।१०५।

कालिय नाग और श्रीकृष्ण भिड़ रहे थे।

—कालिय का सिर भगवान श्रीकृष्ण के हाथों में था। इसे देखने के लिए देवताओं के रथ ठहर गए।१०६।

समस्त नागिनियां एकत्र होकर भगवान के पावों में पड़ीं एवं साँप की याचना करने लगीं। उनके हाथों में कच्चे सूत की झूं खलाएं थीं। भगवान कालिय नाग के दांत उखाड़ रहे थे अतः वह विलाप तो करता था, परन्तु क्रोध नहीं कर रहा था। उसके हजार फणों से शोणित बह रहा था।१०७।

---

१०३ अंगारा=जलता हुआ कोयला। उवै=उसने। पारा=आर्तनाद। करारा=तीव्र। झाप=प्रहार। सम=सहता है। पोद्दी=पोद्दी, छोटी। धारा=नदी, तरंग।

१०४ तिधारा=टेढ़े, पार्श्व से। चोधारा=सामने से। भवतारा=भव तारक कृष्ण। पाटूरा=पग्तलों के। ढींचणारा=घुटनों के। घमू रायघारा=मुक्कों के प्रहार। पाणां=हाथों से। मिण्णि-धारा=सर्प को।

१०५ प्रह्यो=ग्रहण किया। भू दळी=हरे प्याज की कोंपल। धूजती=कम्पाय मान हुई। धरा=पृथ्वी। भ्रम=डगमगे। निहस्से=बजे। सुरारा=देवताओं के।

१०६ भूव=भिड़ना मारना। कोपरी=सिर। ठाठरी=स्थिर। देव रथ्थं=देवताओं के रथ।

१०७ याचा=याचना। दाढ=दाढ़ा। काढे=निकालने पर। रीसा=क्रोध। वदनं=मुख से। पचास बीसा=हजार।

काळो नाग नै[1] जुद्ध मातो क्रिसन,
जमूना वही पूर सिंदूर ध्रन ।
कियो आप सू आप आळोच कानै,
माराच ही खपै घावसू ओ न मान ॥१०८॥
वाहाल[1] वडाळ गोपाळै वडव्व,
जो यै नागणी झाग नाख्र जडव्वै ।
अहीराव न डाव कोई न[2] सूझ्यो,
इसो मोडियो सास[3] नासा अळूझ्यो ॥१०९॥
पयो[1] मार पाण[2] भयो[3] गात्र भग,[4]
प्रभू माडियो रास माथै पनग[5] ।
तिसी तत वसी बजो ताल ताळो,[6]
माडै पाव आणी दियो व्र नमाळी ॥११०॥
काळौ[1] नाचियो ऊपर नाग[2] काळी,
बळ रभ नाटा॰भी अक्वाळी ।
डर नाग काळी मरै श्रोण डाच्या[3]
नमो नाच त नाथ नारद नाच्या[4] ॥१११॥
भलौ नदकिसोर नारद भाख,
पनगा सिर नाचियो नदि[1] पाख ।
जपै नाथ सू नागणी हाथ जोडी
तमा देव[2] मोटा अमा मत्त थोडी ॥११२॥

---

१०८ [1] मी [ङ], [2] मरम्या पलि घाऊ सढु न मन [ख च], मरम्या साप घाव मूधो न मान [ग],रम साप खेषाव [ङ] ।
१०९ [1] बिहाल हयाको [ङ], [2] काहू न सूझ [ङ] एवोन सूझ [च], [3] स्हेस नासे मवूझे [ङ] ।
११० [1] पयों [ङ] पयु [ख],[2] प्राण [ङ] [3] कियो [ङ] [4] भगे [ङ], [5] पनगे [ङ], [6] तिसी तत ताती बजी ताल ताळी, मड्यो पाव आरभियो वनमाळी । तता थ तता थ तताथ सतान, उर प्रतय प्रजय सुखमान । गिडुयो गिडुयो गिडुयो क गाज, वाद्द वासळी माद धोकासु वाज ॥ [ङ] म पा ।
१११ [1] काळी [ङ ग] [2] नित्त [ग ङ च],[3] डाच [ग ङ च] [4] नमो नाथ तो नाच नारद नाच [ङ] ।
११२ [1] नाथ पाख [ङ] यह पद्यांश [ग] प्रति में नहीं है । [2] पयो दोस [ङ] ।

जिस समय कृष्ण और कालिय युद्ध कर रहे थे उस समय यमुना लाल रंग से परिपूर्ण होकर बह रही थी। भगवान श्रीकृष्ण ने अपने आप मन्त्रणा की कि—यह कालिय प्रहारों से तो वश में होने वाला नहीं है, इसे तो मारने पर ही सफाया होगा।१०८।

देखो नागिन, उस बड़े भारी सर्पराज को भगवान कृष्ण ने अपने हाथों में उठा लिया है तथा उसे ऐसा पीड़ित कर रहे हैं कि—कालिय को कोई दाव-पेच स्मरण नहीं हो रहा है और उसका श्वास नासा-पुट में उलझ गया है एवं वह मुंह से फेन गिरा रहा है।१०९।

पैरों की मार के कारण कालिय का शरीर टूट कर गिर पड़ा तब भगवान ने उसके सिर पर नृत्य करना प्रारंभ कर दिया। भगवान ने जब कालिय के सिर पर पांव रखा, उसी समय बांसुरी बजने लगी साथही चारों ओर से लय-पूर्ण तालियां बजने लगीं।११०।

श्रीकृष्ण, कालिय नाग के सिर पर नाटक की अप्सरा के समान अपनी कटि को मोड़ कर मुद्रा बनाते हुए नृत्य करने लगे। जिसके कारण कालियनाग भयभीत हो रहा है तथा उसके मुंह से रक्तस्राव हो रहा है। इसी समय नृत्य करते हुए नारद ने आकर कहा— भगवान! आपके नृत्य को नमस्कार है।१११।

श्रीकृष्ण बहुत ही भले हैं, श्रीकृष्ण बहुत ही भले हैं ऐसा कहते हुए नारदजी भी भगवान के पास नृत्य करने लगे। भगवान श्रीकृष्ण से नागनियां हाथ जोड़कर कहने लगीं—हे देव! आप बड़े हो और हम अल्प बुद्धि हैं।११२।

---

१०८ मैं=मैंने। जुद्ध माती=युद्धमचा। पूर=बहाव सम्पूर्ण। सिन्दूर वन=लाल रंग की। आळोच=मन्त्रणा। खप=नष्ट होगा। घाव सू=प्रहारों से। औ=यह। मानै=समझेगा, वश में होगा।

१०९ वडाळ=बड़े। झाग=फेन। जड़बै=मुंह से। न=को। दाव=दांव, अवसर। सूझ्यो=दिखाई दिया। भीड़ियो=पीड़ित किया, कसा। अळझ्यो=उलझ गया है।

११० पगों=परोंकी। पांणे=से, हाथों को। गात=शरीर। रास=नृत्य। तिणी-वत=उसी समय। मांड=मुहपर।

१११ रंभ=अप्सरा। नटारंभी=नाटककी। वकवाळो=कटि मोड़कर। हाच्या=जबड़ों से। त=आपका।

११२ भलो=अच्छे। पास=समीप में। तमां=तुम। अमां=हम। मत=बुद्धि।

तुकारा[1] रेकारा जिकारा[2] तमासू ,
आया आज ते माफ कीज अमासू ।
महा सम्मिया निद्धि[3] जादम मोटा,
खरो हेक तू हो बिया सव्व खोटा॥११३॥
जुडे[1] रूप तोने[2] त्रणाव्रत्त जेहा,
कुहाडा त्रिणा ऊपरा मार[3] केहा ।
लोका ही विचाळ[4] प्रभू लीक[5] लाग
अहडा सुण्या सापरा[6] केयि आगै ॥११४॥
सामी[1] सेस महेस जे[2] ही न सूम,
वुधी[3] हीण की रावळी गत्त[4] वूझ ।
ब्रह्माड इकीसा देखावौ[5] विहाणै
जसोदा सोई[6] राजनू पुत्र जाणै ॥११५॥
पयौ[1] ब्रजरा पास[2] हू पध्धराव,
भज नद तोई तुना[3] पुन भाव ।
पडीछा नही छी प्रिया राज पायो[4]
प्रभू वेदना[5] हुव[6] साप[7] खिरावो ॥११६॥
देऊ[1] कत वगो हसे[2] वण दीधो ,
थाळी नागरी नार उछाह कीधो ।
आग नागणी भेट सामठी[3] आणै,
जदूनाथ लीजै जिकू[4] राज जाणै ॥११७॥

---

११३ [1] तुकारे रेकारे [ङ] [2] सुभाया [ग] [3] नद्ध सुमद [ङ] ।

११४ [1] जहि [ख] जहो [ङ], [2]तुना [ङ] [3]माट [ख] मात [ग घ],मात्र [ङ] [4] लुकाई वचाळ [ङ] [5] लक [ङ], [6] सावरा [ङ] ।

११५ [1] सम्ही [ङ] [2] जाइ [ङ] [3] वुदय [ख], वुका [ङ] [4] गात्र [घ] [5] दास [ख ग], दासी [घ] देखी [ङ] ६ पर्जो [ङ] ।

११६ [1] पिता [ङ] [2] हो [ग ङ] [3] तवो [ङ] [4] पडीछापि निपाप्यक राज पाय [ख],पडो सापरी छ'पयो राज पाय [ङ] [5]वदना [ख ग], [6] होयसी [ख ग] [7] सार खरायो [ख] सास खराया [ग घ], राज पायो [ङ] ।

११७ [1] दिया [ग] दोयड [घ] दियो [ङ], [2] हवे [ङ] [3] सामेटय [ख ग], सम्मेट [ङ] [4] जको [ङ] ।

हे यादव कुल श्रेष्ठ देव ! आप तो क्षमा के अथाह सागर हो। संसार में एक आप ही सत्य हो अन्य तो सभी मिथ्या है। अतः हमारे द्वारा आपके लिए जो छोटे बडे शब्द प्रयोग मे आगए हों, उनको क्षमा करना।११३।

आपका स्वरूप तो नृणावत जसे राक्षसों से भिडने का है, हमारे जसे तुच्छ तृणों पर कुल्हाडे का प्रहार कसा ? तीनों लोकों मे यह लकीर (लाञ्छन) लग जाएगी। भगवान ! कहीं आगे (पहले) भी साप की शिकार सुनी है ? ।११४।

हे स्वामी ! आपका वास्तविक स्वरूप तो शेष नाग तथा भगवान शिव के लिए भी अगम्य है फिर हम जड बुद्धि आपकी गति को क्या समझ सकतीं हैं। प्रात काल मे जब आपने इक्कीस ब्रह्माण्डों को दिखलाया था, फिर भी यशोदा जी तो आपको पुत्र ही समझतीं हैं।११५।

वृन्दावन के पास ही आप अपने चरणों को पधराते हैं फिर भी भक्त तो आपको पुत्र भाव से ही देखते हैं। हे प्रभु ! आपके पाद-पद्मों की जानकारी इस कालियनाग को नहीं थी, तब यह आप से भिडा। अब हमें कष्ट हो रहा है। आप कृपा करके इस साप को हमे दे दीजिये।११६।

भगवान श्रीकृष्ण ने नागनियों को वचन दिया कि—"तुम्हारे पति को शीघ्र ही तुम्हें दे दूंगा।" यह सुनकर कालियनाग की स्त्रियों ने हर्ष प्रगट किया और भगवान श्रीकृष्ण के सामने बहुत सी भेंट लाकर रखीं तथा प्रार्थना करने लगीं कि—इनमें से जो जो भी आपको पसन्द हो वह ले लीजिए।११७।

---

११३ तुकारा रकारा=तिरस्कार मय शब्द। जिकारा=सम्मानमय शब्द। माफ=क्षमा। अभिया निध्धि=क्षमा के समुद्र। जादम=यादव। खरो=सत्य। सब्ब=समस्त। खोटा=असत्य, नकली।

११४ जुडे=लडने का। कुहाडा=कुठार। केहा=कैसा। अहेड़ा=शिकार। केथि=कही भी। आग=पहले भी।

११५ सांमी=प्रभु। सूझ=दिखाई देता हैं। की=क्या। रावळी=आपकी। बूझ=जान सकते हैं। राज नु=आपको।

११६ पयो=चरण। भजै=स्मरण करते हैं। भावं=भाव [illegible]। पड़ीछा=परीक्षा। प्रिया=प्रिय को। राज=आपके। वेदना=कष्ट। दिरावो=देमो।

११७ वेगो=शीघ्र। वरण=वचन। उछाह=उत्साह। भेट=भेंट। सामठी=बहुत। जिकू=जो भी।

सवारे[1] पणां आप आपै अरच्चां,
चोय चंदण नीत्र[2] नारी चरच्चा ।
अही नाथियो पोयणी-नाळ आणी,
असवार हूवो आप अप्पलाणी ॥११८॥
माग[1] झालिया व्रज्ज सेरी विचाळ,
मळ फेरियो आगण नद्द बाळ ।
झडी[2] देह[3] चिता पडी, मस जप,
काळी मारिय[4] टार वेपाण वप ॥११९॥
काळी नाग काळीद्रहा हुत[1] काढ,
दियो वास दूरतर[2] तिको तूस[3] दाढ ।
महाकाळ काळी तण माण मोडी,[4]
जसोदा दिसी[5] आवियो पाण[6] जोडी ॥१२०॥
विढ[1] व्रिज्जरी एह उच्छाह वाळी,
कहता अळूझ[2] ब्रह्मा कपाळी[3] ।
गोविंददासर आसर गुण[4] गायो
वाचता न पोंच[5] बहू[6] सेस वायो ॥
समवाद[7] काळी तणो मत्त[8] सार,
चवै दास दासानु सायो[9] चितार[10] ॥१२१॥

---

११८ [1] कमारि [ख] उवार [ग घ] उवारे [ङ] । [2] चोल नारी [ख], चीर [ग घ], चाह [घ], काश्मीर [ङ], काळो मारियो कमळां मार कन्है, पड्यो माय पाताळ सु माय पान । असवार काळो तणो कान थायो, विविधि विधी व्रज्जनारी वधायो । भगवान सू गोव गोपाळ भेला, बडा चोव फोळी हुआ तेण वेला ॥ [ङ ग घ ङ च] प्र, पा ।

११९ [1] बागे [ङ], [2] झडे [ग] झरी [ङ], [3] द्रोह [ङ], [4] कूदियो, यो [ग ङ] ।

१२० [1] लहत्त [ङ], [2] दूरे नवा [ख], दूरे जिठा [ग], दूरांतका [ङ], [3] हूंत [ग] [4] मोडे [ङ], [5] दसु [ख], मणी [ङ] [6] हाप [च] ।

१२१ [1] विठा [ख ग], मीठा [घ], वाई [ङ], वाता, [घ], [3] मवूभ [ङ], [3] कमाळो [ख] [4] जस्स [ङ], [5] पूज [ङ] [6] सवेब [ङ], काळी नाग वाळो सवाद कान, पया पेट नाव पडे तास पाम । जाणै वो न आयो जमदूत जाड, पुराण भळोरे कियो बूम पाडे । रसमे समय कह्यो सन मझे, समवाद गातां पड़े पार सते । [ङ] प पा भगवान त गोपाळ भेळा वद वात पूज हुआ तेण वेळा । [घ] प्र पा [7] समवास [ग] [8] एह सारो [ङ] [9] साइयु [ख], साइयो [ग] साइयउ [घ], [10] चितारो [ङ] ।

नागनियों ने अपने आपको सुसज्जित करके भगवान की अर्चना की और चोवा तथा चन्दन के चित्र बना कर उन्हें चित्रित किया। तत्पश्चात् भगवान ने कमल नाल मगवाकर कालियनाग के नाक मे नकेल डालकर उसे अपने वश में किया। फिर बिना काठी के ही उसकी पीठ पर सवार हो गए ।११८।

भगवान ने कालिय की लगाम को पकडे पकडे उसे व्रज की गलियों में घुमाया। उसके बाद नद के आगन में लाकर फिराया जिससे उसकी देह चित्त हो गई। कस ने कहा—कालिय जसे टट्टू को मारने से कौनसे केकाण कांपते हैं ? अर्थात् उस क्षुद्र जीव को मार कर कौनसा बडा काय कर दिया ।११९।

जिस तरह कालियनाग को काली ह्रद से निकालकर उसको बहुत ही दूर स्थान दिया। उसी तरह तेरे कालिय की दाढ़ वाला (विष) था उसे भी भगवान ने दूर किया। महाकाल स्वरूप कालिय का मान मदन करके भगवान श्रीकृष्ण अपने दोनों हाथों को जोडे हुए माता यशोदाजी के सम्मुख आये ।१२०।

इस उत्साहवद्धक व्रज की लडाई का वणन करते हुए ब्रह्मा तथा शिव भी उलझ जाते हैं। फिर भी मैंने श्री गोविन्ददासजी के सहारे से भगवान के गुण (चरित्र ग्रन्थ) का वणन किया है। जो कोई भी इसे पढ़ेगा उसे सांप की हवा (पवन) तक नहीं लगेगी। यह भगवान श्रीकृष्ण तथा कालिय का सम्वाद (वणन ग्रंथ) अपनी बुद्धि के अनुसार दासानुदास कवि सांया ने कहा है ।१२१।

---

११८ पावँ=देती है, देकर। चोवा=एक सुगन्धित द्रव्य। चीत्र=चित्र। पोयणी नाळ=कमलनाल। अपलाणी=बिना काठी के।

११९ वाग्गे=लगामें। सेरी=गली, मुहल्ला। विचाळ=मध्य। टार=टट्टू। केकाण कांपें (मु०)=घोडे कांपते है।

१२० हृत=ह्रद। काढ=निकाल कर। वास=स्थान। दूरतर=बहुत दूर। तिको=वह। तुझ=तेरे। दाढे=दाढ़ों में, बहुत। मांण मोडी=मान मदन करके। दिसी=सम्मुख। पांण=हाथ।

१२१ विढ=लड़ाई। एह=यह। उच्छाह-वाली=उत्साह वद्धक। मळझै=उलझते हैं। कपाळी=शिव। प्रासरैं=प्राश्रय में। न पौंच=नहीं पहुँचेगा। मत सार=मत्यनुसार। चव=कहता है। सिवार=कवि चितवन करता है।

॥ कलस रो कवित्त ॥

सुण पर्ण[1] समवाद, नद नदन अहिनारी ।
समद्रा पार ससार, होहि गोपद[2]अणुहारी[3] ।
अनत अनत आनद, सबे वपु तास समावै ।
भुगति जुगति[4] भडार, क्रिसन मुगत्ताज कहाव ।
रम्यो[5] नृत्य राधा-रमण, दुहुभुज करि काळीदमण ।
ते चवण सुणण अहि[6] रावतणा, मटण[7] काज आवागमण ॥१॥



कलस [1] सण-सए [ङ] [2] गोविद [ख], द्रोपद [ख],[3] अनुहारी [ङ],
[4] मुगति त [ख ग ङ] [5] रचियो चरित्र [ङ] [6] गहरा [ङ]
[7] गमण काजि [ख], गमण काई [ष] ।

कलस का कवित्त

नंद नंदन श्रीकृष्ण और नागनियों का यह सम्वाद (वर्णनग्रंथ) जो सुनेगा,कहेगा वह भव रूपी समुद्र को गोपद के समान तर कर पार हो जाएगा तथा उसके शरीर में अनन्तानन्द का समावेश होगा। भुक्ति, जुक्ति एवं मुक्ति के भंडार श्रीकृष्ण अज कहलाते हैं उन्हीं राधारमण ने अपनी दोनों भुजाओं द्वारा कालिय दमण नृत्य किया । इसी मत्य को आवागमन मिटाने लिए कहना तथा सुनना चाहिए ।



[कलस] पण=कहेगा । अणुहारी=समान । वपु=शरीर । तास=उसके । भुगति=भोग । जुगति=युक्ति । भंडार=कोष । मुगताज=पंजमा एवं मुक्त । रम्यो=खेला । राधारमण=श्रीकृष्ण । ते=वह, उसे । चवण सुणण=कहना तथा सुनना । मटण काज=मिटाने के लिए । आवागमण=पाना जाना, जन्म मृत्यु ।

राजस्थानी साहित्य में नागदमण प्रसग

गीत नागदमण रो बारठ मुरारिदास रो कहियो

सोहे धाधियां अड़लो कड़ला करग्गां किया
उथ्रूडलो नागरो अड़लो नाग आज ।
अड़लो आंगणे ऊभो लड़लो सो रोस लियां,
कांनूडो कड़लो बोलै दड़ला के काज ॥१॥

घणी मिल नागणी सुभागणी सुहागणी सी,
मूणी यू पूछणी पायो नायो कुणी मास ।
मसो फूणी सुणा बाला कुणी सू जगाणी आवै,
तन मन हणी जको अते सणी पास ॥२॥

बोलियो आणद नद नद रो हू कहाऊ बेटो
धराऊ मुकद धन असोदारे चद ।
मोरी दबो गेंद काथे जगावो नागेंद्र मांटी,
छोडो फद रवणारी नारियांरा फद ॥३॥

हुसै सारी नाग नारी उधारी विहारी हूत,
सधारी पधारी बळे लेतो आजे पूग ।
दठ धारो वेग असो जुद्धकारी वातां कर,
फूणाधारी दीठो म छ आगकारी फूक ॥४॥

मोटो रास फाटो असो आंटो आटो वातां मेळो,
मडासू उझाटो तेग बाटो न छ मोड ।
धम करा धाटो ज्धा पाटसो फुणांरी फाटो,
पीड सोर वाजे जाटो पाटो तणो पीड़ ॥५॥

नागणी रहायो नाद वादियो अधाये घाव,
ताजे घाता मूलायो लसायो ताग ।
पायो अमी आपरां बजायो असो राग प्रभु
फा हूडे जगायो काळो नोळो आयो नाग । ६।।

ढाळतो कराळ झाळ फूं णा वाळा फूं कारडां,
चाळा लागो ठाला घर वाथै असी चोट ।
सळवळां ओहां घणी गलाफा गु जाफा लाळा,
परनाळा पड जठी हळाहळां पोट ।।७।

करयू रपट्टां रट्टा जपट्टा दपट्टां कोधा,
छूटा पट्टां चहुवट्टां फिरतो छछाळ ।
दाव ले उलट्टां दळतो दपट्टां इद्दां,
चट्टां वट्टां कू टा करै काळी विकराळ ।।८।।

करां री मूकियां ठोक फेरियो कवारी कूं द,
मारी नामजादी गायो वासळी रो नाद ।
मारी नागजारी जोयो महाजोगी मन्त्रवादी,
मनावी जुगावी आदी बादी खेले घाव ।।९।।

लाग मही फूं क झाळ लपेटा चपेटा लाग,
भेडा भेडा फुणा घणा ऊपरे मजीठ ।
राजपो अहेडा जांण घडो डाडा रोस रत्तो,
रमतो उरेडा दियें केडा आयो रोठ ।।१०।।

लडतो कळाप वर लाप लोप हुवो लोहां,
आप नाग वाको फुणा वाहतो प्रताप ।
श्याम थाप वाहे जबा ऊघडे जो छाप जसी,
सांपरो उतरे त्रिहू तापरो सताप ।।११।।

नाथियो पोअणनाळि वनमाळ धर नाच,
ताळी ताळो नत वाली होवतो अचक ।
उघाडी वडालो छाप कदम्मा चहूना चाळी,
असा काळी कपाळो कोराळो मंड अरु ।।१२।।

मरस अनत फूल हरख नारद वह्ल
निरख सरोखां शार्द वज्याळी नार ।
आनद जसोदा नद धनो धनो जोत अलख,
म लखस अलख माया मोहिमा निहार ।।१३।।

शोभियां नागणी हूतो नागेंदा न्यिवा शोभै
नमो नदनन्ग नम नागदारो नार ।
छबीला डुडदा घदा तोमन्गं न जाणू छदा,
मत्त साहू दोन वपा मलदा 'मुन्गर'' ॥१४॥

—श्री मोभागवसिंह शासावत के सौजन्य से

●●●

जय गीत पाडगती सुपन्नरा

बडी पडता बहावे घड झाकियो कवच ढाळ,
मोर यावे मयाप घडता वाव मार ।
लेल्ह याळ प्रदर करता सगाडियो सेटो,
काळी नाग जगाडियो मदर कवार ॥

फल गोप घसमां कराळा भाग भाळा फुणां,
ताळा व भुम्ळा तू गुपाळा तीरवांन ।
बिरवाळा सिघाळा अबाळा बोध घाळावध,
जूटा बिहू काळान बि घाळा बोरमान ॥

करमां करणां पाव हाव वहै अमूतकारा
जहै सूतकारा बिभां फुणांरा अमाव ।
जव हरी बध काळी सघणा जोडिया जक,
सप साथ बिछोडिया नदर सुभाव ॥

महा भुजगेस नाप समाय लडियो माण,
खम ठोर मराय तडियो जत खम ।
दडियो अवड नीर उघाटा मिटाय दहै
रजैं मिश्र फुणाटां मडियो माटारम ॥

धू धू कटां ध्रुक्टा ध्रुकटा धू धू कटां धार,
ता धिना ता धिना धि ना ता धिन्ना सुताळ ।
ता थेई ता थेई थेई थेई थेई ताना,
गता त अहेस माया नदरो गमाळ ॥

रमां झमां रमां झमा रमा झमा झमा रमा,
ठमका हुमका झको रमका ठमक ।
पाडणनी मोत राधा रजण पधपै प्रयो,
नाग धू सजणा निमो सगीत निलक ॥

—आटा निशानाजी
'रघुवर जस प्रकाश' से साभार

***

नागनायन लीला

कायम की रे बाळा गेंद बणी रे, कांय स रेऊ घडाय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
रूपा की रे बाळा गेंद बणी रे, सोना म‌ रेऊ मढाय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
पयलीस जो ढोटू बाळा ढोट्यो रे, गई ते दरवाजा मांय ।
मोहन थारी गेंद बणो रे ॥
दूसरी को ढोटू बाळा ढोट्यो रे, गई ते सेरी मांय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
तीसरो जो ढोटू बाळा ढोट्यो रे, गई ते बजार मांय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
चोथी ढोटू बाळा ढोट्यो रे, गई ते गोया मांय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
पांचवीं ढोटू बाळा ढोट्यो रे गई ते अपुनारी पाळ ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
खेलत जो खेलत गेंद गिरी पडी रे, गिरी जमना रा मांय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
गेंद का छमचड बाळो कूदयो रे, म्हारो का‌ हो कूदयो जमना पयरे ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
बाळा गुवाळा दोड्या आया रे, आया ते जसोदा रा पास ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
निकळ जसोदा माता नायर ओ थारो का‌ हो कूदयो जमना-मांय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥

रीझिया नागणी हूतों नागेंदा रिपदा रीझे
नमो नदनदा नम नागदारो नार ।
छबीला बुडदा चदा तोडदा न जाणू छदा,
मत्त सारू दीन वधा मणदा "मुरार" ॥१४॥

—श्री सौभाग्यसिंह शेखावत के सौजन्य से

●●●

अथ गीत पाडगती सुपखरा

वडी पडता द्रहामें वह झाकियो कदब डाळ,
नीर थाघे अथाघ पडता वाद नार ।
तेहड घाळ झडझड करता लगाडियो लेटी,
काळी नाग जगाडियो नदरें कवार ॥

फता ओप वसमों कराळा आग झाळा फुणां,
ताळा व भुरूराळा तू गुपाळा तीरवान ।
विरताळा सिंघाळा अढाळा ओप वाळावध,
जूटा विहू काळान बिचाळा ओरवान ॥

फदर्मा करमां पाव वाव वहै अमृतकारा,
वहै मूतकारा विशी फुणारा अमाव ।
जद हरी बध काटी सघणा ओडिया जक,
तप तप विलोडिया नदर सुभाव ॥

महा भुअंगेम नाथ सभाव सहियो माण,
सम दोर मराव तहियो सत-सम ।
दहियो अवड नीर उथाटो मिटाव दहै
रजे मित्र फुणाटा महियो नाटारम ॥

धू धू कटां झुकटां झुकटा धू धू कटां थार,
ता दिना ता धिना धिन्ना ता धिन्ना सुताळ ।
ता थेई ता थई थई थई थेई ताना,
गनां ग अहेस माया नच्चो गळाळ ॥

रमां झमां रमा झमा रमा झमा झमा रमा,
ठमक्का हमका झमां रमका ठमक ।
पाडमती मोत राधा रजण पयप प्रयी,
नाग घू सजणा निमो सगीत निसक ॥

—आठा किशनाजी
'रघुवर जस प्रकास' से साभार
***

नागनाथन लीला

कांचन की रे बाळा गेंद बणी रे, रूपा स वेऊ घडाय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
रूपा की रे बाळा गेंद बणी रे, सोना मऽ वेऊ मढाय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
पयलीज जो ठोट्ट बाळा ठोट्टियो रे, गई ते दरवाजा मांय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
दूसरी जो ठोट्ट बाळा ठोट्टियो रे, गई ते सेरी मांय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
तीसरी जो ठोट्ट बाळा ठोट्टियो रे, गई ते बजार मांय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
चौथी ठोट्ट बाळा ठोट्टियो रे, गई ते गोया मांय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
पांचवीं ठोट्ट बाळा ठोट्टियो रे गई ते जमुनारी पाळ ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
खेलत जो खेलत गेंद गिरा पडी रे, गिरी ते जमना रा मांय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
गेंद रा छमचऽ बाळो कूदयो रे, म्हारो का'हो कूदयो जमना पयरे ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
बाळा गुवाळा दोडया आया रे, आया ते जसोदा रा पास ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥
निकळ जसोदा माता मायर जो थारो का'हो कूदयो जमना माय ।
मोहन थारी गेंद बणी रे ॥

रहतो ज पुवसी माता नोसरी रे आई ते जमना री पाळ ।
मोहन थारी गॅद वणी रे ॥

×

×

नांग सोवऽ न नागिण जागऽ,
जगाण नागेण थारा राग खऽ, घडी दुई रेलो वाव ।
मोहन थारी गॅद वणी रे ॥
को रे बाळा तू, मारग भूल्यो,
को रे बाळा थारी माता न दुख्यो, को घर खोटी नार ?
मोहन थारी गॅद वणो रे ॥
आंगठो जो मोडि नांग जगावियो रे,
नांग अवधूत ज ग्यो, मची धमघोळ,
बरसी अगनि का लोळ, जे का मुख मऽ अवाळ,
जळ जमना री पाळ, खेले नवा नु बाळ,
नवा नु बाळ माई—कसा-नु काळ ।
मोहन थारी गॅद वणी रे ॥

×

×

नांग माथीन बाळो हुयो असवार रे
बोलो ते नागिण सव—
म्हारा हाथ चूड़ा को लाव राखो,
म-खऽ जुग जुग दीजो अहात ।
मोहन थारी गॅद वणी रे ॥
नाग माथीन बाळो हुयो असवार रे,
आयो ते जमना रो पाळ ।
मोहन थारो गॅद वणी रे ॥
बाळ-गुवाळया दौड्या आया रे,
आया ते जसोदा रा पाम ।
मोहन थारो गॅद वणो रे ॥
निकळ जसोदा माता मायेर ओ,
नांग माथीन बाळो आयो थारा द्वार ।
मोहन थारो गॅद वणी रे ॥

मोतियन सोरें थारो थाळो बणाओ,
दूध पिलाव काळ नाग ।
मोहन थारो गेंद बणी रे ॥

—डॉ० कृष्णलाल हंस
"निमाड़ी और उसका साहित्य" से साभार

***

नाग अभिमान मदन

सुण जो साजन अचरज नी कथा । ॥ ए आंकणी ॥
एक दिन जमुना हो जळ मे पंसिरे हरि रस सुविचार । च० ।
तिंदुक उछळी न तब पड्यो, कालिंद्रह मझार ॥१॥
चतुर नर हरि रमे रस रंग,
जी हो सुन्दर रूप सुहामणा, लाला चलतो जाण अनंग ।
सुण जो साजन अचरज नी कथा ॥
ते लेवा न हरी ग्रहांनर गया, सोधी लियो गयद । च० ।
पिछ फिरतो तब पलियो, आवास तेजनो कंद ॥२॥ च० सु० ॥
भितरे दीठी एक नयासिका, कौतुक अधिको पाम । च० ।
वेई फलांग माहि गया, निरीक्षण कर काम ॥३॥ च० सु० ॥
आग जातां पलग पे झीलता, देख काळो नाग । च० ।
सहस्त्र फणो सूतो निंदमें महीऊर विशनो छाग ॥४॥ च० सु०॥
कर तिहां नागणी पताळनी, नव नव भात विनोद । च० ।
पामी अचरज ताम हरिमणी, बोले वचन सरोद ॥५॥ च० सु० ॥
नागणी वाच—
कांई तू वाट चोसरियो रे बाला, कांई तू मारग भुलियो ।
कांई ते तारो काळ घटियो, जे इण मारग आवियो ॥६॥
जळ कमळ छडि जाय रे वाला, स्याम मोरो जाग से ॥आंकणी॥
कान वाच—
नहि ते वाट चोसरियो रे नागण नहि ते मारग भुलियो ।
नहि ते मारो काळ घटियो, हु एणे मारग आवियो ॥७॥ जळ ॥
नागणी वाच—
किहां तुमारी बेसणो रे वाळा कुण तुमारो गाम रे ।
कुण राय ना चलण चाल, सु छै तुमारो नाम रे ॥८॥ जळ० ॥
कान वाच—
मथुरा हमारो बेसणो रे नागण, गोकुळ हमारो गामरे ।
कस रायना चलण चाल, गोवळीडो माहरु नाम रे ॥९॥जळ०॥
नागण जगाडो तोरा नाइ न बळो केते जे विलासीयो ।

रत राय थी जुवट रमतां, नाह तुमारो हारीयो ॥१०॥ झळ० ॥
मागणी नाग प्रबोधन वाय—
घरण घोळी अन मोड़ी मागणा ए नाहो जगावीयो ।
उठो न बळवत यठा पाओ बालुडो हम घर आवीयो रे ॥११॥झळ०॥
उठ्यो हो महिपर विष भर लोचने, कोप करी ततकाल । च० ।
आयो हो सनमुख हरिन ऊपरें, रोस भरयो विकराळ ॥१२॥च०सु०॥
मारयो हो भालो बल तणी परे, पाम्यो अधिको त्रास ।च०।
ऊपर बेसी हो हय परे वाहियो, जोर कियो हरी पास ॥१३॥च०सु०॥
पाको हो नाग तजो अभीमान ने, प्रणमें प्रभुना पाय ।च०।
तु तुम पायक नायक साहीब, मेहेर करो महाराज ॥१४॥ च० स०॥
हिवें हु सेवक आसयो ताहरो, न करु अवर भूपाळ ।च०।
लेई ततकार आयो हरी निज घर, मिलीयां बाळ गोपाळ ॥१५॥च०सु०॥
—पं० श्री गुणसागर सूरि
"श्री हरिवंश चरित्र ढाळ सागर" से साभार
●●●

नागनाथण लीला

छोटो सो कन्हैयो काळीदह पर खेलण आयो रे ।
मोळो सो कन्हैयो काळीदह पर खेलण आयो रे ।
काहे की पट गेंद बणाई काहे को डंडियो लायो रे ।
पुष्पन की बाळ गेंद बणाई, हरि चदण को डंडियो लायो रे ।
खेलत गेंद पडी जमुना मे, हरि काळीदह मे धायो रे ।
काई थारो नांव किणां घर जायो, कोण नाम धरायो रे ।
मात जसोदा पिता नदजी, कृष्ण नाम धरायो रे ।
कोण गांव सू आयो रे बाळा, काई रे कारण आयो रे ।
गोकळ नगरी सू आयो ओ नागण, नाग को नेतो लेवण आयो रे ।
नाग नाथ प्रभु बाहर आया नगर तमास धायो रे ।
पुरुषोत्तम प्रभु की बळि जाऊ, नागनाथ घर आयो रे ।
—श्रीमती सुभद्रादेवी उपनाम 'पपली'
से साभार
●●●